




ट:2
28

पुस्तकालय

**गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय**

विषय संख्या ८२/२४ आगत नं० 36338

लेखक चन्द्रगुप्त विद्यालंकार

शीर्षक न्याय की रात

| सदस्य संख्या | दिनांक | सदस्य संख्या |
|---|---|---|
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
कृपया पुस्तक के ऊपर कोई निशान आदि
न लगायें।

# पुस्तकालय

## गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार



पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित ३० वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

# न्याय की रात

(मौलिक नाटक)

लेखक
चन्द्रगुप्त विद्यालंकार



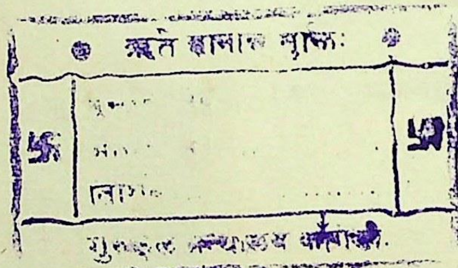


प्रकाशक
प्रकाश एण्ड कम्पनी
पब्लिशर्स नई दिल्ली

प्रथम संस्करण मई १९५८ मूल्य ३) रुपया

प्रकाशक :
**प्रकाश एण्ड कम्पनी**
४, सिन्धिया हाउस,
नई दिल्ली

तीन रुपया



मुद्रक :
हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस,
क्वींस रोड, दिल्ली-६

# भूमिका

पिछले दिनों परिस्थितियों ने जैसे एक षडयन्त्र-सा कर लिया था कि मुझे यह नाटक लिखने ही न देंगी। एक नहीं, एकसाथ चार बाधाएँ उपस्थित हो गई थीं। मुझे प्रसन्नता है कि परिस्थितियों का वह षडयन्त्र सफल नहीं हो पाया।

यह नाटक रंगमंच के लिए लिखा गया है। रंगमंच सम्बन्धी उतने ही निर्देश इस नाटक में दिए गए हैं, जितने आवश्यक थे और जिनसे नाटक की पठनीयता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता। किसी नाटक का अभिनय करते हुए निर्देशक को अभिनय की प्रत्येक क्रिया के सम्बन्ध में अपने निर्देश विस्तार से अंकित करने ही होते हैं। इसी से एक ही नाटक विभिन्न निर्देशकों द्वारा निर्देशित होकर एक दूसरे की कार्बन कापी नहीं बनने पाता।

रंगमंच के लिए लिखित यह मेरा दूसरा नाटक है। उससे पूर्व मैंने जो जो नाटक लिखे थे, वे रंगमंच के लिए नहीं थे। रंगमंच सम्बन्धी अपने यत्किंचित व्यावहारिक ज्ञान और अनुभव के लिए मैं पंजाब ड्रामा लीग के मुख्य निर्देशक प्रिन्सिपल श्री जी० डी० सोंधी तथा लिटिल थियेटर ग्रुप, नई दिल्ली के कला-निर्देशक श्री आई० एल० दास का कृतज्ञ हूँ। श्री सोंधी के निर्देशन में ही मेरा पहला नाटक पूरी तैयारी के साथ अभिनीत हुआ था।

इस नाटक का उद्देश्य स्वतन्त्र भारत से भ्रष्टाचार का उन्मूलन तथा देश में गहरी भावनात्मक एकता का प्रसार है। जिस श्रेणी के जीवन का

चित्रण इस नाटक में किया गया है, उस जीवन में टेलीफ़ोन का महत्व बहुत अधिक है। मैंने इस स्थिति से 'न्याय की रात' में पूरा लाभ उठाने का प्रयत्न किया है। मेरी यह धारणा है कि रंगमंच के लिए लिखे जाने वाले नाटकों की भाषा बहुत सरल और बोलचाल की होनी चाहिए। इस नाटक में अपनी उक्त धारणा पर मेरा ध्यान निरन्तर रहा है।

**—चन्द्रगुप्त विद्यालंकार**

४, पटौदी हाउस
नई दिल्ली।

३ मई, १९५८,
बुद्ध पूर्णिमा

# नाटक के पात्र

**मुख्य :**

**हेमन्त**–प्रचलित मानवीय कमज़ोरियों से अधिकतम लाभ उठाने वाला एक चलता-पुर्जा व्यक्ति ।

**सदानन्द**–एक उच्च सरकारी अफ़सर ।

**राजीव**–एक अत्यन्त ईमानदार भारतीय नागरिक, हेमन्त का बहनोई ।

**मुन्शी देवराज**–हेमन्त का विश्वस्त सहकारी ।

**जुगलकिशोर**–एक ईमानदार युवक ।

**कमला**–एक सुशिक्षिता शरणार्थी लड़की ।

**उमा**–हेमन्त की बहन और राजीव की पत्नी ।

**गौण :**

हेमन्त का चपरासी ।

सदानन्द का चपरासी ।

## लेखक की कुछ रचनाएँ

नाटक :

१. देव और मानव
२. रेवा
३. अशोक
४. न्याय की रात
५. हिंदुस्तान जाकर कहना (एकांकी संग्रह)

कहानी संग्रह :

१. तीन दिन
२. अमावस
३. भय का राज्य
४. चन्द्रकला
५. वापसी

अन्य :

१. आजकल
२. मानव जाति का संघर्ष और प्रगति
३. संसार की सर्वश्रेष्ठ कहानियां
४. हिंदी के नए उपन्यास (प्रेस में)

# न्याय की रात

इस नाटक के सभी पात्र और सभी घटनाएँ कल्पनात्मक हैं।

——लेखक

# प्रथम अंक

**स्थान**––*हेमन्तकुमार की बैठक*

**समय**––*सांझ*

(बैठक पाश्चात्य ढंग से सजी है और दो हिस्सों में बँटी-सी दिखाई देती है। यही बैठक हेमन्तकुमार के दफ़्तर का भी काम देती है। दाहिनी ओर एक बड़ी मेज़ रखी है, जिस पर फाइलें, रैक आदि ठीक ढंग से सजाए गए हैं। इस मेज़ के एक किनारे बैठक की ओर मुंह किए, घूमने वाली एक सुन्दर कुर्सी पर हेमन्त बैठा है। हेमन्त की कुर्सी के पास ही एक छोटी-सी तिपाई पर काले रंग का टेलीफ़ोन रखा है। मेज़ के साथ दूसरी तरफ़ सिर्फ़ एक ही कुर्सी पर पड़ी है, जो मिलने वालों के काम आती होगी। सामने की दीवार पर एक ही सुन्दर तैल चित्र टंगा है। इस दीवार के बीचोंबीच अंगीठी है, जिसकी कोरनिस सुन्दर आवरण से ढकी है। इस पर अजन्ता ढंग पर बनाई गई एक स्त्री-मूर्त्ति रखी है। दोनों ओर दो सुन्दर गुलदस्ते हैं। एक अंगीठी की दाहिनी ओर एक छोटी टेबल है, जिसके पास

हेमन्त का निजी सहायक और मुन्शी देवराज बैठा है। इसी तिपाईनुमा टेबल पर एक टाइपराइटर रखा हुआ है और उसके पास हीं दीवार से लगी एक ब्रैकेट पर हरे रंग का एक टेलीफ़ोन। बैठक के बाईं ओर दीवार के पास एक सोफ़ा पड़ा है, उसके सामने शीशे की एक छोटी तिपाई को घेरती हुई दो सोफ़ा कुर्सियां रखी हैं। इस तिपाई पर भी फूलों से सुसज्जित एक फूलदान पड़ा है। इन सोफ़ों के बीच का स्थान तथा बड़ी टेबल के आस-पास का भाग दो छोटे काश्मीरी कालीनों से ढका हुआ है। बैठक के शेष भाग पर नीली दरी दिखाई दे रही है। साथ की दीवार में एक खिड़की है, जो बन्द है और उस पर परदा पड़ा हुआ है। हेमन्तकुमार की आयु ४० के लगभग है, उसकी कनपटियों पर के बाल सफ़ेद हो रहे हैं। चेहरा भरा हुआ और उस पर तराशी हुई मूँछें। उसने तंग पाजामे पर बन्द गले का कोकटी रंग का कोट पहना हुआ है। मुन्शी देवराज की उम्र ५० से से ऊपर है। उसकी आंखों पर चांदी का चश्मा है। सिर पर बड़ी पगड़ी, जिसमें से सफ़ेद-काले बाल बाहर झाँक रहे है। शरीर पतला और लम्बा है। पाजामे के ऊपर वह बन्द गले का कोट पहने हुए हैं। जब परदा उठता है, तो हेमन्त कोई फाइल देखता हुआ दिखाई देता है और मुन्शी अपनी मूँछें सहलाता हुआ। परदा उठते ही दीवार की घड़ी साढ़े पाँच की एक टन बजाती है।)

हेमन्त

साढ़े पांच बज गए मुन्शी जी !

मुन्शी

बज जाने दीजिए साहब, हम लोग तो पूरी तरह तैयार हैं जी।

हेमन्त

तुम कभी राजीव से मिले हो ?

मुन्शी

नहीं साहब।

हेमन्त

बड़ा चलता पुर्जा आदमी है।

मुन्शी

आपका बहनोई कोई ऐसा-वैसा आदमी थोड़े ही होगा।

हेमन्त

उस पर रोब डाल सकना कोई आसान काम नहीं होगा मुन्शीजी।

मुन्शी

बड़े-बड़े उस्ताद आपका लोहा मान गए साहब। फिर यह तो घर के आदमी हैं जी !

हेमन्त

मैं तो आदमी को देखकर ही उसकी वास्तविकता पहचान लेता हूँ। पर राजीव को देखकर तो क्या, अपना बहनोई बना कर भी मैं पहचान नहीं पाया।

मुन्शी

मगर अभी तक आपका उनसे कोई व्यापारिक वास्ता भी तो नहीं पड़ा था। सामाजिक व्यवहार में किसी को पहचानने की ज़रूरत ही क्या होती है जी !

हेमन्त

मेरा मतलब तुम नहीं समझे मुन्शीजी। वास्ता पड़ने के बाद तो सारी

दुनिया आदमी को पहचान लेती है। तारीफ़ तो तब है, जब आदमी को देखकर ही उसका व्यक्तित्व समझ लिया जाए।

मुन्शी

राजीव जी को आप बचपन से जानते हैं न ?

हेमन्त

हां, वह और मैं एक ही कालेज में पढ़ते थे। वह मुझ से दो ही साल छोटा है। अपनी-अपनी श्रेणी में हम दोनों की धाक थी। पर दोनों के सम्बन्ध में धाक का कारण एकदम विभिन्न था। राजीव सदा अपनी श्रेणी में प्रथम आता था और इधर मैं पढ़ाई में अच्छा न होते हुए भी कालेज का बहुत महत्वपूर्ण छात्र था। मेरे कालेज छोड़ने के ३ वर्ष बाद एम० ए० में प्रथम श्रेणी और प्रथम स्थान प्राप्त कर वह आई० सी० एस० की प्रतियोगिता में बैठा और पहले ही साल सफल भी हो गया।

मुन्शी

(आश्चर्य से) पहले ही साल ?

हेमन्त

हां, पहले ही साल। आई० सी० एस० में सम्मिलित होकर वह बिहार के एक ज़िले में कलैक्टर के पद पर नियुक्त हुआ और वहां भी उसका रिकार्ड बहुत शान्दार रहा। भारत जब स्वाधीन हुआ, तब वह एक राज्य में सिविल सप्लाइज़ का चीफ़ कण्ट्रोलर था। पर भारत की स्वाधीनता के एक वर्ष के भीतर ही वह त्यागपत्र देकर पृथक् हो गया।

मुन्शी

(आश्चर्य से) वह क्यों ?

हेमन्त

इस बात का उत्तर मुझे मिल जाता तो मैं राजीव के व्यक्तित्व को पहचान न लेता ? उन दिनों अंग्रेज़ सिविलियन भारत छोड़कर इंगलैंड

वापस जा रहे थे, कुछ पाकिस्तान चले गए थे, इससे भारतीय सिविलियनों को उन्नति का बहुत अच्छा अवसर मिल गया था। राजीव की पदोन्नति भी बहुत शीघ्रता से हो रही थी।

मुन्शी

(सिर खुजलाते हुए) तब तो ज़रूर कहीं दाल में काला होगा जी।

हेमन्त

दाल में कहीं काला नहीं था मुन्शीजी। राजीव लायक तो था ही। उसकी ईमानदारी की धाक वायसराय तक पर थी।

मुन्शी

अजी, सोचा होगा, आज़ादी से व्यापार-व्यवसाय करके अधिक पैसा बना सकूँगा। उनके मां-बाप भी तो बहुत अमीर थे न? उस पर इतने व्यापक सम्बन्ध भी हैं।

हेमन्त

यह बात भी नहीं है मुन्शीजी। राजीव के बारे में धाक यही थी कि वह देशभक्त है। वह जानता था कि उसके समान योग्य सिविलियन देश में बहुत कम हैं। वह यह भी जानता था कि देश को उसकी ज़रूरत है। फिर भी उसने त्यागपत्र दे दिया।

मुन्शी

यह तो अच्छी-खासी पहेली बन गई जी!

हेमन्त

यही तो बात है। राजीव बहुत गहरा आदमी है। पर मैंने भी निश्चय कर लिया है कि उसकी गहराई की थाह पाकर ही रहूँगा। अच्छा, सभी कुछ तैयार है न मुन्शी जी? मुझे मनुष्य की गन्ध आ रही है।

मुन्शी

मैं पूरी तरह तैयार हूँ। किसी बात में कहीं कोई गल्ती न होगी। आप

निश्चिन्त रहें ।

(दरवाज़े पर दस्तक की आवाज़ सुनाई देती है)

*हेमन्त*

भीतर आजाइए ।

(चपरासी दरवाज़ा खोलता है । मुन्शी दौड़कर दरवाज़े के पास पहुँचता है । दरवाज़ा खुलते ही राजीव और उमा भीतर प्रवेश करते हैं । राजीव की आयु ४० वर्ष से कुछ ही कम है । इकहरा शरीर । तंग पाजामा और उस पर सफ़ेद शेरवानी पहने हुए । नंगा सिर । उमा हल्के नीले रंग का चुस्त ब्लाउज़ पहने है । वेशभूषा आधुनिक । राजीव के भीतर आने पर हेमन्त उठ कर कुछ क्षण अपनी कुर्सी के सामने ही खड़ा रहता है । पर जब राजीव दो-तीन कदम उसकी तरफ़ बढ़ता है, तो तेज़ी से चलकर वह बैठक के बीच तक आ पहुँचा है । राजीव से हाथ मिलाकर वह उमा की पीठ थपथपाता है, उसके बाद तीनों सोफ़ा सेट पर जा बैठते हैं और मुन्शी अपनी टेबल की ओर लौट आता है । राजीव बाईं ओर रखी सोफ़ा कुर्सी पर बैठा है, उमा सामने वाले सोफ़े पर राजीव की ओर, और हेमन्त सोफ़े ही पर उमा के निकट ।)

*राजीव*

हमें कुछ देर हो गई । परन्तु—

*हेमन्त*

**(बीच ही में)** नहीं ५, ७ मिनट की देर हमारे देश में देर नहीं मानी जाती । बस, हम लोग आपकी प्रतीक्षा में ही थे ।

*राजीव*

मेरी आदत देर से आने की नहीं है। मगर बात यह हुई कि—

*हेमन्त*

(**बीच ही में बात काट कर**) अजी जाने भी दीजिए। जब मुझे इस बात की शिकायत ही नहीं है—

*उमा*

(**बीच ही में**) मुझे तो यह डर था भाई साहब, कि हमें बुलाकर आप स्वयं कहीं और चाय पीने न चले गए हों।

*हेमन्त*

यह भी कभी हो सकता है ?

*उमा*

हो सकता क्या, अक्सर होता है !

*हेमन्त*

तुम्हारी बात दूसरी है उमा। पर यह तो--

*उमा*

(**बीच ही में**) हां, बहनोई तो बहन से बढ़कर होता है न।

*हेमन्त*

(**राजीव से**) आप क्या पीएंगे भाई साहब ?

*राजीव*

उमा चाय पसन्द करती है और मैं काफ़ी।

*हेमन्त*

यहां दोनों ही का प्रबन्ध है। पर इतने बरसों में न आप उमा को काफ़ी का कायल कर सके और न उमा आपको चाय का कायल।

*उमा*

हम दोनों व्यक्तिगत स्वाधीनता के कायल हैं।

हेमन्त

अब के अभी से इतनी तेज़ गरमी पड़ने लगी। आप लोग किसी पहाड़ पर जा रहे हैं क्या ?

राजीव

मैं मज़दूर आदमी हूँ। पहाड़ पर जाने की सुविधा मुझे कहां है ?

हेमन्त

आप-सा मज़दूर कौन न बनना चाहेगा। ५० लाख का कारखाना आप लगा रहे हैं। पर हैं मज़दूर ही !

राजीव

बिल्कुल ठीक। कारखाना तो एक पब्लिक ट्रस्ट के समान होता है। वह चाहे कितना ही बड़ा हो, पर मैं सचमुच अपने को इस कारखाने का एक ऐसा मज़दूर समझता हूँ, जो अपनी दिन रात की मेहनत से इस कारखाने को सफल बनाने पर तुला हुआ है।

उमा

**(हेमन्त से)** भाई साहब, इनके काम की चिन्ता न कीजिए। अब यह बताइए कि आपके कामकाज का क्या हालचाल है ?

हेमन्त

आजकल तो दम मारने की भी फुरसत नहीं है।

राजीव

इससे बढ़कर खुशकिस्मती और क्या हो सकती है ?

**(इसी समय हरे रंग के टेलीफ़ोन की घंटी बजती है। हेमन्त मुन्शी की ओर देखता है,जो शीघ्रता से झुककर टेलीफ़ोन का रिसीवर उठा लेता है।)**

मुन्शी

हैलो ! चार, पाँच, दो, सात, चार।...जी हैं।...जी मैं उनका मन्त्री बोल रहा हूँ।...जी, अभी बुलाता हूँ।...जी, कौन साहब बोल रहे हैं ?...

जी अभी !

(**हेमन्त से**) हज़ूर, व्यवसाय मन्त्री साहब का टेलीफ़ोन है।

*हेमन्त*

(**राजीव से**) क्षमा कीजिए। मैं अभी आया।

**(उठ कर टेलीफ़ोन के पास जाता है और रिसीवर हाथ में लेकर बात करने लगता है।)**

जी मैं हेमन्त बोल रहा हूँ...नमस्कार।...बहुत अच्छा।...जी किस व्यवसाय के सम्बन्ध में ?...अच्छा फ़ोटोग्राफ़ी की फ़िल्में बनाने के सम्बन्ध में ?...जी हाँ !...म पूरी सामग्री पढ़ गया हूँ।...आधी से अधिक तो मैं अपनी रिपोर्ट लिखवा भी चुका हूँ।...बहुत ठीक। ...आज रात मैं उसे पूरा करके ही सोऊँगा।...बहुत अच्छा ! कल तक वह अवश्य आपको मिल जाएगी।...जी आप क्यों कष्ट करेंगे, मैं स्वयं हाज़िर हो जाऊँगा। मुझे खुद आपसे कुछ बातें करनी हैं।...आपकी कृपा है।...जी काम तो रहता ही है...बहुत अच्छा !...जी नमस्कार।

**(रिसीवर टेलीफ़ोन पर रखकर मुन्शी से)**

आज शायद सारी रात आपको काम करना होगा मुन्शी जी !

*मुन्शी*

मुझे यों भी रात को नींद नहीं आती जी।

**(सब लोग मुस्कराते हैं।)**

**(इसी समय तिपाइयों पर चाय, काफ़ी लगा दी जाती है और कुछ खाने की चीज़ें भी। उमा एक प्याले में काफ़ी उंड़ेलते हुए)**

*उमा*

भाई साहब, आप मेरा साथ देंगे या अपने जीजा जी का ?

*हेमन्त*

मैं पीऊँगा तो चाय ही, पर साथ दूँगा जीजा जी का।

*राजीव*

बहुत खूब ।

*हेमन्त*

**(अपनी जगह बैठकर)** आपके मैशीन टूल्स के नये कारखाने का क्या हाल है ?

*राजीव*

नए कारखाने की दिक्कतें तो आप जानते ही हैं भाई साहब ! सबसे बड़ी दिक्कत तो यह है कि सीखे हुए कार्यकर्ता आसानी से नहीं मिलते । मैं स्वयं प्रतिदिन ८ घंटा काम करता हूँ और समझदार नौजवानों को काम सिखा रहा हूँ ।

*हेमन्त*

ठीक कहा आपने । हमारे देश के मज़दूर तो बिल्कुल कूड़मग्ज़ ही हैं ।

*राजीव*

हरगिज़ नहीं । बल्कि मेरा अनुभव तो यह है कि हमारे नौजवान न सिर्फ़ बहुत समझदार हैं, अपितु वे नए से नया काम सीखने को उत्सुक रहते हैं ।

*हेमन्त*

या तो आप सौभाग्यशाली हैं कि आपको सभी अच्छे किस्म के काम करने वाले मिल गए हैं और या वे लोग आप पर इस तरह का प्रभाव डालकर अपना उल्लू सीधा कर रहे होंगे ।

*राजीव*

अजी जाने भी दीजिए । कभी कोई उल्लू भी सीधा हुआ है ?

**(हरे टेलीफ़ोन की घंटी बजती है । हेमन्त उधर कोई ध्यान नहीं देता । पर मुन्शी जी उठकर वहाँ पहुँचते हैं और रिसीवर उठाते हैं ।)**

मुन्शी

हेलो ! चार-पाँच-दो-सात-चार ।...जी हाँ, यही हैं । पर अभी व्यस्त हैं ।...बुला दूँ ?...आप कौन साहब बोल रहे हैं ?...जी अभी बुलाता हूँ ।

(हेमन्त से) रिजर्व बैंक के गवर्नर साहब का टेलीफ़ोन है हज़ूर ! कहते हैं कोई बहुत ज़रूरी काम है ।

**(हेमन्त आराम से उठता है और धीरे-धीरे टेलीफ़ोन के पास जाता है । जाते-जाते राजीव से)**

हेमन्त

माफ़ कीजिए, मैं इन्हें टालकर अभी आया ।

**(टेलीफ़ोन के पास पहुंचकर और रिसीवर कान से लगा कर**

नमस्कार ! ...जी आप कब तशरीफ लाए ?...आज सुबह के हवाई जहाज़ से ?...आपकी तबीयत तो अब ठीक है न ?...आपका तार मिल गया था...बम्बई आ नहीं सका ।...काम से कुछ फुरसत ही नहीं मिली । ...जी माफ़ कीजिए, कल तो नहीं । कल मेरा सारा दिन बहुत व्यस्तता में बीतेगा । हां, परसों ज़रूर...समय की कोई बात नहीं...यों सांझ ठीक रहेगी ।...बहुत ठीक ! बहुत ठीक,...अच्छा नमस्कार ।

**(रिसीवर टेलीफ़ोन पर रखकर वापस आता है । राजीव से)**

क्षमा कीजिएगा राजीव भाई । हमारी ज़िन्दगी भी कोई ज़िन्दगी है !

राजीव

गुस्ताखी माफ़ हो तो मैं यह जानना चाहूँगा कि आजकल आप क्या काम कर रहे हैं ?

हेमन्त

आखिर न मैं किसी कारखाने का मालिक हूँ और न कोई सरकारी अफ़सर ।

*उमा*

पर भाई साहब, आपने न कभी कारखानों के मालिकों को कुछ समझा है, न कभी सरकारी अफ़सरों को ही। पिताजी कहा करते थे कि हेमन्त सारी दुनिया से न्यारे हैं।

*राजीव*

तुम्हारे भाई साहब में असाधारण प्रतिभा है। जब मैं कालेज के प्रथम वर्ष में था, तब भाई साहब तीसरे वर्ष में थे। उन दिनों भी सारे कालेज पर उनका रोब था। और कोई यह समझ नहीं पाता था कि उनके इस भारी प्रभाव का कारण क्या है।

*उमा*

पिछले कितने ही बरसों से भाई साहब इम्पीरियल होटल में एक सबसे महंगा सैट लेकर रहते थे। नए से नए माडल की शान्दार बड़ी कारें दिल्ली में सबसे पहले भाई साहब के पास ही देखने में आती थी। पर न जाने किस कारण भाई साहब ने इम्पीरियल होटल छोड़ कर गुज़ारे लायक यह छोटा-सा फ़्लैट ले लिया। बड़ी कार छोड़ कर 'हिन्दोस्तान—१४' पर सफ़र करने लगे और कीमती सूट छोड़कर चूड़ीदार पाजामा और बन्द गले का कोट पहनने लगे।

*राजीव*

**(हेमन्त से)** पर भाई साहब, आपने मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। आजकल आप क्या काम कर रहे हैं ?

*हेमन्त*

**(मुस्करा कर)** मसल मशहूर है न 'काज़ी जी दुबले क्यों, शहर के अंदेशे से !' सो सारी दुनिया के काम मेरे काम हैं। नगर की कितनी ही संस्थाएं हर समय सलाह मांगती रहती हैं। जिस किसी का कोई काम अटकता है, वह दौड़ा हुआ यहां पहुंचता है। क्यों मुन्शीजी !

मुन्शी

अजी जनाब, लोगों ने इस दफ़्तर को जैसे कोई मज़ार समझ लिया है। जहां जो मांगो मिल सकता है। किसी को नौकरी की तलाश है तो हमारे साहब के पास दौड़ा आएगा जी, किसी से कोई अपराध हो गया है तो वह भी यहीं दिखाई देगा जी, किसी को नोटिस मिल गया है तो वह भी सीधा यहां आएगा जी। यहां तक कि बड़े-बड़े सैक्रेटरी, यहां तक कि मिनिस्टर भी——

हेमन्त

अधिक बहकिये नहीं मुन्शीजी। मैं तो जनता का अदना-सा सेवक हूँ। मेरी बिसात ही क्या है ?

राजीव

यह सब तो आपकी समाज सेवा हुई। मैं पूछ रहा था कि आपका पेशा क्या है ? ज़रा तकल्लुफ से कहूँ, तो पूछूँगा कि आपका 'शुग़ल' क्या है ?

उमा

भाई साहब ने जब से काम शुरू किया, मेरे लिए सदा यह एक रहस्य रहा है कि उनका काम क्या है ? मगर यह भी सच है कि वह सदा बहुत व्यस्त रहते हैं।

हेमन्त

यह कोई इतनी रहस्यपूर्ण बात नहीं है राजीव भाई। आप जानते ही हैं कि मैं कितनी ही कम्पनियों का डाइरैक्टर हूँ।

राजीव

सिगरेट की उस फैक्टरी के बारे में वह इतना बवण्डर क्या खड़ा हुआ था ? अच्छा खासा स्कैण्डल बन गया। असल में बात क्या थी ?

हेमन्त

उस बवण्डर की सम्भावना ही से तो डर कर वे लोग मुझे अपना मैने-

जिग डाइरैक्टर बनाने पर तुल गए थे। आख़िर क्या करता ? मुझे इतना मजबूर किया कि मुझे स्वीकार करना ही पड़ा। कोयले की दलाली में हाथ काले होते ही हैं। सो मेरा नाम भी बीच में लपेट लिया गया। **(कुछ उद्विग्न-सा होकर उठ खड़ा होता है)** आप श्री शौरी कृष्णन रैड्डी को तो जानते ही होंगे ?

*राजीव*

वह मेरे मित्र हैं। पर आपको उनसे क्या काम है ?

*हेमन्त*

बात यह है कि...

**(हरे टेलीफ़ोन की घण्टी फिर से बजती है। अब के हेमन्त तेज़ी से टेलीफ़ोन की ओर बढ़ता है। राजीव से 'माफ़ कीजिए' कह कर रिसीवर उठा लेता है।)**

हेमन्तकुमार बोल रहा हूँ।......नमस्कार।...जी माफ़ कीजिए, मैं उद्‌घाटन समारोह में नहीं आ सकूँगा।...जी, आप मुझे ही यह सम्मान देना चाहते हैं ?...नहीं, नहीं। माफ़ कीजिए, मैं नहीं आ सकूँगा।...मुझे इन दिनों बहुत अधिक काम है।...मुझे खेद है।...नमस्कार !

**(रिसीवर टेलीफ़ोन पर रखकर शीघ्रता से वापस लौटता है। राजीव से)**

मैंने कहा न राजीव भाई, यह भी कोई ज़िन्दगी है ! इन्हीं झंझटों से बचने के लिए तो मैं पार्लियामैण्ट में नहीं गया।

*उमा*

कौन था यह ?

*हेमन्त*

दीनबन्धु कालेज के प्रिन्सिपल साहब थे। चाहते थे कि उनके नए छात्रावास का उद्‌घाटन मेरे हाथों से हो।

राजीव

आप तो बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति बन गए हैं भाई साहब।

हेमन्त

(**विनय से**) जी, आपकी कृपा है।

मुन्शी

(**खड़े होकर**) जी श्री शौरी कृष्णन रैड्डी ! जी—

हेमन्त

हां, राजीव भाई, श्री शौरी कृष्णन् रैड्डी आपके मित्र हैं न ?

राजीव

मैंने कहा तो था। क्यों बात क्या है ?

हेमन्त

बात कोई खास तो नहीं। आपने सिगरेट की उस फैक्टरी का ज़िक्र किया था न ? उस मामले की प्रारम्भिक जाँच-पड़ताल वही रैड्डी साहब कर रहे हैं। मुझे तो डाइरैक्टरों ने ज़बरदस्ती मैनेजिंग डाइरेक्टर बना दिया था। अब उन्हें डर है कि रैड्डी साहब यह मामला किसी जांच कमीशन को दे रहे हैं।

राजीव

माफ़ कीजिए भाई साहब। इस बारे में मैं आपकी कोई सहायता न कर सकूँगा। मेरी राय तो यह है कि यदि उस मामले में आपका कोई उत्तरदायित्व नहीं है, तो आप स्वयं रैड्डी साहब से मिलें और उनके सामने सब बात स्पष्ट कर दें। वह बहुत खरे आदमी हैं। मेरी राय तो यहां तक है कि आप सिगरेट की उस कम्पनी से एकदम पृथक् हो जाएं और उस मामले के बारे में जो कुछ आपको ज्ञात है, वह सब आप रैड्डी साहब को स्वयं उनके यहां आकर बता दें।

*हेमन्त*

**(ऊंची हंसी के साथ)** आप तो अच्छा खासा लैक्चर दे गए राजीव भाई। मेरा तो ख्याल था कि आपको भी उस सिगरेट कम्पनी का एक डाइरैक्टर बना लिया जाए। आज जाने दीजिए। फिर कभी इस बारे में बात-चीत करूँगा। यह बात आप सदा ध्यान में रखिएगा कि मेरा कोई काम कानून की सीमा के बाहर नहीं होता।

**(हरे टेलीफ़ोन की घण्टी फिर से बजती है और मुन्शी हाथ बढ़ाकर रिसीवर उठा लेता है।)**

*मुन्शी*

हैलो ४५२७४ !...जी हां—हैं।...मैं उनका सैक्रेटरी बोल रहा हूं। ...जी प्रधान मन्त्री निवास से? **(उठकर खड़ा हो जाता है)**...अभी बुलाता हूँ हजूर।...अभी लीजिए !

**(घबराए हुए स्वर में हेमन्त से)** प्रधान मन्त्री साहब का टेलीफ़ोन है। उनके मुख्य सहायक बोल रहे हैं !

**(हेमन्त तेजी से हरे टेलीफ़ोन के पास पहुंचता है। रिसीवर हाथ में लेकर)**

*हेमन्त*

जी मैं हेमन्त बोल रहा हूँ।...नमस्कार।...आपकी कृपा है। प्रधान मन्त्री ने कल सुबह मुझे बुलाया है?...आठ बजे ?...ज़रूर ज़रूर ! मैं ज़रूर हाज़िर हो जाऊँगा।......जी मेरा उनसे सादर नमस्कार कह दीजिएगा।...धन्यवाद...आपकी कृपा है।...जी नमस्कार !

**(रिसीवर टेलीफोन पर रखकर बड़े प्रसन्न मन से सोफ़े की ओर बढ़ता है। पर पाता है कि राजीव और उमा अपनी-अपनी जगह खड़े हो गए हैं और ज़ोर-ज़ोर से हँस रहे हैं। हेमन्त घबराकर उनकी ओर देखने लगता है। मुन्शी जी और भी अधिक घबरा जाते हैं।)**

हेमन्त

यह भी क्या मज़ाक हुआ उमा ?

**(दोनों की हँसी बन्द नहीं होती, बल्कि बढ़ जाती है।)**

हेमन्त

(**राजीव से**) आखिर बात क्या है राजीव भाई !

राजीव

बात इतनी ही है कि आखिर आप बड़ी आसानी से पकड़ में आ गए। वह भी खुद-ब-खुद !

हेमन्त

पकड़ ! पकड़ कैसी ?

राजीव

अगर शुरू ही में आपने हमारे देर से पहुँचने का कारण सुन लिया होता तो यह नौबत ही न आती। पर तब आपने मुझे अपनी बात पूरी भी न करने दी थी। अब सोचता हूँ, वह भी अच्छा ही हुआ था।

हेमन्त

यह आप क्या पहेलियाँ बुझवा रहे हैं राजीव भाई ?

**(उमा अब भी उसी तरह हँसे जा रही है।)**

राजीव

बात इतनी ही है कि प्रधान मन्त्री तो अपने विशेष हवाई जहाज़ से आज ५ बजे बम्बई चले गए और उनके मुख्य सहायक भी उनके साथ थे। और भी——

हेमन्त

(**घबरा कर**) एकदम झूठ ! आपको ग़लत खबर मिली है ! उनके जाने की खबर क्या आपने "ईवनिंग काल" में पढ़ी है ? ये अख़बार तो सदा चण्डूखाने की——

राजीव

जी पढ़ा कहीं नहीं है, मैंने, बल्कि हम दोनों ने अपनी आंखों से उन्हें दिल्ली से जाते हुए देखा है। बात यह हुई कि पौने पांच बजे अपने एक मित्र को विदा देने हम दोनों पालम हवाई अड्डे पर गए थे। उन्हें छोड़कर हम चले ही थे कि वहां प्रधान मन्त्री और उनके मुख्य सहायक से मेरी भेंट हो गई। ठीक ५ बजे उनका जहाज़ चला गया था। असल में हमारे यहां आने में विलम्ब हो जाने का कारण भी यही था।

**(हेमन्त चुपचाप खड़े रहकर अपने मुन्शी की ओर आग्नेय दृष्टि से देखता है, जो अपनी जगह थर-थर कांप रहा है।)**

उमा

**(हँसती हुई)** अपने घर वालों पर रोब ग़ालिब करने से आपको क्या मिलेगा भाई साहब ?

**(एकाएक हेमन्त भी उस हँसी में सहयोग देता है।)**

हेमन्त

यह दुनिया एक नाटक ही तो है। मैं अपने पार्ट में ज़रा ओवर एक्टिंग कर गया। बस, मेरा अपराध इतना ही है।

उमा

जीवन को अगर आप सचमुच एक नाटक ही समझते तो यह नौबत ही क्यों आती भाई साहब ?

राजीव

मेरा असूल इस बारे में एकदम दूसरा है, भाई साहब। जीवन को मैं एक बड़ी और महत्वपूर्ण वास्तविकता समझता हूँ। मगर जो कुछ बीत चुका होता है, उसके बारे में यही समझता हूँ कि वह सब एक अच्छा-खासा नाटक था।

*हेमन्त*

बहुत बड़ी बात कह दी आपने। पर यह कितनी कठिन बात है।

*उमा*

(**हेमन्त से**) पर भाई साहब ! आप तो शुरू ही से कठिन राहों के पुजारी रहे हैं।

*राजीव*

(**उमा से**) चलो जाने दो इन बातों को। तुम्हारे भाई साहब आजकल बहुत व्यस्त हैं, इसलिए हमें अब इनसे विदा लेनी चाहिए।

(नमस्कार कर राजीव और उमा बाहर चले जाते हैं। हेमन्त दरवाज़े तक उन्हें विदाई देने जाता है। उमा और राजीव के चले जाने पर वह दरवाज़ा ठीक से बन्द करता है और क्षण-भर चुपचाप उसी जगह खड़े रहता है। उसके बाद बाहर से कार चलने की आवाज़ आते ही वह गरज उठता है।)

*हेमन्त*

तुम कितने बड़े अहमक हो मुन्शी जी!

*मुन्शी*

जी, मैं आपका बच्चा हूँ !

*हेमन्त*

क्या कहा था तुमने शुरू में—"हम लोग पूरी तरह तैयार हैं !" यह थी तुम्हारी पूरी तैयारी ?

**(हरे टेलीफ़ोन के पास पहुँचता है और क्रोध से उसे एक झटका देता है। टेलीफ़ोन तार समेत नीचे जा गिरता है। हेमन्त और भी झल्ला उठता है।)**

यह थी तुम्हारी पूरी तैयारी ? यदि कहीं राजीव टेलीफ़ोन करने यहां

आ जाता और ब्रैकेट के नीचे की घंटी उसे दिखाई दे जाती तो क्या होता ?

*मुन्शी*

वही, जो अब घण्टी देखे बिना ही हो गया है !

*हेमन्त*

हम और तुम बुरी तरह फ़ेल हो गए मुन्शी !

*मुन्शी*

अजी जनाब, अपने को फ़ेल मानने वाले कोई और लोग होंगे । यह तो ज़िन्दगी है । ज़िन्दगी में ऊंच नीच तो आता ही रहता है ।

**(इसी समय दरवाज़े पर दस्तक सुनाई देती है । हेमन्त शीघ्रता से अपनी मेज़ के पास लौट आता है और मुन्शी टेलीफ़ोन उठाकर ब्रैकेट पर रखता है ।)**

*हेमन्त*

**(गम्भीर स्वर से)** भीतर आओ ।

**(चपरासी दरवाज़ा खोलकर भीतर आता है और सलाम बजाकर खड़ा हो जाता है ।)**

*हेमन्त*

क्या बात है ?

*चपरासी*

एक बाई आई है हज़ूर ।

*हेमन्त*

बाई ! कैसी बाई ?

*चपरासी*

देख लेई हुजूर । हुकुम होई तो भीतर लै आवैं ।

*हेमन्त*

ले आओ । मगर एक मिनट ठहरो । तुम अभी बाहर जाकर ठहरो ।

मुन्शी जी !

( चपरासी बाहर चला जाता है। )

मुन्शी

जी हज़ूर।

हेमन्त

सदानन्द साहब की फ़रमाइश याद है ?

मुन्शी

खूब याद है साहब।

हेमन्त

ज़रा बाहर जाकर देखो कि लड़की हमारे काम की है या नहीं। यदि काम की हो तो उसे भीतर ले आओ। और काम की न हो तो उसे वहीं से टरका दो।

मुन्शी

जो हुकुम साहब।

**(मुन्शीजी बाहर जाते हैं। हेमन्त खड़े होकर अपने बाल ठीक करता है। क्षण भर बाद मुन्शी भीतर आता है और हेमन्त के बहुत निकट आकर धीरे से कहता है।)**

मुन्शी

बहुत चोखा माल है साहब। यह सदानन्द साहब तो बहुत खुशकिस्मत मालूम होता है।

हेमन्त

बहुत ठीक। अपनी जगह जाकर बैठिए।

(मुन्शी अपने स्थान पर चला जाता है। इसी समय चपरासी दरवाज़ा खोलता है और सादी पर स्वच्छ पोशाक में

एक सुन्दर युवती का प्रवेश। मुन्शी अपनी जगह खड़ा हो जाता है, पर हेमन्त बैटा रहता है। झिझकते हुए युवती हेमन्त के पास पहुँचती है और उसे प्रणाम कर मेज़ के सामने खड़ी हो जाती है।)

*हेमन्त*

कहिए, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?

*युवती*

श्री त्रिपाठी ने मुझे आपसे मिलने को कहा था।

*हेमन्त*

त्रिपाठी कौन? **(साथ ही साथ स्वयं)** हरिदास त्रिपाठी?

*युवती*

जी उन्हीं ने। त्रिपाठीजी ने यह पत्र भी दिया है।

**(युवती के हाथ से एक लिफ़ाफ़ा लेकर हेमन्त उसे खोलता है और शीघ्रता से पढ़ जाता है।)**

*हेमन्त*

इस कुर्सी पर बैठ जाइए।

**(युवती सामने की कुर्सी पर बैठ जाती है।)**

तो आपका नाम कमला है?

*कमला*

जी हां।

*हेमन्त*

अच्छा कमला जी, आप किस तरह का काम चाहती हैं?

*कमला*

त्रिपाठीजी ने इस बारे में कुछ नहीं लिखा?

हेमन्त

त्रिपाठीजी की बात जाने दीजिए। आप स्वयं बताइए कि आप क्या काम करना पसन्द करेंगी?

कमला

(**घबराहट भरे स्वर में**) जी, त्रिपाठीजी ने कहा था कि आप मुझे कोई अच्छी सरकारी नौकरी दिलवा सकेंगे।

हेमन्त

फिर वही त्रिपाठीजी! त्रिपाठीजी से आपका परिचय किस प्रकार हुआ?

कमला

(**और भी अधिक घबरा कर**) मैं त्रिपाठीजी को अधिक नहीं जानती। मेरी मासीजी उन्हें अच्छी तरह जानती हैं। उनसे यह परिचय पत्र मासीजी ने ही लेकर दिया था।

हेमन्त

आपके माता पिता यह जानते हैं कि आप नौकरी की तलाश कर रही हैं?

कमला

(**उदास स्वर से**) मेरे पिताजी और माताजी दोनों का स्वर्गवास हो चुका है। इन्हीं मासीजी ने मुझे पाला-पोसा है।

हेमन्त

मुझे आपसे बहुत सहानुभूति है। माता-पिता दोनों का ही देहावसान हो गया? कब?

कमला

उस बात को अब बहुत समय बीत गया। मैं तब १३ वर्ष की काफ़ी समझदार बालिका थी। पंजाब में मेरे निवास स्थान पर ही मेरी आंखों के

सामने पहले मेरे पिताजी और उसके बाद मेरी माताजी की हत्या की गई थी। उस सबकी याद करते भी मैं कांप उठती हूँ। आप कृपा कर वह सब मुझसे न पूछिए। मुझे कोई काम दिला सकें तो आपकी बड़ी मेहरबानी होगी।

*हेमन्त*

आप बेफ़िक्र रहें, आपको काम ज़रूर मिलेगा। एम० ए० आपने किस विषय में और किस श्रेणी में पास किया है ?

*कमला*

इतिहास लेकर दूसरी श्रेणी में। पर यह भी ख़्याल कीजिए कि मैंने अपनी सारी पढ़ाई अपनी मेहनत से ही की है।

*हेमन्त*

अपनी मेहनत का क्या मतलब ?

*कमला*

घर की सफ़ाई, खाना बनाना आदि कार्यों के साथ-साथ मैं घर ही पर पढ़ती भी थी। मेरे पास पूरी किताबें तक नहीं थी। इस तरह मैंने मैट्रिक पास किया। मैट्रिक पास करते ही मैं एक साथ दो-तीन ट्यूशनें करने लगी और सांझ के समय कैम्प कालेज में पढ़ने लगी। रहने के नाम पर मेरे पास एक कमरा तक भी नहीं था। बांस की खपचियों से मढ़े बरामदे के एक भाग पर मेरी चारपाई पिछले चार सालों से रखी हुई है। उसी पर बैठकर पढ़ते हुए मैंने दूसरी श्रेणी में एम० ए० पास किया है।

**(स्वर में कुछ उत्तेजना-सी आ जाती है।)**

*हेमन्त*

मुन्शीजी, चपरासी से कह कर एक प्याला काफ़ी मंगवाइए।

*मुन्शी*

बहुत अच्छा हजूर।

(बाहर चला जाता है।)

*हेमन्त*

मैं आपका दुख दर्द खूब समझता हूँ कमला जी। शरणार्थियों से मुझे पूरी सहानुभूति है। इस छोटी-सी उम्र में आपको दुनिया का इतना अनुभव हो गया है। यह मामूली बात नहीं है कमला जी।

*कमला*

मुझे दुनिया का क्या अनुभव हो सकता है साहब। मैं तो जन्म की एक अभागिन हूँ। आपकी कृपा होगी तो मेरा भविष्य बन जाएगा। आप विश्वास कीजिए, मैं पूरा मन लगाकर अपना काम करूँगी।

*हेमन्त*

तुम बड़ी खुशकिस्मत हो कमला। आज सुबह ही मुझे एक बहुत बड़े अफ़सर का टेलीफ़ोन आया था कि उन्हें एक पढ़ी-लिखी और चुस्त लड़की चाहिए। ठीक तुम्हारे जैसी। तुम वहां बहुत आराम से रहोगी।

*कमला*

**(घबरा कर)** मेरे जैसी! मैं तो नौकरी की तलाश में आपके पास आई हूँ। मुझे नौकरी चाहिए। और कुछ भी नहीं। मैं अपना काम पूरी मेहनत और और ईमानदारी से करूँगी।

*हेमन्त*

हां, हां। तुम्हें नौकरी ही मिलेगी। वही तो मैं तुम्हें बता रहा था। इतना घबराने से कैसे काम चलेगा?

*कमला*

मुझे माफ़ कीजिए। मैंने कहा था न मैं जन्म की अभागिन हूँ। मैं बहुत जल्द घबरा जाती हूँ। और, कभी-कभी तो मैं डर से कांपने लगती हूँ। आज से १० वर्ष पहले जिस तरह मेरे माता-पिता की हत्या की गई थी, वह सब मेरी आंखों के सामने आ खड़ा होता है और मैं बहुत अधिक घबरा

जाती हूँ। वह अत्यन्त भयंकर दृश्य जैसे मेरा पीछा ही नहीं छोड़ता ! मुझे सारी दुनिया से डर लगने लगता है ! आप मुझे काम दिलवाइए। मैं पूरा दिल लगा कर काम करूँगी।

(कमला इतना घबरा जाती है कि उसकी आंखों में आंसू भर आते हैं। वह सिर झुकाकर आंसू रोकने का प्रयत्न करती है। हेमन्त अपनी कुर्सी से उठकर खड़ा हो जाता है और कमला के पास आकर उसकी पीठ थपथपाता है। इसी समय कौफ़ी का एक प्याला हाथ में लिए चपरासी भीतर आता है और प्याला मेज़ पर रख देता है।)

*हेमन्त*

यह कौफ़ी पी लो कमला। तुम तो एक बहुत बहादुर लड़की हो। तुम्हारे तकलीफ़ के दिन अब सदा के लिए समाप्त हो गए।

**(कमला रूमाल से अपना मुंह पोंछकर अपने दुख पर काबू पा लेती है। चेहरे पर ज़बरदस्ती कुछ मुस्कराहट लाकर वह कहती है।)**

*कमला*

धन्यवाद ! मैं इस समय कुछ भी नहीं ले सकूँगी। आपकी बड़ी कृपा होगी, यदि आप मेरी नौकरी का कोई प्रबन्ध कर सकें। मैं खूब दिल लगा कर काम करूँगी। काम में अपने को डुबो दूंगी।

*हेमन्त*

अपने एक मित्र के नाम मैं तुम्हें एक पत्र दूंगा। मेरे यह मित्र बहुत बड़े सरकारी अफ़सर हैं। तुम कल ही उनसे मिलना। मुझे यकीन है कि कल ही से तुम्हें नौकरी मिल जाएगी।

*कमला*

मैं आपकी बहुत कृतज्ञ हूँ। पर कृपया यह भी बताइए कि यह नौकरी

सरकारी है या व्यक्तिगत ? मुझे वहां किस तरह का काम करना होगा ?

*हेमन्त*

तुम्हें आम खाने से मतलब है कि पेड़ गिनने से ? मैंने कहा तो, तुम्हें खूब अच्छी तनख्वाह मिलेगी। नौकरी है भी सरकारी, पर यह पूरी तरह मेरे उस दोस्त की इच्छा पर निर्भर करती है। उन्हें अपना मनपसन्द सहायक चुनना है।

*कमला*

मन पसन्द सहायक ?

*हेमन्त*

ठीक ही तो है। उन्हें ऐसा सहायक चाहिए जो उन्हें उनके सब कामों में मदद दे सके, जिस पर उन्हें पूरा भरोसा हो, जो उनकी ज़रूरी चीजों को समझता हो। बाकी रही काम की बात। वह स्वयं सब कुछ तुम्हें ठीक तरह समझा देंगे।

**(इसी समय काले टेलीफ़ोन की घण्टी बजती है। हेमन्त रिसीवर उठाकर बोलने लगता है।)**

*हेमन्त*

हैलो ! हां, मैं हेमन्त बोल रहा हूँ।...नमस्कार।...मुझे मालूम नहीं। ...नहीं, अभी मैंने हिसाब नहीं देखा।...आजकाल मैं बहुत व्यस्त हूँ। मेरे पास ज़रा भी फ़ुरसत नहीं है।...(**चौंक कर**) जी क्या कहा ? बीस हजार !...नौनसेन्स !...यह असम्भव है !...आपने समझ क्या रखा है !...मेरे पास अभी फुरसत नहीं है।...हरगिज़ नहीं !...एक महीने तक तो बात भी मत कीजिए। ...कल सुबह मेरे मुन्शी को टेलीफ़ोन कीजिएगा।...मेरे अहसानों का यही बदला है ! ठीक ! ठीक !...मैं परवाह नहीं करता !...मैं देख लूंगा !

**(क्रोध से रिसिवर पटक कर रख देता है फिर ऊँचे स्वर में आवाज़**

**देता है।)**

मुन्शी जी! चपरासी!

**(बाहर से दो आवाज़ें आती हैं।)**

*मुन्शी*

अभी आया हज़ूर! हाज़िर हुआ जनाव!

**(मुन्शी और चपरासी दोनों शीघ्रता से भीतर जाते हैं।)**

*हेमन्त*

**(चपरासी से)** तुम बाहर जाओ।

**(चपरासी 'जो हुक्म' कह कर बाहर चला जाता है।)**

*हेमन्त*

**(मुन्शी से)** सेठ रामकिशोर से हम कितना रुपया ले चुके हैं?

**(जैसे एकाएक कुछ ख़्याल आ जाता है।)**

माफ़ करना कमला! इस वक्त मुझे बहुत ज़रूरी काम आ पड़ा है।

**(कमला खड़ी हो जाती है।)**

*कमला*

आपने कहा था कि आप मुझे परिचय पत्र देंगे।

*हेमन्त*

हां, हां ज़रूर। तुम निश्चिन्त रहो। अपना पता दे जाओ। परिचय पत्र तो क्या, मुन्शीजी मेरी कार लेकर कल सुबह तुम्हारे यहां आएंगे और तुम्हें साथ लेकर उन साहब से तुम्हारा परिचय करवा देंगे।

**(मुन्शी एक कागज कमला के सामने ले आता है। कमला उस पर अपना पता लिखती है और नमस्कार कर बाहर जाती है।)**

*हेमन्त*

मुन्शीजी, सेठ रामकिशोर का खाता देखकर बताओ कि हम उससे कितना रुपया ले चुके हैं?

मुन्शी

इसकी क्या ज़रूरत पड़ गई साहब ?

हेमन्त

अभी-अभी उसका टेलीफ़ोन आया था। कहता था कि मुझे उसका २० हज़ार रुपया देना है। वह हिसाब के लिए इसी वक्त यहां आना चाहता था। मेरा तो ख्याल था कि मुझे ही उससे कुछ लेना है।

मुन्शी

साहब को याद है न ? बहुत बरस हो गए, जिन दिनों आपने उसे चीनी आयात करने का लाइसैंस ले देने का वायदा किया था, उन दिनों आपके इम्पीरियल होटल में रहने का पूरा खर्च तो वह आपको देता ही था, ३५ हज़ार की एक नई ब्यूक भी तो उसी ने खरीद कर आपको दी थी।

हेमन्त

उससे क्या हुआ ? काम नहीं बना था तो मैंने उसकी कार उसे वापस भी तो कर दी थी। और फिर मैंने कितनी ही और चीज़ों के परमिट लेकर उसे दिए थे।

मुन्शी

उन सब परमिटों के लिए तो ३ प्रतिशत के हिसाब से नकद रुपया हम लोग वसूल करते ही रहे हैं जी।

हेमन्त

रामकिशोर के पास उसकी कोई रसीद है ?

मुन्शी

मैं इतना नासमझ नहीं हूँ साहब। रसीद तो एक तरफ़ रही, मैं सदा फुटकर नोटों में वह रकम लेता रहा हूँ। इकट्ठे नम्बरों वाली नए नोटों की गड्डी तक मैंने कभी उससे नहीं ली। मैं कोई ऐसा कच्चा थोड़े ही हूँ।

हेमन्त

तो फिर सेठ किस तरह यह दावा कर रहा है कि मैं उसके बीस हजार का देनदार हूँ ?

मुन्शी

जी, होटल के सभी बिलों के भुगतान के लिए जब वह मुझे रुपया देता था, तो मुझ से डायरी में दस्तखत करवा लेता था।

हेमन्त

पर वह तो कोई बहुत बड़ी रकम न होगी।

मुन्शी

ठीक रकम तो मुझे याद नहीं। पर उन दिनों आपने बाजार से खरीद फ़रोख्त भी तो बहुत की थी। जिन लोगों से काम लेना होता था, उनके लिए कालीन, कीमती घड़ियां आदि जो कुछ भी खरीदा गया था, उस सब की भुगतान तो सेठ ही ने की थी साहब !

हेमन्त

मगर उसका सबूत क्या है ? सेठ के यहां से पैसा तो सब नकद ही आता था न !

मुन्शी

(**मुस्करा कर**) शायद आप भूल गए साहब ! उन सब पावनों के लिए भी मैं सेठ को दस्तखत देता था।

हेमन्त

(**झुंझलाहट से**) तुम बड़े अहमक हो मुन्शी !

मुन्शी

जी, मैं तो आपका बच्चा हूँ।

हेमन्त

तो फिर रसीदें क्यों दी ?

मुन्शी

आप अब भूल गए साहब ! एक तरफ़ सेठ से आप खुद रकम वसूल करते हुए डरते थे, शायद कहीं आप पकड़ में न आ जाएँ । इससे सारी वसूली मुझे करनी होती थी । दूसरी तरफ़ मुझ पर भी आपको पूरा भरोसा नहीं था, इससे आप ही ने तो कहा था कि कम-से-कम सभी बिलों की अदायगी वाली रकमों के लिए मैं दस्तखत दे दिया करूँ ।

हेमन्त

सब काम आपने बण्डल कर दिया मुन्शी जी !

मुन्शी

हें, हें, हें ! जी, मैं तो आपका बच्चा हूँ !

**(इसी समय काले टेलीफ़ोन की घण्टी फिर से बजती है । हेमन्त रिसीवर उठा लेता है ।)**

हेमन्त

हैलो, मैं हेमन्त बोल रहा हूँ ।...आहा सदानन्द जी ! नमस्कार ! ... बहुत अच्छा हाल है । आपकी इनायत है ।...अभी-अभी हम लोग आप ही को याद कर रहे थे ।...ज़रूर आइए ।...अभी-अभी ।...मैं तो स्वयं आपको टेलीफ़ोन करने वाला था ।...बहुत लम्बी उम्र है आपकी...हः हः हः हः...मैं इन्तज़ार कर रहा हूँ ।

**(रिसीवर रख देता है)**

हेमन्त

इस बारे में कुछ सोचना होगा मुन्शी जी । इस सेठ के बच्चे को मैं ऐसा सबक दूँगा कि वह सारी उम्र याद रखेगा ।...देखिए, अभी· सदानन्द जी आ रहे हैं । ज़रा डायरी देखकर बताइए तो कि उनसे हमें क्या-क्या काम हैं ? ज़रा अपना रजिस्टर तो ले आइए यहां ।

मुन्शी

अभी लाया साहब।

**(अपनी मेज से एक बड़ा रजिस्टर लाकर हेमन्त के हाथ में देता है, हेमन्त क्षण भर रजिस्टर के पन्ने पलट-पलट कर उसे देखता है।)**

हेमन्त

सदानन्द का नाम तमाखू की किस जिन्स में आता है मुन्शीजी? तो पंजाब से लेकर केरल तक की सब जिन्सें देख गया, पर मुझे समझ नहीं आया कि सदानन्द का नाम किस जिन्स में होना चाहिए।

मुन्शी

जी, आपने यह एक बहुत बड़ी बात यह दी मालिक। सच बात तो यह है कि सदानन्द तो सारे देश में फैला हुआ है। यह कहना सचमुच कठिन है कि वह पंजाब का है या केरल का। हिन्दुस्तान के पूरब का है, या पश्चिम का। वह तो एक प्रतीक है।

हेमन्त

आप भी एक जीनियस हैं मुन्शीजी। मैं तम्बाकू की एक कम्पनी का मैनिजिंग डाइरैक्टर हूँ। इससे आपने इन बेईमान सरकारी अफ़सरों का हिसाब रखने के लिए उनका नाम ही "कच्चा तम्बाकू" रखकर यह रजिस्टर खोल दिया है। क्या खूब नाम रखा है आपने! हः हः हः। "कच्चा तम्बाकू"! ये हरामखोर, बेईमान सरकारी अफ़सर सचमुच कच्चे तम्बाकू हैं! हः हः हः!

मुन्शी

**(विनय के साथ)** जी, मैं तो आपका बच्चा हूँ।

हेमन्त

**(रजिस्टर देखते हुए)** यह बंगाली तम्बाकू नम्बर एक कौन है?

मुन्शी

बैनर्जी ।

हेमन्त

बंगाली तम्बाकू नम्बर दो ?

मुन्शी

साहा ।

हेमन्त

पंजाबी तम्बाकू नम्बर एक ?

मुन्शी

सीकरी ।

हेमन्त

ओह, यह सब याद रखना कितना कठिन है ! मुन्शी जी, परमात्मा न करे, पर अगर अचानक आपकी मौत हो जाए तो मैं तो यतीम हो जाऊँगा! उस पर भी आपका तकियाकलाम यह है कि "जी, मैं तो आपका बच्चा हूँ !" (**नकल करता है**)

मुन्शी

परमात्मा न करे कि आप या मैं दोनों में से कभी कोई 'यतीम' बने।

हेमन्त

(**हंसकर**) अच्छा तो बताइए मुन्शी जी, यह सदानन्द साहब तम्बाकू की किस जिन्स में हैं ?

मुन्शी

वह किस जिन्स के हैं, यह तो मुझे भी नहीं मालूम साहब। बात यह हुई कि 'सदानन्द' नाम ऐसा है, जिसके बारे में मुझे समझ नहीं आया कि वह किस राज्य का है। पंजाबी है कि बंगाली, गुजराती है कि आन्ध्र। कुछ भी पता नहीं चलता। यहां तक कि सदानन्द साहब को देखकर भी मैं जान

नहीं पाया कि भारत का कौन-सा प्रान्त उन्हें जन्म देकर धन्य हुआ है। इस कारण उनका नाम मैंने 'अखिल भारतीय तम्बाकू' की सूची में रखा है। उस अखिल भारतीय यानी समूचे हिन्दुस्तान की लिस्ट में देखिए, तम्बाकू नम्बर एक।

**(आगे बढ़कर रजिस्टर में नाम निकालने का प्रयत्न करता है। इसी समय दरवाज़े पर दस्तक सुनाई देती है।)**

*हेमन्त*

**(धीमे स्वर में)** आप रजिस्टर लेकर अपनी मेज पर चले जाइए। वहीं से इशारे कर मुझे बताते जाइएगा कि इस तम्बाकू से हमें कितने काम हैं। **(ज़रा ज़ोर से)** कृपया भीतर आ जाइए।

**(दरवाज़ा खुलता है। चपरासी एक किवाड़ पकड़ कर एक ओर खड़ा हो जाता है। उसके पीछे बन्द गले का सफ़ेद कोट और सफ़ेद पतलून पहने, नंगे सिर सदानन्द का प्रवेश। उन्हें देखकर सचमुच यह कहना कठिन है कि वह किस प्रदेश के हैं। मुन्शीजी आदर के साथ अपनी जगह खड़े हो जाते हैं और हेमन्त आगे बढ़कर सदानन्द का स्वागत करता है।)**

*हेमन्त*

नमस्ते साहब। इस वार तो बहुत दिनों के बाद आपके दर्शन हुए। उस दिन सांझ के बाद मैं आपके घर पर हाज़िर हुआ था। पर वहां मालूम हुआ कि आप अभी दफ़्तर ही से नहीं लौटे हैं।

*सदानन्द*

किस रोज़?

*हेमन्त*

इसी पिछले सोमवार को। अगर मैं गलती नहीं करता तो उस समय रात के ८ बजे थे और आप वापस नहीं आए थे। शायद उस दिन दफ़्तर में आपको बहुत देर तक बैठना पड़ा।

सदानन्द

यह भी खूब कहा आपने। भलेमानस, ८ बजे से पहले मैं दफ्तर से तभी उठता हूँ, जब कोई ज़रूरी काम हो, या कहीं किसी ज़रूरी पार्टी में जाना हो। नहीं तो रात के ८, ८॥ बजे तक दफ़्तर में बैठकर काम करना तो रोज़मर्रा की बात है। कभी-कभी तो १० बजे तक भी दफ़्तर से उठना नसीब नहीं होता।

**(बातें करते-करते दोनों सोफ़े पर जा बैठते हैं।)**

हेमन्त

आप क्या पीएँगे ?

सदानन्द

यह भी पूछने की बात है ? मैंने कभी अपना पेय बदला है ?

हेमन्त

माफ़ कीजिए। मेहमान से यह पूछने की कुछ आदत ही हो गई है। मुन्शी जी !

मुन्शी

हज़ूर।

हेमन्त

दो गिलासों में शुद्ध निर्मल जीवनामृत। एक में मेरे लिए ठण्डे पानी के साथ और दूसरे में साहब के लिए विशुद्ध रूप में, सिर्फ़ बर्फ़ के एक टुकड़े के साथ।

मुन्शी

बहुत जल्द हाज़िर हुआ साहब।

**(बाहर जाता है।)**

सदानन्द

यह आदत की बात भी आपने खूब कही। इस आदत और ऐसे रिवाजों

से मैं बहुत तंग आ गया हूँ हेमन्त जी। कभी-कभी तो इतनी झुंझलाहट पैदा होती है कि क्या बताऊँ। दफ़्तर में मिलने वालों का तांता लगा रहता है। लोगों को मालूम है कि मैं बहुत व्यस्त हूँ। फिर भी जो आएगा, वह शुरू-शुरू में इधर-उधर की कुछ रिवाजी बातें ज़रूर करेगा। आज सरदी बहुत है या इस साल अभी से बहुत गरमी पड़ने लगी है। आप किस पहाड़ पर जा रहे हैं? या फिर आपकी विदेश यात्रा कैसी रही? कोई और बात न मिले तो यही पूछने लगते हैं कि अमुक चलचित्र देखा है आपने? और मैं भी ऐसे सवालों का मुंहतोड़ जवाब देता हूँ। अब तो मेरा सहायक सबको बता देता है कि साहब से सीधा काम की बात करें। फिर भी कभी-कभी अजीब अहमकों से पाला पड़ता है।

*हेमन्त*

क्या बात कही है आपने साहब! सचमुच कभी-कभी अजीब अहमकों से पाला पड़ता है!

**(दोनों हंसने लगते हैं। इसी समय मुन्शीजी के पीछे चपरासी एक ट्रे में दो गिलास तथा कुछ नमकीन लिए जाता है। ट्रे में एक ओर कोकाकोला की खुली बोतल भी रखी है, जिसमें कागज़ की नलकी पड़ी हुई है। चपरासी सब कुछ बीच की टेबल पर सजा देता है।)**

*हेमन्त*

मुन्शीजी! **(कोकाकोला की बोतल मुन्शीजी की ओर बढ़ाकर)** हमारे मुन्शीजी का पेय भी कभी नहीं बदलता! (हंसी)

**(सदानन्द और हेमन्त गिलास हाथ में लेकर एक दूसरे को 'हार्दिक सद्भिलाषाएं, कहते हैं और धीरे-धीरे पीने लगते हैं।)**

*हेमन्त*

अभी आप रिवाजी बातचीत का ज़िक्र कर रहे थे न भाई साहब। शोपनहार का किस्सा सुना है न आपने?

सदानन्द

कौन शोपनहार ? मेरे पास तो वह कभी नहीं आया !

हेमन्त

बड़ा बदकिस्मत है बेचारा। जाने दीजिए। वह परमिटों की अहमीयत नहीं जानता होगा ! हमें भी सीधा काम की बात पर ही आना चाहिए।

सदानन्द

आपकी तम्बाकू कम्पनी वाले केस का क्या हुआ ? मैंने आपको तरीका तो बता दिया था।

हेमन्त

बात कुछ बनती नज़र नहीं आती।

सदानन्द

मैं कभी मान नहीं सकता। अगर राजीव खुद रेड्डी साहब से कह दे तो क्या मजाल कि कहीं कोई और जांच-पड़ताल हो। इस साले राजीव ने न जाने सब जगह कितना रौब गालिब कर रखा है।

हेमन्त

माफ़ कीजिए। राजीव साला नहीं है, बल्कि मैं उनका साला हूँ।

(दोनों हंसते हैं।)

सदानन्द

बहुत खूब मेरे यार। मगर मज़ाक की बात छोड़ो। यह बिल्कुल पक्की बात है कि अगर वह मिनिस्टर से कह दे कि वह व्यक्तिगत रूप से जानता है कि इस मामले में कम्पनी ने जानबूझ कर कोई अनुचित बात नहीं की, तो उतना ही काफ़ी है। अकेले राजीव की राय दस जांच कमीशनों से अधिक विश्वसनीय मानी जाती है। क्या तुम उसे अभी तक नहीं मिले ?

हेमन्त

मिला तो हूँ। वह भी आज ही। अब से कुछ ही समय पहले।

सदानन्द

तो फिर उससे क्या बातचीत हुई ?

हेमन्त

वह इस बारे में कहीं भी और कुछ भी कहने को तैयार नहीं है।

सदानन्द

मज़ाक छोड़ो भाई। यह कैसे सम्भव है ?

हेमन्त

नहीं साहब। मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हूँ।

सदानन्द

(**आश्चर्य से**) तब तो यह शख्स या तो देवता है और या दानव। खैर, वह चाहे जो कुछ हो, मतलब यह कि बात बनी नहीं।

हेमन्त

अब मैं राजीव के बारे में क्या कह सकता हूँ !

सदानन्द

भई, हम तो यह मानते हैं कि आज की दुनिया में जो आदमी दोस्तों का साथ नहीं दे सकता, वह सबसे बड़ा पाजी है।

हेमन्त

मेरा अनुभव तो यह है भाई साहब, कि आज की दुनिया में ईमानदारी का जीवन बिताया ही नहीं जा सकता।

सदानन्द

(**मुसकरा कर**) भई, कभी तुमने उस रास्ते पर चलकर भी देखा है ? बुरा न मानना। यों मैं भी तुम्हारी बात से पूरी तरह सहमत हूँ।

हेमन्त

मैं अब किसी बात से बुरा नही मानता। पर यह भी सच है कि जब मैंने अपना जीवन प्रारम्भ किया था, मैंने निश्चय किया था कि मैं कभी न

रिश्वत दूँगा और न कभी बेईमानी से रुपया बनाऊँगा।

सदानन्द

आश्चर्यजनक ! फिर बात क्या हुई ?

हेमन्त

दूसरे महायुद्ध के प्रारम्भ में मैं नया-नया विलायत से शिक्षा लेकर आया था। मैंने इमारती लकड़ी का व्यापार आरम्भ किया। जेहलम से मैंने दिल्ली के लिए मालगाड़ी के ३ डिब्बे बुक किए, जिनमें सैकड़ों शहतीर भरे गए। जब मैंने माल बुक करवाया तो माल बाबू ने पूरा किराया लेकर ५) रु० प्रति डिब्बे के हिसाब से १५) रु० दस्तूरी मुझसे मांगी। मैंने उससे पूछा–"भई, यह क्या चीज़ है ?" वह बोला––"हमारा हिस्सा।" मैंने दस्तूरी देने से इन्कार कर दिया। तब भी उसने कहा––"बहुत अच्छा। आपकी मर्ज़ी !"

माल बुक करवाकर मैं दिल्ली चला आया। पर तीन ही दिनों बाद वज़ीराबाद के स्टेशन मास्टर का एक तार मुझे मिला कि लड़ाई के लिए डिब्बों की ज़रूरत थी इस कारण तुम्हारा माल यहीं उतार दिया गया है। रेलवे की ज़िम्मेदारी नहीं होगी। माल संभाल लो। यह तार पाकर मेरे तो होश उड़गए। उतनी लकड़ी खरीदने में मैंने अपनी सारी पूंजी लगा दी थी।

सदानन्द

तो फिर तुमने क्या किया ?

हेमन्त

उसी समय मैं हवाई जहाज़ से लाहौर पहुँचा और वहाँ से टैक्सी लेकर रात के १२ बजे वज़ीराबाद स्टेशन पर पहुँचा। वहां जाकर बड़ी कठिनता से पता चला कि मेरा माल स्टेशन से आध मील दूर एक साईडिंग पर उतारा गया है। स्टेशन के सब कुली जमाकर मैंने वे शहतीर तरतीब से लगवाए और उनपर पहरा बैठाया। रेलवे वाले किसी काम में मदद देने को तैयार

नहीं थे।

सदानन्द

इस सब काम में तो बहुत खर्च हुआ होगा ?

हेमन्त

१५ की जगह पूरे १५०० साहब ! उस पर इतनी तकलीफ़ और चिन्ता ! तभी मैं इन परिणाम पर पहुँच गया कि आज की दुनिया में ईमानदारी से गुज़ारा हो ही नहीं सकता।

सदानन्द

चलो, जाने दो। अब तो यार तुम उस सबकी पूरी कसर निकाल चुके हो। यह सब उन्हीं १५०० की ही बरकत है मीयां !

हेमन्त

यह भी आप ठीक कह रहे हैं साहब।

सदानन्द

अच्छा भाई, मैं तुम्हारी तम्बाकू कम्पनी के बारे में कोई और इलाज सोचूंगा। घबराने की कोई बात नहीं है। मैं आज तो किसी और काम से आया था। मेरे हाथ में कुछ और कीमती परमिट और लाइसेंस हैं। बड़े मुनाफ़े का सौदा है। कम से कम ३ लाख की बचत है।

हेमन्त

कितना हिस्सा चाहते है आप ?

सदानन्द

एक लाख।

हेमन्त

आज किसके पास एक लाख रुपया नकद होगा साहब। सरकार ने सब पैसा चूस लिया है। उस पर इतनी बड़ी रकम का भुगतान आसान नहीं होगा। पुलिस भी अब बहुत चौकन्नी हो गई है। और सच बात तो यह है

कि पिछले दिनों ये जो पढ़े-लिखे नए नौजवान एस० पी० आए हैं, इनसे तो मैं बहुत डरता हूँ। न जाने किसने इन पुलिस वालों को भी आदर्शवादी बना दिया है!

सदानन्द

अपना लेक्चर छोड़ो हेमन्त। यह बताओ तुम कितने का इन्तज़ाम कर सकोगे?

हेमन्त

५० हज़ार खरा। मैं इससे ज्यादा के लिए भी पूरी कोशिश करूँगा। और जो कुछ मिलेगा, आप ही का होगा। कौन हरामी अपने दोस्त का पैसा खाएगा!

सदानन्द

बहुत ठीक। मगर कल ही इन्तज़ाम हो जाना चाहिए। सब काम नकद होगा। बाज़ार में चालू खुदरा नोटों में।

हेमन्त

बहुत ठीक साहब। कल ही लीजिए।

सदानन्द

अब अपनी तरफ़ के हालचाल बताओ।

हेमन्त

आपकी कृपा है। अपने निजी सहायक रूप में आपको एक लड़की की ज़रूरत थी न?

सदानन्द

मैंने तुमसे शायद कहा तो था।

हेमन्त

कल ही एक बहुत सुन्दर, समझदार और पढ़ी-लिखी लड़की आपके पास मेरा खत लेकर पहुँचेगी।

सदानन्द

(**मुसकरा कर**) मगर किसी जगह कोई धोखे की बात तो नहीं है न हेमन्त। मेरे सहायक को मेरे सब रहस्य मालूम हो जाते हैं।

हेमन्त

आप बेफ़िक्र रहें साहब।

सदानन्द

वह लड़की कहाँ की है?

हेमन्त

पंजाब की।

सदानन्द

ना बाबा। इन पंजाबी लड़कियों से मैं बहुत डरता हूँ। ये तो खड़े-खड़े मर्दों को बेच आएँ!

हेमन्त

यह लड़की 'बेचने वालियों' में नहीं है साहब! आप देखिएगा तो।

सदानन्द

सच पूछो तो ये लड़कियाँ सब की सब निकम्मी होती हैं। मर्दों के मुकाबले में आधा काम भी नहीं कर पातीं। मेरा बस चले तो दफ़्तर में किसी लड़की को पैर तक न रखने दूँ।

हेमन्त

पर इन लड़कियों के बिना काम भी तो नहीं चलता।

सदानन्द

यह बिल्कुल ठीक कहा तुमने। अच्छा भाई, कल उसे भेज देना।

**(एकाएक उठकर खड़ा हो जाता है।)**

मुझे अब घर भी जाना चाहिए। दफ़्तर से सीधा तुम्हारे यहाँ ही चला आया था।

**(एकाएक मुन्शी नज़दीक चला आता है और बार-बार हेमन्त को तीन उंगलियाँ दिखाने का प्रयत्न करता है।)**

हेमन्त

क्या बात है मुन्शी जी ?

मुन्शी

जी ! (**फ़ाइल हाथ में लिए हुए**) जी, हिन्दुस्तानी तम्बाकू नम्बर एक की तीन गाँठों का हिसाब नहीं मिल रहा !

हेमन्त

अभी छोड़ो इस किस्से को मुन्शी जी। कल मुझे याद दिलाना।

सदानन्द

यह 'हिन्दुस्तानी तम्बाकू नम्बर एक' कौन-सा तम्बाकू होता है मुन्शी जी ? कभी हमें भी उसका स्वाद चखाओ !

**(हेमन्त और मुन्शी दोनों हंस पड़ते हैं।)**

हेमन्त

यह तो कच्चे तम्बाकू की किस्में हैं साहब। कोई भलामानस तो उनके नज़दीक भी न जाएगा !

**(हेमन्त हंसता है। सदानन्द भी उसकी हंसी में साथ देता है।)**

**(सदानन्द का प्रणाम कर प्रस्थान। हेमन्त दरवाजे तक उसे छोड़ने जाता है। दरवाज़ा बन्द कर हेमन्त जब वापस लौटता है, तो वह दोनों हाथ मल रहा है और बहुत प्रसन्न दिखाई दे रहा है।)**

हेमन्त

मुन्शी जी !

मुन्शी

जी हज़ूर !

हेमन्त

आज हम बहुत खुश हैं !

मुन्शी

सेठ रामकिशोर को टेलीफ़ोन करूँ जी ?

हेमन्त

आप तो जीनियस हैं मुन्शी जी।

मुन्शी

जी, मैं तो आपका बच्चा हूँ !

**(मुन्शी सेठ रामकिशोर से टेलीफ़ोन मिलाता है। क्षण भर की प्रतीक्षा के बाद)**

मुन्शी

जी, मैं देवराज मुन्शी।...हां, हां आप साहब से बात कीजिए।...नहीं जी, नाराज-वाराज कुछ नहीं।...साहब को इन दिनों सचमुच काम बहुत ज्यादा है।...लीजिए।

**(टेलीफ़ोन का रिसीवर हेमन्त के हाथ में दे देता है।)**

हेमन्त

हैलो सेठ ! दिमाग तो दुरुस्त है न ?...आप तो सारी दुनिया को अपनी ही तरह बेईमान समझते हैं।...नहीं मैं नाराज़ तो नहीं हूँ, पर आपसे मुझे यह उम्मीद नहीं थी।...आप तो यह समझे कि जैसे फिर कभी आपको मुझसे काम ही नहीं पड़ेगा।...काम की बात ? अच्छा देखिए, इतने प्रिफरेन्शल शेयर्स मेरे पास इसी वक्त मौजूद हैं, जिनसे आपको ३ लाख का फ़ायदा है।...हाँ, हाँ, पूरी तरह पक्के मोहरबन्द। कभी मेरी ऑफ़र भी गलत हुई है ?...माल लेते ही डेढ़ लाख हमें देना होगा।...फिर वही सौदाबाजी !...मैं जानता हूँ आपकी यह बहानेबाजी !...हां, वह तो ठीक है।...अच्छा तब ऐसा कीजिए कि एक लाख पूरा नकद और

बीस हजार के पावने की पक्की रसीद।...हाँ, हाँ अभी आप मुझसे २०,००० माँग रहे थे न ? उसी की रसीद।...आप लोग भी खूब उस्ताद हैं।...नहीं, नहीं माफ़ी मांगने की ज़रूरत नहीं है।...अच्छा, चलिए आप भी क्या याद करेंगे। माफ़ कर दिया आपको।...मैं खूब जानता हूँ कि आप किस तरह के सेवक हैं।...बहुत ठीक। तो कल २० हजार की वसूली की रसीद और एक लाख नकद ! बहुत अच्छा। नमस्ते।

(रिसीवर रखकर)

मुन्शी जी !

मुन्शी

जी हजूर।

हेमन्त

हाथ मिलाइए !

(दोनों मुस्कराते हुए हाथ मिलाते हैं।)

(परदा गिरता है।)

**प्रथम अंक समाप्त**

# तीन महीनों के बाद

# दूसरा अंक

**स्थान**--*सदानन्द का दफ़्तर*

**समय**--*साँझ*

(सदानन्द का कमरा बड़े साहबों के कमरे की तरह सजा है। कमरे में कालीन पर तिरछे रूप में एक बड़ी मेज़ पड़ी है, जिसके सामने तीन कुर्सियां रक्खी हैं। पीछे की दीवार पर एक घड़ी लटक रही है। कमरे में २, ३ चित्र हैं, जो स्पष्टत: विभिन्न रुचि के हैं। उन्हें देखकर सदानन्द की रुचि के सम्बन्ध में कोई भी धारणा नहीं बनाई जा सकती। दूसरे किनारे कुछ बड़े रैक रक्खे हैं, और उन्हीं के साथ एक ओर एक रेडियोग्राम पड़ा है। सदानन्द बन्द गले का सफ़ेद खद्दर का कोट पहने हुए है। जब पर्दा उठता है तो वह घण्टी का बटन दबाते हुए दिखाई देता है। घण्टी की तेज़ आवाज़ दूर तक सुनाई दे रही है, फिर भी सदानन्द चिल्लाए जा रहा है।)

*सदानन्द*

चपरासी! चपरासी!

**(क्षण भर बाद चपरासी दरवाज़ा खोलकर भीतर आता है ।)**

चपरासी

**(सलाम बजाकर)** हुज़ूर !

सदानन्द

देखो, बाबू लोग गया ?

चपरासी

जी जनाब ! पांच बज गया और बाबू लोग गया ।

सदानन्द

ठीक ! देखो, अब किसीको मेरे कमरे में मत आने देना ।

चपरासी

**(सिर झुकाकर)** जो हुक्म सरकार ।

सदानन्द

जिसको भीतर भेजना होगा, वह मिस कमला से मिलेगा । तुम किसीका कार्ड भी सीधा मेरे पास मत लाना ।

चपरासी

बहुत अच्छा हजूर ।

सदानन्द

अच्छा, अब जाओ ।

**(चपरासी खड़ा रहता है ।)**

सदानन्द

क्यों जाते क्यों नहीं ? क्या बात है ?

चपरासी

साहब, एक नौजवान सुबह से यहां इन्तज़ार कर रहा है ।

सदानन्द

मुझे मालूम है । उसको बोला था न कि वह मेरे सहायक से मिले ?

चपरासी

बोला था हज़ूर।

सदानन्द

तो फिर?

चपरासी

वह तीन डिपुटियों और चार सैक्शन अफ़सरों से मिल चुका है। मगर वह कहता है कि आप से मिलना ज़रूरी है।

सदानन्द

**(झुंझलाकर)** ज़रूरी है! वह कौन होता है 'ज़रूरी' शब्द का इस्तेमाल करने वाला!

**(चपरासी सिर झुकाकर चुपचाप खड़ा रहता है।)**

सदानन्द

अच्छा, उसे भीतर बुलाओ।

चपरासी

बहुत अच्छा हज़ूर।

(चपरासी बाहर चला जाता है। सदानन्द कोई फ़ाइल उठाकर देखने लगता है। इसी समय सूट पहने और टाई लगाए एक युवक का प्रवेश। युवक आदरपूर्वक सदानन्द को प्रणाम करता है। उत्तर में सदानन्द अपना सिर ज़रा-सा हिला भर देता है।)

सदानन्द

आप क्या चाहते हैं?

युवक

**(खड़े रहकर)** आपके सचिवालय से मुझे एक नियुक्ति पत्र गया था।

उसमें लिखा था कि यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन द्वारा मैं चुना गया हूँ और मुझे एक सप्ताह के भीतर अपनी नई पोस्ट ले लेनी चाहिए। यह सिर्फ़ चार दिन पहले की बात है।

सदानन्द

(झुंझलाकर) तुम मेरे पास क्यों आए हो ?

युवक

यही तो निवेदन कर रहा हूँ साहब ! कल ही मेरे पास आपके सचिवालय से एक और पत्र आया, जिसमें लिखा था कि पिछला नियुक्ति-पत्र रद्द समझा जाए और मैं अगले पत्र की प्रतीक्षा करूँ।

सदानन्द

तो इसमें बुराई क्या है ! अगले पत्र की प्रतीक्षा करो !

युवक

पर मैं तो कमीशन द्वारा चुना गया हूँ न ?

सदानन्द

(झुँझलाकर) मुझे क्या मालूम कि तुम कौन हो और किसके द्वारा चुने गए हो !

युवक

यही सब तो मैं बता रहा हूँ साहब! आप ही के सचिवालय के इस पत्र के अनुसार मैं कमीशन द्वारा चुना गया हूँ।

सदानन्द

तो यह सब पचड़ा मुझे क्यों सुना रहे हो ? मेरे किसी डिपुटी या सैक्शन आफ़ीसर के पास क्यों नहीं जाते ?

युवक

आज सुबह से यही काम कर रहा हूँ साहब। घण्टों तक इन्तज़ार करवाने के बाद भी सब जगह यही जवाब मिला कि बड़े साहब के पास जाओ।

इस बारे में और कोई कुछ नहीं कर सकता। तभी लाचार होकर मैं आपके पास आया हूँ।

सदानन्द

क्या नाम है तुम्हारा ?

युवक

जुगलकिशोर।

सदानन्द

पोस्ट कौन-सी है ?

युवक

परचेज़ आफ़ीसर !

सदानन्द

अच्छा, कुछ याद तो पड़ता है। यह तो प्रथम श्रेणी की गज़ेटिड पोस्ट है न ?

युवक

जी हां।

सदानन्द

अच्छा, आप बाहर इन्तजार कीजिए। मैं अभी इस बारे में पूछताछ करता हूँ।

**(युवक बाहर चला जाता है और चपरासी ठीक तरह दरवाज़ा बन्द कर देता है। सदानन्द भीतरका टैलीफ़ोन उठाकर बातचीत करने लगता है।)**

हां, सुनिए, इस लड़के को मेरे पास क्यों भेज दिया ?...क्या फ़िज़ूल बात है ! आपको खुद निबटा लेना चाहिए था !...कमीशन से चुना गया है ?...ठीक है।...क्या कहते हो मैंने ही कहा था !...अच्छा अच्छा, ठीक है। मुझे याद आया, यह पोस्ट विजय राघव को मिलनी चाहिए।...विजय राघव को तार दे दिया गया है न ?...कब आ रहा है ?...परसों ?...

कमीशन को क्या लिखोगे? ...ड्राफ़्ट बना लिया गया है? ...हूं...हूं...अच्छा, कोशिश कर लेनी चाहिए।...कल ड्राफ़्ट ज़रूर चले जाना चाहिए।... इसे १० दिनों के लिए टाल दो न ! ...नहीं मानता ?...बहुत अच्छा, मैं ही इस लड़के से निबटता हूँ।...अच्छा।

**(रिसीवर रख देता है। क्षण भर चुपचाप बैठा रहता है। फिर घण्टी बजाता है। चपरासी का प्रवेश और सिर झुकाकर खड़े हो जाना।)**

*सदानन्द*

नौजवान को भेजो।

*चपरासी*

बहुत अच्छा हज़ूर।

**(क्षण भर में जुगलकिशोर का प्रवेश। सदानन्द अब के भी उसे बैठने को नहीं कहता। वह खड़ा ही रहता है।)**

*सदानन्द*

देखो भाई, मैंने उस बारे में पूछ लिया है। तुम्हें अभी कम से कम १० दिन और इन्तज़ार करना होगा।

*जुगलकिशोर*

दस दिन के बाद तो निश्चित है न कि मुझे यहां बुला लिया जाएगा ?

*सदानन्द*

आजकल तुम क्या काम कर रहे हो ?

*जुगलकिशोर*

म यहां एक बड़े कारखाने का सहायक मैनेजर था।

*सदानन्द*

'था' का क्या मतलब ?

*जुगलकिशोर*

जब मुझे आप का पत्र मिला तो मैंने जनरल मैनेजर से अनुरोध किया

कि मेरा त्यागपत्र स्वीकार कर लिया जाए। वह बहुत सज्जन व्यक्ति हैं। मेरा ३ दिन का नोटिस ही उन्होंने स्वीकार कर लिया। यह तो उन्हें बहुत दिनों से मालूम था कि मुझे यह पोस्ट मिलने वाली है।

सदानन्द

ऐसी जल्दबाज़ी कभी अच्छी नहीं होती। अभी नौजवान हो न। मेरी यह बात गांठ बांध लो कि कभी जल्दबाज़ी से काम न लो। तुम्हारी उम्र क्या है?

जुगलकिशोर

२७ वर्ष।

सदानन्द

विवाह किया या नहीं?

जुगलकिशोर

अभी नहीं श्रीमन।

सदानन्द

तब फिर तुम्हें किस बात की फ़िक्र है?

जुगलकिशोर

मैं आपके पास न्याय की मांग करने आया हूँ श्रीमन। मुझे मालूम हुआ है कि यहां इसी पोस्ट के लिए किसी ऐसे व्यक्ति को बुलाया जा रहा है, जिसे कमीशन ने नहीं चुना था। बल्कि वह कमीशन के सामने गया तक भी नहीं था।

**(खिज कर)** चण्डूखाने की ये गप्पें सुनने के लिए मेरे पास समय नहीं है। अब तुम जा सकते हो।...चपरासी!

**(क्षण भर रुक कर युवक दरवाज़े की ओर बढ़ता है, जिसे चपरासी ने खोल दिया है। युवक के बाहर जाते ही दरवाज़ा बन्द हो जाता है और सदानन्द क्रोध के साथ उधर ही देखता रहता है।)**

*सदानन्द*

गुस्ताख़ कहीं का !

**(सदानन्द फिर से एक फ़ाइल देखने लगता है कि टेलीफ़ोन की घण्टी बजती है। सदानन्द रिसीवर उठाकर बातें करने लगता है ।)**

मैं हूँ सदानन्द।...(**विनय से**) नमस्कार हज़ूर !...जी, काम में व्यस्त हूँ। फरमाइए।...कहें तो मैं अभी हाज़िर हो जाऊं।...जी एक नौज-वान ?...जी, वह लम्बे कद का चुस्त युवक?...जी वह आया तो था।... मुझे कुछ भी मालूम नहीं।...ज़रूर...ज़रूर ! कमीशन ने उसे चुना था उसे कौन रोक सकता है हज़ूर ? वहुत अच्छा।...आज ही वह ज़रूर ले लिया गया होगा। मैं मालूम करके सूचना दूंगा।...आप बेफ़िक्र रहें हज़ूर !...नमस्कार।

**(बड़ी घबराहट के साथ एक ओर घण्टी बजाता है और दूसरी ओर पुकारता है।)**

*सदानन्द*

चपरासी ! चपरासी !!

(**चपरासी** आता है।)

*चपरासी*

जी हज़ूर !

*सदानन्द*

वह नौजवान कहां है?

*चपरासी*

कौन-सा नौजवान जनाब ?

*सदानन्द*

कौन-सा के बच्चे ! वही, जो अभी-अभी यहां से गया है।

चपरासी

वह लिफ़्ट से चला गया हज़ूर !

सदानन्द

दौड़कर उसे बुला लाओ। मेरा मुंह क्या देख रहे हो !

**(चपरासी शीघ्रता से बाहर जाता है और सदानन्द एक कागज़ पर कुछ लिखने लगता है। मिनट भर में चपरासी दरवाज़ा खोलता है और जुगलकिशोर भीतर जाता है। वह बहुत गम्भीर दिखाई दे रहा है।)**

सदानन्द

आओ भाई। बैठो ! इस सामने की कुर्सी पर।

**(जुगलकिशोर खड़ा रहता है।)**

सदानन्द

**(मुसकरा कर)** तुमने यह पहले क्यों नहीं बताया कि तुम श्री वैंकटाचारी के आदमी हो !

जुगलकिशोर

मैं उनका आदमी हूँ या नहीं, यह तो मुझे भी नहीं मालूम। पर उनकी मुझ पर कृपा ज़रूर है।

सदानन्द

भलेमानस, तो पहले यह क्यों नहीं बताया ?

जुगलकिशोर

मैं आपकी बात समझा नहीं साहब।

सदानन्द

मैं कहता हूँ कि तुमने सबसे पहले यह क्यों नहीं बताया कि तुम श्री वैंकटाचारी के आदमी हो ?

जुगलकिशोर

मुझे कहां मालूम था कि मेरे या मेरे पिता जी के कृपालुओं में से

किस-किस के नाम में "खुल जा सिमसिम" वाली शक्ति है !

सदानन्द

आज की दुनिया में इसी बात का ज्ञान सबसे अधिक महत्वपूर्ण है भले मानस। मेरी यह बात तुम गांठ बांध लो। मैंने कहा तो, इस कुर्सी पर बैठ जाओ।

जुगलकिशोर

धन्यवाद।

(बैठ जाता है)

सदानन्द

रामनाम की महिमा सुनी है न तुमने ? इस कलि काल में वह शक्ति परमात्मा के नाम में तो नहीं रही, पर वह परमात्मा के बनाए मनुष्यों के नामों में आ गई है। बस, इस बात का ज्ञान रखना ज़रूरी है कि किस मौके पर कौन-सा नाम अमोघ सिद्ध होता है। **(कह कर ऊंचे स्वर से हंसता है। जुगलकिशोर इस हंसी में साथ नहीं देता।)** चपरासी कहता था कि तुम लिफ़्ट से चले गए हो। फिर इतना जल्दी कैसे लौट आए ?

जुगलकिशोर

लिफ़्ट पहले ऊपर की मंज़िल पर जा रहा था। वहां से जब वह इस मंज़िल तक वापस आया तो चपरासी ने उसे रोक कर आपका सन्देश मुझे दिया।

सदानन्द

तुम सचमुच सौभाग्यशाली हो। अगर लिफ़्ट तुम्हें ऊपर की जगह नीचे की ओर ले गया होता, तो शायद तुम सदा के लिए नीचे चले गए होते ! तुम्हारी किस्मत का तब कुछ और ही फैसला हो जाता।

जुगलकिशोर

आप ही लोग हम नौजवानों की किस्मत को बनाने या बिगाड़ने वाले हैं।

सदानन्द

मगर हम लोग भी किसी और के हाथ की कठपुतली की तरह हैं। चलो, आज ही से तुम्हारी नियुक्ति हो गई।

जुगलकिशोर

(**प्रसन्न होकर**) आज ही से? पर इस समय तो आपका दफ़्तर भी बन्द हो गया है।

सदानन्द

कोई फ़िक्र नहीं। अभी मैं एक चिट्ठी तुम्हें दूँगा। मेरे डिपुटी के पास जाना। वह आज ही से तुम्हारी नियुक्ति का आज्ञापत्र तुम्हें दे देंगे।

जुगलकिशोर

धन्यवाद।

(**सदानन्द भीतर के टेलीफ़ोन का बटन दबा कर बात करने लगता है।**)

कमला, थोड़ी देर के लिए यहाँ चली आओ।...नहीं, उसकी ज़रूरत नहीं है।...अभी।

(**जुगलकिशोर से**)

तुमने किस साल एम० ए० पास किया था?

जुगलकिशोर

करीब छः साल हो गए।

सदानन्द

किस विश्वविद्यालय से?

जुगलकिशोर

अलाहाबाद विश्वविद्यालय से।

सदानन्द

मेरा ख्याल है कि तुम्हारे उत्तर भारत के सभी विश्वविद्यालयों में केवल अलाहाबाद विश्वविद्यालय ही किसी काम का है। बाकी सब तो एक

दम कूड़ा-कचरा है !

**(इसी समय कमला का प्रवेश। वह हल्के आस्मानी रंग की पोशाक पहने हुए है। वेशभूषा में सादगी रहते भी वह प्रथम अंक की अपेक्षा भी अधिक सुन्दर दिखाई दे रही है।)**

सदानन्द

आओ कमला, मैं इस युवक से तुम्हारा परिचय करवाऊँ। यह है जुगलकिशोर। आज ही परचेज़ आफ़ीसर के पद पर इनकी नियुक्ति हो रही है। **(जुगलकिशोर से)** और यह हैं मेरी व्यक्तिगत सहायक कुमारी कमला।

**(दोनों एक दूसरे को प्रणाम करते हैं।)**

सदानन्द

**(कमला से)** कमला, जुगलकिशोर की आज ही से नियुक्ति के सम्बन्ध में तुम्हें जो चिट्ठी टाइप करनी है, वह मैंने इस कागज़ पर नोट कर दी है। यह चिट्ठी टाइप कर इन्हें अपने साथ लेकर तुम्हें डिपुटी साहब के पास जाना होगा।

कमला

अवश्य।

**(सदानन्द के हाथ से क़ागज़ लेकर देखने लगती है। इसी समय आन्तरिक टलीफ़ोन की घण्टी बजती है। सदानन्द रिसीवर उठाकर बातचीत करने लगता है।)**

सदानन्द

जी हां। बहुत व्यस्त तो नहीं !...इसी वक़्त !...ज़रूर, ज़रूर!... मैं अभी आया !

**(कमला से)** मुझे कुछ मिनटों के लिए चीफ़ सैक्रेटरी साहब के पास जाना है। मैं अभी वापस आया। **(प्रस्थान)**

(कमला क्षण भर कागज़ की ओर देखती रहती है। उसके

बाद जुगलकिशोर की ओर देखे बिना, बड़ी मेज़ के पास एक तिपाई पर रक्खे टाइप राइटर के पास जा बैठती है और चिट्ठी टाइप करना प्रारम्भ करती है। जुगलकिशोर अपनी जगह चुप-चाप बैठा रहता है। टाइप करना प्रारम्भ करने के कुछ ही देर बाद कमला रुक जाती है और जुगलकिशोर से पूछती है )

कमला

क्षमा कीजिए, आपका नाम जुगलकिशोर है या युगलकिशोर ?

जुगलकिशोर

जी जुगलकिशोर। जे-यू-जी-ए-एल।

कमला

धन्यवाद। हिज्जे मैंने आपसे नहीं पूछे थे।

जुगलकिशोर

माफ़ कीजिए कमला जी। मैंने आपको कहीं देखा है।

कमला

किसी बस स्टैण्ड पर बस की इन्तज़ार करते हुए देखा होगा।

जुगलकिशोर

उसकी सम्भावना इसलिए कम है जिस वक़्त आप नई दिल्ली में बसों का इन्तज़ार कर रही होती होंगी, उस वक़्त मैं पुरानी दिल्ली में ठीक यही काम कर रहा होता हूँ।

कमला

तो आप पुरानी दिल्ली में रहते हैं ?

जुगलकिशोर

तर्कशास्त्र में आप बहुत प्रवीण मालूम होती हैं। मेरा ख्याल था कि स्त्रियां रैशनल नहीं होतीं।

कमला

(**मुसकरा कर**) यह आपका अपना अनुभव है या सुनी-सुनाई बात है ?

जुगलकिशोर

जी नहीं। किताबों में पढ़ा है। गुस्ताखी माफ़ हो, आप कबसे यहां काम कर रही हैं ?

कमला

करीब ३ महीने से।

(**वह अपना काम भी किए जा रही हैं।**)

जुगलकिशोर

श्री सदानन्द अभी-अभी मुझसे कह रहे थे कि मैं बहुत खुशकिस्मत हूँ। पर वास्तव में वह स्वयं बहुत अधिक भाग्यशाली हैं।

कमला

वह क्यों ?

जुगलकिशोर

क्योंकि उन्हें आप-सा व्यक्तिगत सहायक मिला हुआ है।

कमला

आप श्री सदानन्द को नहीं जानते। मैं तो उन्हें मनुष्य नहीं, देवता मानती हूँ।

जुगलकिशोर

मैं जब यहां आया था, तब मैंने उनके बारे में कुछ अजीब तरह की धारणा बनाई थी। पर बाद में मेरी वह धारणा स्वयं ही बदल गई।

कमला

पहली धारणा किस कारण बनाई थी ?

जुगलकिशोर

आज सारा दिन मैं इस दफ़्तर में दर-ब-दर भटकता फिरा, पर किसी

ने मेरी रत्ती भर भी परवाह नहीं की। जब बड़ी साधना के बाद मैं बड़े साहब के पास आया, तो इन्होंने भी धत्ता बता दिया। मुझे अनुभव हो रहा था कि मेरा न्यायपूर्ण अधिकार मुझसे छीना जा रहा है। मैं निराश होकर यहाँ से चल भी दिया था।

*कमला*

फिर ?

*जुगलकिशोर*

बस, बड़े साहब के शब्दों में फिर यही कि एकाएक मेरी किस्मत चमक गई !

*कमला*

तो आप भी किस्मत में विश्वास करते हैं ?

*जुगलकिशोर*

इस बदकिस्मत मुल्क में नीचे से ऊपर तक अपन पर भरोसा शायद ही किसी को हो। यहां अधिकांश लोग किस्मत पर भरोसा रख कर ही जी रहे हैं।

*कमला*

किस्मत पर तो मेरा भी विश्वास है। बल्कि मेरा तो अनुभव है।

*जुगलकिशोर*

आपका अनुभव ? वह क्या ?

*कमला*

**(अनुभतिपूर्ण स्वर में)** पिछले १० बरसों में मैंने जो कुछ देखा है, वह शायद एक पूरे जीवन के दुखों से भी बहुत अधिक है। मेरी ज़िन्दगी के पहले १३ बरस बहुत सुख से बीते थे। उसके बाद एक दिन हमारे सुखी परिवार पर एकाएक वज्रपात हो गया। हमारे घर पर आक्रमण हुआ। मुझे बांधकर एक ओर डाल दिया गया और मेरी आंखों के सामने पहले मेरे पिता जी की और बाद में मेरी माता जी की निर्मम हत्या की गई। **(कांप**

**उठती है)** उस दिन से बहुत समय तक मैं जैसे जीते-जागते भी बेहोश रही। मुझे सब भूल गया है कि उन दिनों मुझे कहां-कहां ले जाया गया और मुझे किन-किन तकलीफ़ों में से गुज़रना पड़ा। वह जैसे एक कभी समाप्त न होने वाला बहुत लम्बा दुःस्वप्न था। **(कण्ठावरोध हो जाता है।)**

*जुगलकिशोर*

जाने दो उन बातों को। अब तो सब कुछ ठीक है न ?

*कमला*

मुझे ऐसे हमदर्द भी बहुत कम मिले हैं, जो मेरी करुण कहानी को सहानुभूति से सुनें। मुझे खेद है कि अनायास ही मैंने आपके सामने एक भयंकर चित्र खींचने का प्रयास किया।

*जुगलकिशोर*

मेरी आपसे पूरी सहानुभूति है। आप तैयार हों तो मैं घण्टों तक बैठकर आपकी जीवन गाथा सुनूँगा। अब तो वे कष्ट भूतकाल की स्मृति बन गए हैं न ?

*कमला*

भारत में आकर भी मैंने कम कष्ट नहीं उठाए। पर अब वह सब भूतकाल की स्मृति बन गया है। उधर मेरा ध्यान भी जाता है तो मैं सिहर उठती हूँ। पर कभी-कभी मैं सोचती हूँ कि श्री सदानन्द की कृपा मुझपर न हुई होती, तो मेरा क्या होता !

*जुगलकिशोर*

आप योग्य थीं, इससे आप चुनी गईं।

*कमला*

यह योग्यता अयोग्यता का सवाल नहीं है। श्री सदानन्द ने सिर्फ मुझे यह अच्छी नौकरी ही नहीं दी, उन्होंने जैसे मेरी सभी समस्याएं हल कर दी हैं। इन्हीं की कृपा से मुझे अच्छा मकान मिल गया है। इन्हीं की कृपा

से मुझ में फिर से कुछ ग्रात्मविश्वास जागने लगा है। मेरा रोम-रोम उनका ग्रनुग्रहीत है।

**(कमला के अनजाने में धीरे-धीरे दरवाज़ा खुलता है। हेमन्त के साथ सदानन्द का प्रवेश।)**

सदानन्द

**(मुसकरा कर)** तुम्हारा रोम-रोम किसका ग्रनुगृहीत है कमला ?

**(कमला जवाब नहीं देती। वह और जुगलकिशोर दोनों ग्रपनी-ग्रपनी जगह खड़े हो जाते हैं। नमस्कार प्रति-नमस्कार होता है।)**

हेमन्त

क्या हाल है कमला बहन ?

कमला

ग्रापकी कृपा है।

सदानन्द

चिट्ठी तो टाइप हो गई होगी। उस पर मेरे दस्तखत करवा लो ग्रौर तुम इन्हें **(जुगलकिशोर की ग्रोर इशारा कर)** डिपुटी के पास ले जाग्रो।

कमला

ग्रवश्य।

**(सदानन्द टाइप किए हुए पत्र पर हस्ताक्षर करता है ग्रौर कमला वह पत्र लेकर दरवाजे की ग्रोर बढ़ती है। जुगलकिशोर उसके पीछे जाता है।)**

सदानन्द

इस तरह बिना टेलीफ़ोन किए क्यों चले ग्राए भाई हेमन्त ? तुम्हारा चेहरा देखकर मैं कह सकता हूँ कि ग्रवश्य ही कोई बहुत ज़रूरी काम तुम्हें यहां खींच लाया है।

हेमन्त

ऐसी बात तो नहीं है साहब। पर थोड़ा-बहुत काम तो रहता ही है।

और काम पड़ने पर हमें काबा की और दौड़ना भी पड़ता है। मशहूर है न, मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक।

(मुसकराने का प्रयत्न करता है।)

सदानन्द

अच्छा भाई, बैठो तो सही।

(दोनों बैठते हैं।)

हेमन्त

यह कमला तो पहले से भी अधिक सुन्दर दिखाई देने लगी है।

सदानन्द

उसके व्यक्तित्व को उभरने का मौका जो मिल रहा है।

हेमन्त

मुझे खुशी है कि वह आपके साथ रहकर इतनी प्रसन्न है।

सदानन्द

किसी तरह की ग़लतफ़हमी में न पड़ो भाई हेमन्त।

हेमन्त

ग़लतफ़हमी! वह भी आपके सम्बन्ध में?

सदानन्द

मेरे सम्बन्ध में तो शायद तुम्हें ग़लतफ़हमी कभी न हो। पर इस बेचारी लड़की के सम्बन्ध में तुम्हें ग़ल्त-फ़हमी ज़रूर हो सकती है।

हेमन्त

मैं इन शरणार्थी लड़कियों को खूब समझता हूँ साहब। अपना काम निकालने में ये खूब होशियार होती हैं।

सदानन्द

तुम खाक भी नहीं समझते हेमन्त। नारी चरित्र को समझना बड़ा कठिन है: "दैवो न जानाति कुतो मनुष्यः?" और फिर सबको एक ही

लाठी से हाँकना तो शायद भेड़ों तक ही चल सकता है।

हेमन्त

गुस्ताखी माफ़ हो। मालूम होता है, यहाँ मामला कुछ अधिक गहरा हो गया है।

सदानन्द

इस लड़की का मामला तो सचमुच बहुत गहरा है। यह एक साइकोलौजिकल केस है।

हेमन्त

यहां तक ! पर श्रीमती सदानन्द का क्या होगा ?

सदानन्द

(**हँसकर**) तुम लगातार ग़लत रास्ते पर जा रहे हो हेमन्त। ठीक रास्ते पर चलना शायद तुम्हें पसन्द ही नहीं है।

हेमन्त

यह तो भविष्य ही बताएगा कि कौन ग़लत रास्ते पर है। या फिर श्रीमती सदानन्द ही इस बात का निश्चय कर सकेंगी।

सदानन्द

फिर वही श्रीमती सदानन्द !

हेमन्त

तो क्या उन्हें इस बात में कोई आपत्ति नहीं है ?

सदानन्द

किस बात में ?

हेमन्त

यही कमला के सम्बन्ध में ? और अब तो नए कानून के अनुसार कोई सरकारी कर्मचारी एक साथ दो विवाह कर ही नहीं सकता।

सदानन्द

(हँसकर) बहुत समय तक लड़कियों के सम्बन्ध में मेरा भी वही दृष्टि-कोण था, जो तुम्हारा है।

हेमन्त

आज तो आप पहेली बुझा रहे हैं साहब। भला किस दृष्टिकोण की बात आप कर रहे हैं? लड़कियों के बारे में मेरे तो बहुत से दृष्टिकोण हैं।

सदानन्द

वह भी मैं जानता हूँ। तुम्हारे बहुत से दृष्टिकोण यह हैं—लड़कियों से काम निकाला जा सकता है, पहला दृष्टिकोण; लड़कियों से खिलवाड़ किया जा सकता है, दूसरा दृष्टिकोण; लड़कियों को आसानी से फँसाया जा सकता है, तीसरा दृष्टिकोण; उन्हें फटे हुए पुराने कपड़े की तरह जब चाहे उतार कर फेंक दिया जा सकता है, चौथा दृष्टिकोण!—और भी गिनाऊँ तुम्हारे दृष्टिकोण?

हेमन्त

जी आप तो यह बताइए कि कमला के बारे में आपका क्या दृष्टिकोण है?

सदानन्द

सदा की तरह मेरा भी ख्याल था कि वह मेरे अत्यन्त नीरस जीवन में कुछ रस ढाल सकेगी। तुम्हारी ही तरह मेरा भी ख्याल था कि अगर मैं उस पर कुछ ऐहसान करूँगा तो बदले में वह मेरी छोटी-मोटी ज़्यादतियां भी सहन करती जाएगी। पहले भी तो तुम कितनी ही लड़कियां मेरे पास भेज चुके हो हेमन्त।

हेमन्त

ठीक संख्या तो मुझे भी याद नहीं श्रीमन।

सदानन्द

(हंसते हुए) और मुझे भी याद नहीं। खैर, जाने दो। पर मेरे मामले

में एक बात सदा इन लड़कियों के पक्ष में रही है। मुझे एक सीमा तक ही इन लड़कियों में दिलचस्पी है, उससे अधिक नहीं।

हेमन्त

पर आप तो कमला की बात कर रहे थे।

सदानन्द

तुम अभी रिफ़्यूजी लड़कियों की बात कर रहे थे। पर मेरा तो अनुभव है कि इन रिफ़्यूजी लड़कियों में आत्मरक्षा की भावना सबसे अधिक रहती है। यह शायद इन्हें परिस्थितियों की देन है। बीस कोशिश करके भी तुम उस आत्मरक्षा की भावना की सीतारेखा को अतिक्रान्त नहीं कर सकते।

**(सदानन्द क्षण भर के लिए चुप रहकर हेमन्त की ओर देखता है, जो कोई जवाब नहीं देता, न कोई प्रश्न ही करता है।)**

सदानन्द

पर जैसा कि मैंने अभी-अभी कहा, कमला उन सबसे एकदम भिन्न है।

हेमन्त

वह किस तरह ?

सदानन्द

कमला जैसे आत्मरक्षा भावना की उस सीतारेखा को जानती तक भी नहीं। उसने कभी मुझे किसी बात से नहीं रोका।

हेमन्त

इससे अधिक आसान बात और क्या हो सकती है साहब ?

सदानन्द

यहीं तो तुम गल्ती करते हो हेमन्त। कमला पहली लड़की है, जिसने मुझे पूरी तरह पराजित कर दिया है।

हेमन्त

आप तो फिर से पहेलियां बुझवाने लगे।

सदानन्द

कमला को मुझपर ऐसा अगाध विश्वास है कि यह विश्वास सौ कवचों से बढ़कर उसकी रक्षा करता है।

हेमन्त

पर उस विश्वास का आप चाहे जिस तरह लाभ भी तो उठा सकते हैं?

सदानन्द

यही तो मैं भी कह रहा हूँ भलेमानस। जब कमला यहां काम करने लगी तो मैंने उसे सब तरह की सुविधाएं दीं। कुछ ही दिन बाद जब मैंने अनुभव किया कि रास्ता साफ़ है, तो एक सांझ मैंने उसे अपने कमरे में बुलाया। इसी कमरे में और करीब-करीब इसी समय। यह कुछ ही दिन पहले की बात है। मेरा चपरासी बहुत समझदार है। इससे किसी किस्म की चिन्ता मुझे नहीं थी।

हेमन्त

फिर?

सदानन्द

कमला से मैंने इस तिपाई पर रक्खे टाइप राइटर से एक चिट्ठी टाइप करने को कहा। यहीं, ठीक इसी जगह। वह इस जगह बैठकर टाइप करने लगी। मैं एकाएक उठ खड़ा हुआ और धीरे-धीरे उसके पीछे जाकर खड़ा हो गया। मैं क्रमशः उस पर झुका। मुझे मालूम नहीं कि कमला को कुछ भी ज्ञात हुआ या नहीं, पर धीरे-धीरे मैं अधिक-अधिक झुकता चला गया। ज़ाहिर में कमला ने कुछ भी नहीं कहा। वह उसी तरह टाइप करती रही। धीरे-धीरे मैं उसके सिर पर झुका। धीरे-धीरे मेरा शरीर उसकी पीठ से स्पर्श करने लगा, पर कमला उसी तरह टाइप करती रही।

हेमन्त

उसके बाद?

सदानन्द

मालूम नहीं मैं कितनी देर तक उसी तरह झुका रहा। उसके बाद मैंने पुकारा—"कमला! कमला!!" उसने पीछे की ओर घूमकर मेरी ओर देखा। उसकी आंखें मेरी आंखों से मिलीं। ओह हेमन्त, वैसी नज़र मैंने अपने जीवन में आज तक नहीं देखी थी। साहित्य में मेरी रुचि कभी नहीं रही। पर उस दिन कमला की आंखों में जैसे मैं आदि-कवि बाल्मीकि का पूरा काव्य पढ़ गया। उन आंखों में मेरे प्रति इतना अगाध विश्वास भरा हुआ था कि जैसे वे समुद्र को भी एक चुनौती दे सकती हों। और मेरे लिए तो वे सचमुच ही एक चुनौती थीं।

हेमन्त

किस तरह की चुनौती?

सदानन्द

यही, कुछ इस तरह कि जैसे कमला मुझसे कह रही हो कि "मुझे आप पर पूरा विश्वास है। आप जो कुछ भी करेंगे, वह कभी अनुचित न होगा!" मैंने कहा—"कमला खड़ी हो जाओ।" वह खड़ी हो गई। मैंने कहा—"कमला, मुँह ऊपर करो।" उसने अपना मुँह ऊपर उठा दिया और मेरी तरफ़ देखा। उसकी निगाह ने जैसे मुझे कंपा दिया। इससे मैंने कहा—"कमला, आंखें नीची करो।" कमला ने आंखें नीचे को ओर झुका लीं। मैंने कहा—"कमला, तुम बहुत अच्छी हो!" मेरी इस बात के जवाब में कमला ने अत्यन्त शान्त स्वर से कहा—"मेरे पिताजी भी मुझे बहुत प्यार करते थे। आज आपको देखकर मुझे अपने पिता जी की याद आ रही है!" और मैंने पाया कि मोती से दो बूंद कमला की आंखों से निकले और धीरे-धीरे नीचे की ओर बह चले!

हेमन्त

आप इतने भावुक होंगे, यह मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी।

सदानन्द

मैं भावुक कहां हूँ हेमन्त। मगर आखि़र इन्सान हूँ, पत्थर नहीं हूँ।

हेमन्त

मैंने सुना था कि भक्त लोग पत्थर को भी भगवान बना लेते हैं। आप तो फिर इन्सान हैं।

सदानन्द

और तुम ?

हेमन्त

मैं मनुष्य हूँ, इसीसे मनुष्य की सब शक्तियां और सब कमज़ोरियां मुझमें हैं। यह दुनिया कमज़ोरों के लिए नहीं है। दया, ममता, करुणा—इन सबको मैं कमज़ोरी मानता हूँ। शक्ति की स्थिति, प्रमाण और निरन्तरता के लिए मैं हिंसा और अपहरण को अपरिहार्य मानता हूँ।

सदानन्द

तुम इन्सान नहीं हो हेमन्त, तुम शैतान हो !

हेमन्त

**(मुसकरा कर)** मेरा मुन्शी यहां न हुआ। नहीं तो वह जवाब देता कि 'हज़ूर, मैं तो आपका बच्चा हूँ।'

सदानन्द

अच्छा, छोड़ो इन बातों को। कौन-सी बड़ी ज़रूरत तुम्हें यहां खींच कर लाई थी ?

हेमन्त

तम्बाकू कम्पनी वाला केस एकाएक बहुत पेचीदा बन गया है साहब। स्थिति बहुत नाजुक प्रतीत हो रही है।

सदानन्द

भई, तुम्हारी यह तम्बाकू कम्पनी शुरू ही से इतनी पेचीदा है कि उस

में पेचीदापन के बढ़ने की गुंजाइश ही कहां है? झूठे हिस्सों की बिक्री, हिस्सों की बदली, झूठ-मूठ के बेबुनियाद कामों के लिए बड़े-बड़े ठेके लेकर अपना हिस्सा पहले ही नक़द वसूल कर उन्हें आगे बेच देना—ये सब काम तुम्हारी यह तम्बाकू कम्पनी करती रही है। मुझे सभी कुछ मालूम है। पर मेरा ख्याल था कि तुम्हारे जैसा चालाक आदमी कभी कानून की पकड़ में नहीं आएगा। बात क्या हुई?

हेमन्त

आजसे करीब नौ महीना पहले एक ऐसी गलती हो गई थी, जिसका कोई हल मुझे ढूंढ़े भी नहीं मिल रहा है। इस तम्बाकू कम्पनी के बारे में सरकार छानबीन करने का इरादा कर चुकी है, यह तो मुझे वक़्त पर मालूम हो गया था। राजीव से उम्मीद थी कि वह मदद करेगा। वह उम्मीद पूरी नहीं हुई। फिर भी मैं बेफिक्र था। क्योंकि मुझे विश्वास था कि कानूनी पकड़ में मैं किसी तरह भी नहीं आऊँगा। कम से कम यह तो मैं बिलकुल ही निश्चित समझता था कि हज़ार सिर पटक कर भी जांच कमीशन मेरे खिलाफ़ कोई सबूत नहीं पा सकेगा।

सदानन्द

फिर अब क्या हो गया?

हेमन्त

वही तो मैं बता रहा हूँ साहब। ९ महीना पहले हम लोगों ने एक काल्पनिक व्यक्ति को जन्म दिया था।

सदानन्द

(**चौंक कर**) कल्पनिक व्यक्ति को! मुझे मालूम है कि तुम बहुत चलती रक़म हो। पर मैंने भी यहां तक कल्पना नहीं की थी। इस काल्पनिक व्यक्ति की तुम्हें क्या ज़रूरत पड़ गई? खास तौर से उस दशा में जब हत्या और डकैती तक के लिए भी वास्तविक व्यक्ति यहाँ मिल जाते हैं।

हेमन्त

पर इन वास्तविक व्यक्तियों को हिस्सा देना होता है। उस पर जान हर वक्त सांसत में रहती है, क्योंकि उन्हें आपका राज़ मालूम होता है और जब चाहे वे ब्लैकमेलिंग तक कर सकते हैं। ब्लैकमेलिंग तक न भी उतरें, पर अपनी कीमत तो बढ़ा ही सकते हैं।

सदानन्द

तुम्हारी सूझ की मैं दाद देता हूँ हेमन्त। अच्छा तो मैं समझ गया। इस काल्पनिक व्यक्ति को तुमने इस तम्बाकू कम्पनी का सैक्रेटरी बना दिया। उसी के नाम से तुमने कितने ही अवैध काम किए। और तुम पर किसी को शक तक नहीं गुज़रा। ठीक है न ?

हेमन्त

बिलकुल ठीक। पर अब मालूम होता है कि सरकार को इस बात का न केवल ज्ञान हो गया है, बल्कि इस बात का कोई प्रमाण भी सरकार को मिल गया है।

सदानन्द

तो फिर अब तुम क्या करना चाहते हो ?

हेमन्त

इसीलिए तो मैं आपकी सेवा में उपस्थित हुआ हूँ।

सदानन्द

आख़िर तुमने कोई उपाय तो सोचा ही होगा।

हेमन्त

सोचा तो था। पर अब वह उपाय आप से निवेदन करने की हिम्मत नहीं हो रही।

सदानन्द

वह क्यों ?

हेमन्त

यहां आकर पता चला कि परिस्थिति एकदम बदल गई है।

सदानन्द

मैं तुम्हारी बात ख़ाक नहीं समझा। अब तुम पहेलियों में बात करने लगे। अरे भाई, हम से सीधी-सादी और साफ़ ज़बान में बात करो।

हेमन्त

बात यह है साहब कि इस सवाल का बहुत आसान हल मुझे सूझ गया था। यह हल मुझे इतना आसान प्रतीत हुआ कि खुशी की अपेक्षा मुझे हैरानी अधिक अनुभव हुई। परमात्मा पर मुझे विश्वास तो नहीं है, पर यह हल ऐसा आसान मालूम हुआ कि एक बार तो परमात्मा को धन्यवाद तक देने को भी जी चाहा।

सदानन्द

भलेमानस, कुछ बात भी बताओगे कि बहके जाओगे ?

हेमन्त

अगर आप बुरा न मानें और मुझे कहने की इजाजत दें तो कहूँ ?

सदानन्द

इतनी देर से मैं और कह क्या रहा हूँ ?

हेमन्त

तो सुनिए। हमारी कम्पनी के इस कल्पित सेक्रेटरी का नाम था कमल। इस पेचीदा मामले पर दिन रात में लगातार सोचता रहा, पर कुछ भी सूझ नहीं रहा था। पर आज एकाएक मुझे ख्याल आया कि 'कमल' और 'कमला' में कुछ अधिक फ़र्क़ नहीं है।

सदानन्द

तुम इतने कमीने हो यह मैंने कभी ख्वाब में भी न सोचा था। आख़िर तुम चाहते क्या हो ? २३ साल की एक लड़की तुम्हारी इस चालबाज़

तम्बाकू कम्पनी की सैक्रेटरी थी, इस बात पर कौन भलामानस विश्वास करेगा ?

हेमन्त

कोई विश्वास करे या न करे—इससे हमारा क्या आता जाता है! हमें तो कानून का पेट भरना है। बस, उस के इधर उधर क्या हो रहा है, यह सब जानना हमारे लिए निरर्थक है। और फिर आज की दुनिया को तो कोई चौंकाने वाली खबर चाहिए। इस कम्पनी का केस चलने दीजिए, आपकी कमला का नाम अख़बारों के बड़े-बड़े शीर्षकों में दिखाई देने लगेगा। इन रिफ़्यूजियों के बारे में लोग सभी तरह की खबरों पर, ख़ास तौर से बुरी ख़बरों पर, झट से विश्वास भी तो कर लेते हैं। अमेरिका में २३ साल की लड़कियां अगर गैंग्स्टर बन सकती हैं, तो हमारा देश पीछे कैसे रह सकता है!

सदानन्द

मगर नाम की इस ज़रा-सी समानता से तुम इतनी बड़ी-बड़ी स्कीमें कैसे बना रहे हो हेमन्त ?

हेमन्त

जी, पहले मेरी योजना तो सुन लीजिए।

सदानन्द

क्या है तुम्हारी यह सब से ताज़ी शैतानी-योजाना ?

हेमन्त

मेरी योजना यह है कि आज से ९ महीना पहले की तारीख डाल कर हमारी सिटरेट कम्पनी की ओर से कमला जी को एक नियुक्ति पत्र दिया जाए, जिसके अनुसार वह उक्त तारीख से १००० रुपए मासिक पर कम्पनी की सैक्रेटरी नियत हों। यह पत्र में तैयार करवा कर साथ ही लया हूँ।

**(अपने पोर्टफ़ोलियो केस से तीन टाइप किए हुए पत्र निकालता है।)**

हेमन्त

यह रहा उनका नियुक्ति पत्र और यह रहा उनका स्वीकृति पत्र।

सदानन्द

और यह तीसरा पत्र कैसा है ?

हेमन्त

यह तम्बाकू कम्पनी की सैक्रेटरीशिप से कमला जी का त्यागपत्र है। इस पर आज से ३ महीना पहले की तारीख पड़ी हुई है।

सदानन्द

(**क्रोध से**) मैं यह सब हरगिज़ न होने दूंगा।

**(हेमन्त शीघ्रता से तीनों कागज़ पोर्टफ़ोलियो में डाल देता है।)**

हेमन्त

यह तो मैं पहले ही निवेदन कर चुका हूँ साहब। इसी कारण मैंने पहले ही माफ़ी भी मांग ली थी। मुझे तभी पूरा शक हो गया था।

सदानन्द

(**और भी अधिक क्रोध से**) तुम परले दर्जे के बेईमान और शैतान हो। मेरे जी में तो आ रहा है कि तुम्हें जूते मार कर यहां से निकाल दूँ।

हेमन्त

यह भी आज़मा लीजिए, साहब।

सदानन्द

(**ज़रा संयत होकर**) ओह ! (**कुर्सी पर बैठ जाता है।**)

हेमन्त

तो फिर हमारी हिस्सेदारी आज से समाप्त होती है। सेठ किशोरीदास से कल ही एक बड़ी रकम मैं आपके के पास भिजवा रहा था। पर अब जाने दीजिए।

सदानन्द

हां, हां, मुझे तुम्हारे जैसे कमीने आदमी से एक कौड़ी भी नहीं चाहिए।

हेमन्त

तो अब मेरी और आपकी राह अलग-अलग है।... (**क्षण भर चुप रह कर, धीमी आवाज़ में**) मगर राह अलग कैसे हो सकती है? मेरे सम्बन्ध में जांच-पड़ताल हो ही रही है। मैं बहुत जल्द जेल चला जाऊँगा। मेरे बाद मेरे सभी कामों के सम्बन्ध में छानबीन होगी। आप भी उससे बच कहां पाएँगे? मैं बाहर तो रहूँगा नहीं। तब आपको बचाऊँगा कैसे? उमीद यही है कि देर-सवेर आप भी वहीं पहुँचेंगे जहां मैं आप से पहले भेज दिया जाऊँगा। जेल! भगवान कृष्ण की जन्मभूमि! महात्मा गांधी का पुण्यागार! जेल जाने में बुराई ही क्या है? मगर साहब, आप तो कांपने लगे!

सदानन्द

बस, बस! बहुत हुआ। मैं चाहूँ तो इसी वक़्त तुम्हें पोलीस के हवाले कर सकता हूँ!

हेमन्त

फिर कर क्यों नहीं देते! मैं मना कब करता हूँ?

(**कुछ क्षण सन्नाटा रहता है।**)

सदानन्द

यह सब ठीक नहीं हो रहा। मुझे गुस्सा आ गया था।...मैं बहुत उद्विग्न हो गया हूँ!

हेमन्त

माफ़ कीजिए। आपकी भावुकता को मैं खूब समझता हूँ। पुराने ज़माने के लोग होते तो कहते कि किसी ने आप पर जादू कर दिया है। पर मैं जानता हूँ कि आप भावुकता का शिकार हो गए हैं। मैंने अभी कहा था

न कि भावुकता को मैं एक कमज़ोरी, बल्कि बीमारी मानता हूँ। मेरी राय से यह भी नर्वस बीमारी है।

**(सदानन्द चुप रहता है। क्षण भर की चुप्पी के बाद हेमन्त फिर से कहने लगता है।)**

### हेमन्त

अगर सिकन्दर भावुक होता तो इतना बड़ा साम्राज्य न बना पाता, अगर नैपोलियन दया-माया का शिकार होता तो मास्को तक न पहुँच पाता।

### सदानन्द

**(एकाएक मुसकरा उठता है)** मैं तुम्हारा लोहा मान गया हेमन्त। तुम अगर ठीक राह पर चले होते तो देश के प्रधानमन्त्री न सही, किसी राज्य के मुख्य मन्त्री अवश्य बने होते। भलेमानस, उस छोटी-सी लड़की को फँसाने की राय मैं तुम्हें कभी न दूँगा।

### हेमन्त

मैं उसे फंसाना कब चाहता हूं साहब। कमला को उन ६ महीनों के लिए सिगरेट कम्पनी का सैक्रेटरी बनाकर और आज से ३ महीना पहले से उसका त्यागपत्र स्वीकार कर मैं इसी वक़्त उसे ६००० रुपया नकद दूंगा। बस, और तो कुछ भी नहीं।

### सदानन्द

तो गैंगस्टर वगैरह की बातों का क्या मतलब था?

### हेमन्त

वह सब तो मज़ाक था साहब। आप तो यों ही इतना गरम हो गए।

### सदानन्द

मुझे बहलाने की कोशिश मत करो। क्या तुम कहना चाहते हो कि उन ६ महीनों के लिए तुम्हारी खतरनाक कम्पनी के सैक्रेटरी का पद स्वीकार कर कमला कोई खतरा मोल नहीं ले रही?

हेमन्त

नहीं, यह बात तो नहीं है। खतरा ज़रूर है। पर कोई बड़ा खतरा नहीं है। जांच कमीशन भी यह समझ जाएगा कि २३ साल की लड़की स्वयं कोई बड़ी जालसाज़ी नहीं कर सकती। और फिर कुछ हो भी गया तो आप और मैं किस मर्ज़ की दवा हैं ?

सदानन्द

तुमसे पार पाना बहुत कठिन है हेमन्त।

हेमन्त

मैं तो सिर्फ़ आपका भला चाहता हूँ। इस जंजाल से हम लोग बच गए, तो मैं कम-से-कम एक लाख रुपया आपको मजे से दे सकूँगा। पर उसके लिए आपको हमें खुले दिल से पूरी मदद देनी होगी। और हाँ, सेठ रामकिशोर से बाकी रकम भी वसूल हो गई है। आपको यह जानकर खुशी होगी कि उस दिन ५० हज़ार आपको दे देने के बाद, उसी मद में आपके लिए मैंने उससे २५ हज़ार और वसूल कर लिए हैं।

**(सदानन्द बहुत प्रसन्न दिखाई देने लगता है।)**

सदानन्द

अच्छा भाई हेमन्त। कमला को मैं यहाँ बुलाता हूँ। पर, तुम बीच में बिल्कुल मत बोलना। मैं ही उससे बातचीत करूँगा। उसे ६००० रुपया तुम इसी वक्त अदा कर दोगे। और यह तुम्हारा वायदा रहा कि कमला पर किसी तरह की आंच न आने पाएगी।

हेमन्त

देखिए साहब ! मैं खरा आदमी हूँ। आँच की बात तो मैं नहीं कहता। पर किसी तरह की बड़ी मुसीबत मैं कमला पर नहीं आने दूंगा। यह मेरा वायदा रहा।

सदानन्द

ठीक ।

(भीतर का टेलीफ़ोन उठाकर)

कमला, कुछ देर के लिए यहाँ आ जाओ।...कुछ भी साथ लाने की ज़रूरत नहीं।...हाँ, हेमन्त जी अभी यहाँ ही हैं।

**(रिसीवर रखकर माथे पर से पसीना पोंछता है और भेदती-सी दृष्टि से हेमन्त की ओर देखता है, जो सिर झुकाए चुपचाप बैठा है।)**

**(मुस्कराती हुई कमला का प्रवेश)**

सदानन्द

आओ, कमला यहाँ बैठ जाओ।

कमला

**(बैठकर)** धन्यवाद।

सदानन्द

मैं बहुत दिनों से सोच रहा था कि तुम्हारे पास अपनी एक छोटी गाड़ी ज़रूर होनी चाहिए। दफ़्तर से घर जाने में तुम्हें प्रायः देर हो जाती है। मैंने उसका कुछ इन्तज़ाम किया है।

कमला

आपकी कृपा है। गाड़ी की ज़रूरत तो मैंने कभी अनुभव नहीं की। उस पर मैं कार चलाना भी अभी तक नहीं जानती।

सदानन्द

उसमें क्या देर लगती है? वह तो ३ ही दिन का काम है। हाँ, तो बात यह है कि श्री हेमन्त की एक सिगरेट कम्पनी है। इस कम्पनी के सैक्रेटरी का वेतन १००० रुपया महीना था। इस साल के शुरू से इन्होंने अपना कोई सेक्रेटरी नहीं रक्खा था। पर अब कुछ ऐसी ज़रूरत आ पड़ी है कि उन दिनों कम्पनी के कागज़ों और रजिस्टरों पर किसी सेक्रेटरी के दस्त-

खतों के बिना सारी कम्पनी मुसीबत में पड़ सकती है। अगर तुम्हें कोई एतराज़ न हो, तो पहले ६ महीनों के लिए यह तुम्हें इस कम्पनी के सेक्रेटरी पद का नियुक्ति पत्र दे देंगे। तुम्हें ६००० रुपया इसी समय दे दिया जाएगा और अब से ३ महीना पहले की तारीख से इस सिगरेट कम्पनी से तुम्हारा त्यागपत्र भी ले लिया जाएगा।

*कमला*

मैं यह सब कुछ नहीं समझती। मुझे रुपया भी नहीं चाहिए। आपकी दया से मेरा गुज़ारा बहुत अच्छे ढंग से चल रहा है। अगर आप आज्ञा दें तो मैं चाहे जितनी जगह और जिस हैसियत से आंख मूंद कर हस्ताक्षर करने को तैयार हूँ।

**(सदानन्द का चेहरा बहुत गम्भीर हो जाता है, वह कुछ विचलित होने लगते हैं, पर बड़ी कठिनता से अपने में किसी तरह का परिवर्तन नहीं आने देते। उधर हेमन्त के चेहरे पर हँसी झलकने लगती है, जिसे वह कठिनता से रोक पाता है।)**

*सदानन्द*

नहीं, नहीं। वैसी कोई भी बात नहीं है। अगर तुम न चाहो तो बेशक इस झमेले में मत पड़ो।

*हेमन्त*

कमला बहन, साहब तो यह सब सिर्फ़ तुम्हारे भल के लिए कह रहे हैं।

**(सदानन्द हेमन्त की ओर आग्नेय दृष्टि से देखता है।)**

*कमला*

तो बताइए, मुझे कहां-कहां दस्तखत करने होंगे?

**( हेमन्त शीघ्रता से तीनों कागज पोर्टफ़ोलियो केस से बाहर निकालता है। )**

सदानन्द

अभी ठहरो हेमन्त। कमला को पूरी बात समझा देना तुम्हारा कर्तव्य है।

कमला

मैं कुछ भी समझना नहीं चाहती। कम्पनियों की ये पेचीदा बातें मेरी समझ में आएंगी भी नहीं। मुझे तो आपकी आज्ञा चाहिए।

**(सदानन्द अभी सोच ही रहा होता है कि इस सम्बन्ध में क्या सलाह कमला को दे कि हेमन्त तीनों कागज़ कमला की ओर बढ़ा कर कहता है)**

हेमन्त

बस, कृपया इन तीन कागज़ों पर हस्ताक्षर कर दीजिए। इनमें से दो आपके नियुक्ति पत्र से सम्बद्ध हैं और एक त्यागपत्र है।

**(कमला हस्ताक्षर कर देती है और हेमन्त सौ-सौ रुपयों के सौ नोट कमला की ओर बढ़ाता है।)**

हेमन्त

यह १०,००० रुपया है। इसमें ६,००० आपकी उन ६ महीनों की तनख्वाह है और ४००० कार खरीदने के लिए उधार। इस उधार की रसीद देने की आवश्यकता नहीं है।

कमला

मुझे माफ़ कीजिए। मुझे यह रुपया नहीं चाहिए।

हेमन्त

**(सदानन्द से)** साहब, अब आप ही कमला बहन को समझाइए कि यह रुपया वह स्वीकार कर लें।

सदानन्द

**(धीमे स्वर से)** यह रुपया अपने पास रख लो कमला। कार न भी

खरीदनी हो, तो भी बैंक में अपने नाम से हिसाब खोल देना।

कमला

**(अत्यन्त विनय भाव से)** मुझे यह रुपया छूते हुए भी डर लगता है। कृपा कर मुझे मजबूर न कीजिए।

सदानन्द

तुम समझती नहीं हो कमला। उन छः महीनों के लिए, चाहे कागज़ी तौर से सही, कम्पनी की सैक्रेटरीशिप स्वीकार कर तुमने इन पर बहुत बड़ा उपकार किया है। यह रुपया उसी की कीमत है।

कमला

मेरे पड़ौस में एक छोटा-सा टिन शेड है। इसमें पास पड़ौस के शरणार्थी बच्चे जमा होते हैं और एक दूसरे की मदद से पढ़ने-लिखने का प्रयत्न करते हैं। सिर्फ़ एक गरीब-सी अध्यापिका वहां आती है, जो बड़े लड़कों को पढ़ाती है। वे बड़े लड़के अपने से छोटों को पढ़ाते हैं, और वे अपने से छोटे बच्चों को। इस ढंग से वह छोटा-सा स्कूल चल रहा है। अगर यह रुपया आपके काम का न हो,तो मैं आपसे अनुरोध करूँगी कि यह रकम आप उसी स्कूल को दान कर दें।

हेमन्त

अब यह आपका रुपया है। आप चाहे, जिस तरह इसका इस्तेमाल कर सकती हैं। अगर आप चाहें तो इसे दान भी दे सकती हैं।

**(कमला उसी तरह खड़ी रहती है। नोटों को वह हाथ भी नहीं लगाती। हेमन्त नोट टबल पर रख देता है।)**

सदानन्द

यह रुपया मेरे पोर्टफ़ोलियो केस में रख दो कमला। मैं तुम्हें बताऊँगा कि इस रुपये का तुम्हें क्या करना है।

(कमला अनमने भाव से पास ही रक्खा सदानन्द का पोर्ट-फ़ोलियो उठा लाती है और उसमें धीरे-धीरे नोट रखती जाती है। सदानन्द क्षण भर यह दृश्य देखता है और उसके बाद ज़रा दूर हटकर अपनी उद्विग्नता छिपाने के लिए रेडियोग्राम चला देता है। कुछ ही क्षणों में रेडियो से आवाज़ आने लगती है। सदानन्द चौंककर खड़ा हो जाता है। उसके मुंह से आप ही आप निकलता है।)

सदानन्द

ओह! यह तो प्रधानमन्त्री* साहब बोल रहे हैं!

(आप ही आप सदानन्द दोनों पैर मिलाकर सावधान रूप में खड़ा हो जाता है। उसका दाया हाथ सैल्यूट के लिए ज़रा-सा उठकर नीचे चला जाता है। उधर हेमन्त कमला को घूर रहा है, जैसे उसके आन्तरिक भावों को पढ़ने का प्रयत्न कर रहा हो। रेडियो से सुनाई देता है। प्रधानमन्त्री* बोल रहे हैं—)

"ज़ाहिर है कि अगर हम देश से दरिद्रता और गरीबी दूर करना चाहते हैं, तो उसके लिए हमें एक बहुत बड़ी लड़ाई लड़नी होगी। संसार में हम लड़ाई नहीं चाहते, मगर अपने देश में तो हम एक बहुत बड़ी लड़ाई लड़ रहे हैं। यह है देश की गरीबी से लड़ाई। हमारा सबसे बड़ा दुश्मन गरीबी है। उस पर सब तरफ़ से फौज़ी हमला होना चाहिए—खेतों से, खलिहानों से, कारखानों से, अधिक रोज़गार से—सब तरफ़ से!

"सरकारी पैसा हिंदोस्तान के गरीब किसान की जेब का पैसा है!

***प्रधानमन्त्री के इस भाषण का रिकार्ड आकाशवाणी दिल्ली के पास विद्यमान है।**

भारत के किसान पसीना बहाकर जो कमाते हैं, वही टैक्स वगैरह के रूप में हमारे पास आता है और हम उसे खर्च करते हैं। हम सैकड़ों-करोड़ों रुपए इसीलिए खर्च कर रहे हैं कि हम उस गरीब किसान को लाभ पहुँचाना चाहते हैं। अपना पेट काटकर और हज़ार बातों में कमी करके हम यह पैसा खर्च कर रहे हैं। इसलिए कि बाद में लाभ हो। लेकिन यह एक गरीब देश के गरीब निवासियों का पैसा है। इस पैसे को खर्च करते हुए हमें यह ख्याल हमेशा रखना चाहिए कि इस रकम का एक पैसा भी ज़ाया न हो। हर एक शख्स को, जो सरकारी मुलाज़िम है, सोचना चाहिए कि आख़िर यह पैसा गरीबों की जेब से आता है।"

**(रुपये रख कर पहले कमला ध्यान से उक्त भाषण सुनने लगती है और बाद में हेमन्त का ध्यान भी उधर जाता है। हेमन्त के चेहरे पर पहले अवज्ञा का भाव आता है और फिर खिज का। यह खिज इतनी बढ़ जाती है कि वह तेज़ी से आगे बढ़कर रेडियो का स्विच बन्द कर देता है।)**

(परदा गिरता है।)

## दूसरा अंक समाप्त

पन्द्रह दिन बाद

# तीसरा अंक

**स्थान**—हेमन्त की बैठक

**समय**—रात

(पहले अंक में वर्णित हेमन्त की वही बैठक। अन्तर केवल इतना ही है कि उसकी सज्जा बदल दी गई है। ब्रैकेट पर हरे की जगह काला टैलीफ़ोन रखा है। सोफ़ा सेट के आवरण और कमरे के पर्दे बदल दिए गए हैं। उनके रखने का ढंग भी बदल दिया गया है। बाईं ओर की और सामने की दीवार के बीच के स्थान पर उसे तिरछा रखा गया है। बाईं दीवार के बीचोंबीच पहले अंक में जो बन्द खिड़की थी, वह इस समय खुली हुई है और उस पर का परदा भी एक तरफ़ को हटा दिया गया है। जब परदा उठता है तो हेमन्त उद्विग्न भाव से इसी खिड़की के पास खड़ा दिखाई देता है। उसके बाल अस्त-व्यस्त हैं और वह खिड़की के बाहर के अन्धकार की ओर देख रहा है। वह खुले गले का लखनवी कुर्ता और खुले पहुंचे का पाजामा पहने

है। पैरों में सफेद पेशावरी चप्पल हैं। मालूम होता है कि आसमान बादलों से घिरा है, क्योंकि बिजली की चमक दिखाई देने के बाद बादलों की गरज सुनाई दे रही है। परदा उठने के २, ३ क्षणों के बाद हेमन्त के परेशान चेहरे पर बिजली की चमक का तेज़ प्रकाश पड़ता है और उसके बाद बादल की ऊँची गरज सुनाई देती है। क्षण भर बाद तेज़ हवा के साथ वर्षा का एक झोंका उसके चेहरे पर पड़ता है। हेमन्त शीघ्रता से खिड़की बन्द कर देता है और उसके सामने का पर्दा खींच देता है। उस के बाद धीरे-धीरे चलकर वह बैठक के मध्य तक आ पहुँचता है और आवाज़ देता है)

*हेमन्त*

मुन्शी जी !

**(दफ़्तर की मेज़ के पीछे का चोर दरवाज़ा खोलकर मुन्शीजी शीघ्रता से बाहर आते हैं।)**

*मुन्शी*

जी, मैं हाज़िर हूँ।

*हेमन्त*

कहाँ जा छिपे थे ?

*मुन्शी*

आप ही ने तो कहा था कि मुझे अपना मुंह मत दिखाओ !

*हेमन्त*

मुझे उसके लिए खेद है मुन्शीजी ! पर मेरी परेशानी आप नहीं समझेंगे तो और कौन समझेगा ?

मुन्शी

जी, मैं आपका बच्चा हूँ !

हेमन्त

(मुस्करा कर) अब ठीक है ! मैं घबराया तो तब था, जब मैंने पाया कि आप भी गम्भीर हो गए हैं। आपकी गम्भीरता का अर्थ है कि बस अब सब तरफ़ अँधेरा ही अँधेरा है !

मुन्शी

मैं देख रहा हूँ, जब से अमरसिंह आया, आप बहुत परेशान नज़र आ रहे हैं। ये पुलिस वाले जहां भी जाते हैं, अपनी मनहूसियत साथ ले जाते हैं। क्या कहता था यह अमरसिंह ?

हेमन्त

वही सब बताने के लिए तो मैंने आपको बुलाया है मुन्शी जी। (गम्भीर होकर) अमरसिंह कहता था कि मेरे विरुद्ध पुलिस को इतने प्रमाण मिल गए हैं कि कल सुबह सूर्य निकलने से पहले ही पुलिस मुझे गिरफ्तार कर लेगी।

मुन्शी

यहाँ तक !

हेमन्त

हाँ, यहाँ तक। उसने बताया मेरे विरुद्ध जो यह सब कुछ हो रहा है, उसके पीछे कोई बहुत बड़ा व्यक्ति है। वह कौन है, इस सम्बन्ध में पुलिस भी अभी तक कुछ नहीं जानती।

मुन्शी

तो अब क्या करने का निश्चय किया है आपने ?

हेमन्त

इतनी देर से मैं यही सब तो सोच रहा था। कुछ ऐसा चक्कर चला है कि

इस मामले को जितना ही सुलझाने की कोशिश करता हूँ, उतना ही यह उलझता चला जा रहा है। मुझे आशा की एक किरण दिखाई दी थी। मैंने कोशिश भी की है। पर मालूम नहीं कि बाज़ी चित पड़ेगी या पट। हैड या टेल--अभी कहना कठिन है।

मुन्शी

कैसी बाज़ी?

हेमन्त

कुछ ही देर हुई, मैंने राजीव को टेलीफ़ोन किया था कि वह इसी समय मेरे पास आ जाए। उसने पूछा--"क्या बात है?" मैंने कहा, "बस, बहुत ज़रूरी काम है।" उसने पूछा--"क्या काम?" मैंने कहा--"यहां आने पर ही बताऊँगा।" उसने दुबारा पूछा, तब भी मैंने इन्कार कर दिया। इस पर उसने खिजकर टैलीफ़ोन का सम्बन्ध ही काट दिया।

मुन्शी

यह तो अच्छा नहीं हुआ साहब।

हेमन्त

अब मैं भी यही सोच रहा हूँ कि शायद अच्छा नहीं हुआ। पर अब भी मुझे विश्वास है कि राजीव यहां आएगा। वह एक बार यहां आ जाए, तो मुझे निश्चय है कि इस गीली और अंधेरी रात के ८ घण्टों में बिगड़ी हुई बाज़ी फिर से बना ली जा सकती है।

मुन्शी

आखिर आप क्या करने की सोच रहे हैं साहब?

हेमन्त

तुमने कभी चाणक्य का नाम सुना है मुन्शी जी?

मुन्शी

वही जो अशोक होटल के पास है?

हेमन्त

वह उसकी यादगार है मुन्शी जी। चाणक्य एक बड़ा समझदार आदमी था।

मुन्शी

मगर इस समय वह आपको कैसे याद आ गया?

हेमन्त

चाणक्य ने कहा है--"विषस्य विषमौषधम्!" अर्थात् ज़हर का इलाज भी ज़हर ही है।

मुन्शी

वह कोई बहुत बड़ा हकीम रहा होगा साहब।

हेमन्त

बहुत ठीक समझे आप! उसने यह भी कहा है--"कण्टकेनैव कण्टकम्।" अर्थात् पैर में चुभ गए कांटे को कांटे ही से निकाला जाता है।

मुन्शी

**(बड़ी चिन्ता के साथ हेमन्त की ओर देखकर)** आप बहुत थक गए हैं साहब! बरफ़ की टोपी ले आऊँ?

हेमन्त

**(मुस्करा कर)** अभी मैं पागल नहीं हुआ, मुन्शीजी!

**(इसी समय कोठी के सहन में एक कार के रुकने की आवाज़ आती है।)**

हेमन्त

**(धीरे से)** मुन्शी जी! आप इसी क्षण भीतर के कमरे में जाकर छिप जाइए। बस, यह समझ लीजिए कि आज रात इस घर में मेरे सिवा और कोई मौजूद नहीं है। समझे? इसी चोर दरवाज़े से चले जाइए।

(मुन्शी शीघ्रता से चला जाता है। हेमन्त चोर दरवाज़े

पर जाकर परदे का ज़रा-सा भाग हैण्डल के पास दबा देता है, ताकि यदि दरवाज़ा ज़रा-सा भी खुले, तो उसे पता चल जाए। इसी समय दरवाज़े पर खटखटाहट होती है। हेमन्त 'भीतर आ जाइए' कह कर दरवाज़ा खोलता है। राजीव का प्रवेश। कमरे के भीतर आते ही वह बरसाती उतारता है। दोनों एक दूसरे को नमस्कार करते हैं। राजीव से बरसाती लेकर हेमन्त उसे बाहर बरामदे की टेबल पर रख आता है, और भीतर आकर दरवाज़ा बन्द कर लेता है।)

*हेमन्त*

क्षमा कीजिएगा। आज घर में और कोई आदमी नहीं है। कृपया इस सोफ़े पर बैठ जाइए।

**(सोफ़े पर राजीव बैठता है और हेमन्त उसके साथ वाली सोफ़ा कुर्सी पर।)**

*राजीव*

कहिए, क्या बात थी?

*हेमन्त*

मैं समझा कि शायद आप नाराज़ हो गए।

*राजीव*

आपको कम-से-कम यह तो बता ही देना चाहिए था कि मामला क्या है? पहले तो सचमुच मेरे जी में आया था कि मैं न आऊँ। पर बाद में मैं चला ही आया।

*हेमन्त*

मुझे विश्वास था कि आप आएँगे।

राजीव

अच्छा, अब तो बताइए कि वह अत्यन्त आवश्यक काम कौन-सा है, जिस के बारे में आप टैलीफ़ोन पर कुछ भी कहने को तैयार नहीं थे ?

हेमन्त

मध्ययुग में यूरोप में अपराध स्वीकृति की जो संस्था थी, आज एका-एक मेरा उस पर विश्वास उत्पन्न हो गया।

राजीव

तो आप कौन्फैशन करना चाहते हैं ?

हेमन्त

बात तो कुछ ऐसी ही है।

राजीव

पर याद रखिए मैं पादरी नहीं हूँ। इससे जो कुछ अपराध स्वीकृति आप मेरे सामने करेंगे, मैं यह वायदा नहीं करता कि वह मैं पुलिस को नहीं बताऊँगा।

हेमन्त

मैं यह अपराध स्वीकृति किसी सौदेबाज़ी के लिए नहीं कर रहा। आप चाहे जिस तरह उसका उपयोग कीजिएगा।

राजीव

शाबास ! मुझे आपसे यह आशा कदापि नहीं थी।

हेमन्त

एक दिन आपने मुझ से पूछा था कि मेरा पेशा क्या है ? आज मैं उसका जवाब देता हूँ। मेरा पेशा है, बेईमान व्यक्तियों के लिए परमिटों का इन्तज़ाम करना, बेईमान व्यवसायपतियों को बड़े-बड़े ठेके दिलवाना और यह सब में कर पाता हूँ ऊँचे ओहदों पर विद्यमान कुछ बेईमान और विश्वासघाती सरकारी अफ़सरों की सहायता से।

राजीव

मज़ाक मत कीजिए भाई साहब। आपको शायद मालूम नहीं है कि जो कुछ आपने अभी-अभी कहा है, वह अगर सच हो तो आपको कालापानी तक की सज़ा दिलवाने में भी मैं नहीं हिचकिचाऊँगा।

हेमन्त

आपको आश्चर्य क्यों हुआ भाई राजीव ? अभी तो मैं और भी कितनी ही चौंका देने वाली बातें आपको बताऊँगा। ऐसी-ऐसी बातें जिनकी आपने कभी स्वप्न में भी कल्पना न की होगी।

राजीव

आप चाहे जो कुछ हों, पर मैं इस बात की कभी कल्पना भी नहीं कर सकता कि आप देशद्रोही या देशघातक होंगे।

हेमन्त

**(मुस्करा कर)** ओह, मुश्किल तो यह है कि आप व्यंग्य या मज़ाक भी नहीं समझते !

राजीव

इस बरसाती अंधेरी रात में आपने मुझे यहां मज़ाक करने के लिए बुलाया है क्या ?

हेमन्त

यह बात नहीं है राजीव भाई। पर मेरा ख्याल है कि आप मुझे सचमुच वही कुछ समझते हैं, जो अभी-अभी मैंने आपसे कहा था।

राजीव

मैं क्या समझता हूँ और क्या नहीं, यह तो समय आने पर आप को स्वयं मालूम हो जाएगा। अभी तो आप वह बात बताइए, जिसके लिए इस गीली और अंधेरी रात में आपने मुझे यहां बुलाया है।

हेमन्त

(**गम्भीर होकर**) बात यह है राजीव भाई कि मैं एक बहुत बड़े धर्म-संकट मैं पड़ा हूँ।

राजीव

धर्म-संकट कैसा ?

हेमन्त

मुझे जो तथ्य मालूम हैं, वे एक ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध हैं, जो शायद मेरा सबसे घनिष्ट मित्र है। एक तरफ़ में मित्रद्रोह नहीं करना चाहता, तो दूसरी तरफ़ मुझे यह भी ख्याल आता है कि स्वतन्त्र भारत में इस तरह के बेइमानों की पोल न खोलना देशद्रोह के समान महा अपराध है।

राजीव

आप अपने कर्तव्य का पालन कीजिए भाई साहब।

हेमन्त

इसीलिए तो मैंने आपको टेलीफ़ोन किया था। अब भला ऐसी बात में आपको टेलीफ़ोन पर कैसे बता सकता था ?

राजीव

अच्छा, अब बता तो दीजिए कि आपका वह घनिष्ट मित्र कौन है ? मेरा तो ख्याल था कि संसार भर में आपका एक भी घनिष्ट मित्र नहीं है।

हेमन्त

मेरे इस घनिष्ट मित्र का नाम है सदानन्द।

राजीव

(**चौंक कर**) सदानन्द !

हेमन्त

आप चाहे विश्वास करें या न करें, मैं जो कुछ कहने जा रहा हूँ, वह सब अक्षरशः सत्य है।

*राजीव*

अच्छा कहिए ।

*हेमन्त*

आपको मालूम ही है कि मैंने विवाह नहीं किया। इस देश की आबादी इतनी अधिक है और इस शीघ्रता से बढ़ रही है कि मेरी राय से विवाह न करना देश की सबसे बड़ी सेवा है ।

*राजीव*

(**मुस्करा कर**) यह क़ैफ़ियत उमा को दीजिएगा भाई साहब । मुझे तो काम की बात बताइए ।

*हेमन्त*

मेरा मतलब यह है कि अकेला आदमी हूँ, इससे मुझ पर किसी तरह का बोझ नहीं है । अपना अधिक समय मैं समाज सेवा और मित्रों की सहायता में लगाता हूँ। फिर भी अच्छे रहन-सहन पर मेरा विश्वास है। अपनी कम्पनियों से मैं गुज़ारे लायक काफ़ी पैसा बना भी लेता हूँ ।

*राजीव*

ठीक ।

*हेमन्त*

पर पिछले कुछ सालों से मेरे इस मित्र ने मुझसे ऐसे-ऐसे काम लिए हैं, जो सचमुच गैर कानूनी थे । अपना मित्र समझ कर, वह जो कुछ कहते गए, मैं करता चला गया । मुझे स्वप्न में भी ध्यान न था कि इतना बड़ा सरकारी अफ़सर इतना बेईमान होगा ।

*राजीव*

आप इतने ही भोले हैं न ?

*हेमन्त*

यह भोलेपन या चालाकी की बात नहीं है राजीव भाई । उदाहरण के

लिए श्री सदानन्द ने मुझ से कहा कि सरकार अमुक व्यवसाय का कारखाना लगाने में सहायता देने को तैयार है, तुम कोई सम्पन्न व्यक्ति बताओ। मैं अपने किसी अमीर जानकार को इनके पास ले गया। अब हज़रत ने न सिर्फ़ उससे बड़ी-बड़ी रिश्वत ली, बल्कि मेरे नाम से, अर्थात् मुझे देने के लिए भी एक अच्छी रकम लूट ली !

*राजीव*

कोई सबूत है आप के पास ?

*हेमन्त*

जी हाँ ज़रूर। पर पहले एक और बात सुन लीजिए। मैं समाज सेवा का काम करता हूँ, इस से कितनी ही नौजवान लड़कियाँ और लड़के काम-काज की तलाश में मेरे यहाँ आते रहते हैं। ३-४ महीने हुए, मैंने एक जवान शरणार्थी लड़की को श्री सदानन्द के पास भेजा था। वह सुन्दरी थी, इससे उन्होंने उसे अपना सेक्रेटरी बना लिया। जब इनकी उस पर अधिक मेहर-बानी हुई, तो मुझ से उसे ६ हज़ार रुपया किसी बहाने से नक़द दिलवा दिया। कहें तो मैं आपको उसके दस्तखत भी दिखा सकता हूँ।

*राजीव*

पर मैंने तो दूसरी ही बात सुनी थी।

*हेमन्त*

मैं तो सभी बातों के पक्के प्रमाण आपको दूँगा।

**(शीघ्रता से ३ चिट्ठियां ड्रावर से निकाल ले आता है और कमला के हस्ताक्षर राजीव को दिखाता है।)**

*राजीव*

हाँ, यह तो सचमुच एक ज़बरदस्त प्रमाण मालूम होता है। २३ साल की एक नासमझ लड़की को सिगरेट कम्पनी का सेक्रेटरी कोई महामूर्ख ही ही बनाएगा।

हेमन्त

अभी तो कितने ही प्रमाण मैं आपको दूंगा राजीव भाई।

राजीव

(**ज़रा गम्भीर होकर**) मुझे अफ़सोस है कि मैंने आपके साथ न्याय नहीं किया। मुझे सचमुच अफ़सोस है।

हेमन्त

किस बात का न्याय?

राजीव

वह सब अब जाने दीजिए।

हेमन्त

नहीं राजीव भाई! आपको मेरी कसम। आप मुझसे कोई बात छिपा रहे हैं।

राजीव

मैं प्रतिज्ञाबद्ध हूँ।

हेमन्त

इस तरह तो मैं भी प्रतिज्ञाबद्ध था। अभी तो आप देश के नाम की दोहाई दे रहे थे।

राजीव

बात यह है भाई साहब, कि आज सांझ मुझे इस बात के प्रमाण दिखाए गए थे कि आप कितनी ही गैरकानूनी कार्रवाइयां करते हैं। पोलीस आपको गिरफ़्तार करना चाहती थी। वे सब प्रमाण देखकर मैंने भी स्थानीय पोलीस को रोका नहीं। इसी बात का अब मुझे खेद है।

हेमन्त

(**घबराहट का नाट्य कर**) पोलीस मुझे गिरफ़्तार करना चाहती है?

राजीव

कल प्रात: आप गिरफ़्तार हो गए होते। परन्तु अब वह नहीं होगा। मैं अभी-अभी इसका प्रबन्ध कर लूंगा।

हेमन्त

**(अत्यन्त आश्चर्य के साथ)** आप! आप प्रबन्ध कर लेंगे? आप क्या पोलीस विभाग में हैं?

राजीव

**(मुस्करा कर)** नहीं भाई साहब! आपको मालूम ही है कि मैं तो स्वतन्त्र व्यवसाय करता हूँ।

हेमन्त

**(कुछ सोचकर)** अगर पोलीस विभाग से आपका कोई भी सम्बन्ध है, तब तो मेरा काम बहुत अधिक आसान बन जाएगा।

राजीव

किस तरह का काम?

हेमन्त

मेरे पास एक रजिस्टर है, जिसमें बीसों बेईमान सरकारी अफ़सरों के बारे में कितने ही तथ्य अंकित हैं। मैं तो इसी तालाश में था कि किसी विश्वस्त उच्च पोलीस अधिकारी को वह सब जानकारी दे दूं। यानी रजिस्टर ही उसे दे दूं।

राजीव

भाई साहब, हमारा देश आज एक बहुत बड़ी मुसीबत में है। आप वह रजिस्टर मुझे देकर सचमुच देश की सेवा करेंगे।

हेमन्त

आप चाहते हैं तो वह रजिस्टर कल मैं ज़रूर आपको दे दूंगा। इस समय वह घर पर नहीं है। पर मैं आपकी बात समझा नहीं राजीव भाई।

राजीव

भाई हेमन्त ! स्वतन्त्र भारत अभी १० साल का ही बच्चा है। सदियों की पराधीनता और उससे उत्पन्न गरीबी और अशिक्षा ने भारत को इतना बिखरा हुआ और कमज़ोर बना दिया था कि वह कमज़ोरी अभी तक बाकी है। राष्ट्रीय कमज़ोरी के इन दिनों में हम लोग यदि सतर्क न रहे तो देश को सम्पन्न बनाना तो एक ओर रहा, शायद अपनी आज़ादी भी हम गंवा बैठें।

हेमन्त

यह किस तरह ?

राजीव

हमारा वह विशाल देश एक बहुत बड़ी मानसिक बीमारी का शिकार है। यह अत्यन्त घातक बीमारी है, हमारे देश में गहरी भेद-भावना की विद्यमानता। कभी प्रान्त के नाम पर, कभी धर्म के नाम पर, कभी भाषा के नाम पर और कभी जात-पांत के नाम पर हमारे देश के करोड़ों निवासी आसानी से बहका लिए जाते हैं। और तब वे आपस में ही लड़ने झगड़ने लगते हैं। इन बातों में उलझ कर देश की चिन्ता किसी को नहीं रहती।

हेमन्त

**(निरपेक्ष भाव से)** हूँ !

राजीव

इन परिस्थितियों में मेरी राय से सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी इस देश के सरकारी कर्मचारियों पर है। मेरी निगाह में हिन्दोस्तान की इस बीमारी का इलाज ही सरकारी कर्मचारियों के हाथ में है। दूसरे शब्दों में सरकारी कर्मचारी ही ऐसे डाक्टर हैं, जो इस बीमारी का बहुत शीघ्र इलाज कर सकते हैं।

हेमन्त

ठीक है।

राजीव

पर मुश्किल यह है कि हमारे देश के कितने ही सरकारी कर्मचारी अपनी स्वार्थ भावना के कारण स्वयं देश की इस बीमारी को बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। भाई साहब, आप देखेंगे कि जो अफ़सर जितना अधिक नालायक या बेईमान है, वह अपनी कमजोरी छिपाने के लिए, अपने स्वार्थ के लिए, उतना ही अधिक प्रान्तीयता का, जात पांत का, या धर्म का सहारा लेता है। मेरी राय से ये लोग देश के सबसे बड़े दुश्मन हैं।

हेमन्त

फिर आप जैसा ईमानदार व्यक्ति सरकारी सेवा से से पृथक् क्यों हो गया ?

राजीव

इसीलिए कि मैं सरकार की और देश की कुछ सेवा कर सकूँ। पिछले ८ वर्षों में मेरे सहयोग से सरकार कितने ही बड़े-बड़े मगरमच्छों को पकड़ने में कामयाब हुई है।

हेमन्त

**(चौकन्ना होकर)** आज मेरी आंखों के सामने से जैसे परदा उठ गया ! आप बहुत महान हैं राजीव भाई !

राजीव

बहुत देर हो गई। कल आप वह रजिस्टर मुझे ला देंगे न ? मैं अब चलता हूँ। मुझे विश्वास है कि अब श्री मेहरा कल प्रातः आपके घर पर छापा नहीं मारेंगे। मैं उन्हें अभी टेलीफ़ोन कर दूंगा।

**(खड़ा हो जाता है।)**

हेमन्त

हार्दिक धन्यवाद।

**(हेमन्त के साथ दरवाज तक आता है और दरवाजा खोलता है।)**

*राजीव*

**(बाहर की ओर देखकर)** वर्षा तो बन्द हो गई।

*हेमन्त*

पर अभी तक बादल बाकी हैं।

**(दोनों एक दूसरे को प्रणाम करते हैं। राजीव का प्रस्थान। हेमन्त वहीं खड़े रहकर कार के चले जाने की आवाज़ सुनता है और उसके बाद दरवाज़ा बन्द कर वापस सीधा टेलीफ़ोन तक पहुँचता है। शीघ्रता से रिसीवर उठ कर वह एक नम्बर मिलाता है। क्षण भर बाद--)**

*हेमन्त*

मैं हेमन्त बोल रहा हूँ।...नमस्कार।...सदानन्द जी हैं?...क्या कहा, वह सो रहे हैं?...जी, उन्हें अभी जगा दीजिए। बहुत ज़रूरी काम है।...वही समझ सकेंगे।...ठीक।...**(क्षण भर बाद)**...नमस्कार साहब, माफ़ कीजिएगा। मैंने आपको बेवक्त कष्ट दिया।...माफ़ कीजिएगा, मैं एक बहुत बुरी खबर आपको दे रहा हूँ।...आप के नाम गिरफ़्तारी का वारण्ट है। बहुत बड़ा खतरा है।...हां, आप आ जाइए। इसी वक्त आजाइए।...नहीं। मेरे यहां और कोई नहीं है। कोई नौकर-चाकर तक भी यहाँ नहीं है।....मैं इन्तज़ार में हूँ।...नमस्कार।

**(रिसीवर रख देता है। उसके बाद वह दफ्तर वाली मेज़ के पीछे जाकर चोर दरवाजे को जरा गौर से देखता है। वह पाता है कि परदे का वह भाग अपनी जगह से हट गया है। तब वह धीरे-धीरे दरवाज़े दस्तक देता है। भीतर से मुन्शीजी आवाज़ आती है।)**

*हेमन्त*

(मुन्)शीजी, इधर आ जाइए।

**(मुन्शी बैठक में आ जाता है। वह कुछ घबराया हुआ-सा प्रतीत होता है। हेमन्त टाइप राइटर के पास बैठ जाता है और एक कागज़ पर टाइप**

**करने लगता है । साथ ही साथ वह मुन्शी जी से बातें भी करता जाता है।)**

*हेमन्त*

कहिए, कान लगाकर सभी कुछ रहे थे न ?

*मुन्शी*

आपकी कसम साहब ! मैं तो सो रहा था जी। कैसी अच्छी रात है। ठंडी हवा चल रही है।

*हेमन्त*

बहुत ठीक ! अगर नहीं सुना तो मैं ही सभी कुछ बता देता हूँ।

*मुन्शी*

हें : हें : हें : जी, मैं तो आपका बच्चा हूँ !

*हेमन्त*

देखो मुन्शी जी, आख़िर आज मुझे राजीव का रहस्य मालूम हो ही गया। प्रकृति भी कभी-कभी कितना मज़ाक करती है। कभी यही रहस्य जानना मेरे जीवन की सबसे बड़ी साध बन गई थी और आज वह रहस्य एकाएक ऐसे समय खुल गया है, जब मेरे लिए उसका अधिक महत्व ही नहीं रहा।

*मुन्शीजी*

वह रहस्य क्या है ?

*हेमन्त*

मुझे पता चल गया है कि राजीव अब भी सरकारी अफ़सर है। वह ज़रूर ही होम मिनिस्टरी का कोई बहुत बड़ा अफ़सर होगा, जो खुफ़िया ढंग से देश के सबसे बड़े व्यवसाइयों में उठता-बैठता है।

*मुन्शी*

क्या काम है उनका ?

*हेमन्त*

बस यही, हमारे जैसे भलेमानसों का शिकार। तुम्हारा वह कच्चे तम्बाकू वाला रजिस्टर उसके लिए हीरे-जवाहरों से भी बढ़कर कीमती है। कच्चे तम्बाकू की सभी तरह की किस्मों का वह सबसे बड़ा गाहक है ! **(मुस्कराहट)**

*मुन्शी*

जी, हमारा माल भी तो चोखा है !

*हेमन्त*

देखो मुन्शी जी, आपसे मेरी कोई भी बात छिपी हुई नहीं है। पर यह कान लगाकर सभी बातें सुनने की आदत आपको छोड़ देनी होगी।

*मुन्शी*

हें-हें-हें ! यह क्या कहते हैं आप जी ? हरे राम ! हरे राम ! मैं तो आपका बच्चा हूँ जी !

**(इसी समय सहन में किसी कार के आने और खड़े होने की आवाज़ सुनाई देती है। हेमन्त शीघ्रता से वह टाइप किया हुआ कागज अपनी जेब में डाल लेता है और मुन्शी जी से कहता है।)**

*हेमन्त*

जल्दी से भीतर चले जाइए मुन्शी जी ! और देखिए, अब वह कोशिश न करना। नहीं तो मैं खुली बिजली का तार वहाँ लगा दूँगा। समझे ?

*मुन्शी*

जी, अब वह गल्ती नहीं होगी। हें ! हें ! हें !

**(मुन्शी चोर दरवाज़े से भीतर चला जाता है। इसी समय दरवाजे पर दस्तक होती है। हेमन्त दरवाज़ा खोलता है। सदानन्द का प्रवेश। वह बहुत अधिक घबराया हुआ है। जल्दी में उसने कपड़े भी नहीं बदले। रात की पोशाक के ऊपर लबादा भर पहन लिया है। दोनों बड़ी गम्भीरता से एक**

**दूसरे को देखते हैं और प्रणाम करते हैं। हेमन्त दरवाज़ा बन्द कर देता है।)**

*हेमन्त*

माफ़ कीजिए साहब। इस गीली और अँधेरी रात में आपको मैंने यह कष्ट दिया। आइए, आपका पेय तैयार है।

*सदानन्द*

तकल्लुफ़ की बातें छोड़िए। यह बताइए कि बात क्या है?

*हेमन्त*

तकल्लुफ़ नहीं, यह तो शिष्टाचार है। और शिष्टों को अपना आचरण कभी नहीं बदलना चाहिए।

*सदानन्द*

यही बातें सुनाने के लिए आपने मुझे यहाँ बुलाया है?

*हेमन्त*

देखिए साहब, यहाँ आकर आपने मुझ पर कोई एहसान नहीं किया है। यह तो आपकी खुशकिस्मती है कि अभी-अभी एकाएक मुझे अपने चरों से एक ऐसी खबर मिल गई, जिसके साथ आपका भविष्य बँधा हुआ है। इसी कारण इसी गीली और अँधेरी रात में आपको यहां आना पड़ा।

*सदानन्द*

मुझे और परेशान न करो भाई हेमन्त। साफ़-साफ़ बताओ तो सही कि मामला क्या है?

*हेमन्त*

मामला क्या है, यह तो मैं आपको बता ही चुका हूँ। आपकी आज़ादी के अब कुछ ही घंटे बाकी हैं। अफ़सोस यही है कि ये चन्द घंटे भी एक गीली और अँधेरी रात के हैं।

सदानन्द

आपको कैसे मालूम हुआ कि मैं कल प्रातः गिरफ़्तार हो रहा हूँ ?

हेमन्त

अभी-अभी मुझे एक बहुत बड़े पोलीस अफ़सर से यह ख र मिली है।

सदानन्द

किस अफ़सर से ?

हेमन्त

मुझे खेद है कि उसका नाम मैं आपको नहीं बता सकता।

सदानन्द

पहले चाहे मैं कुछ भी करता रहा हूँ, पर अब मैंने यह कसम खाली है कि किसी तरह का भ्रष्टाचार मैं नहीं करूँगा।

हेमन्त

कहते हैं न 'सौ-सौ चूहे खाय के बिल्ली चली हज को !' क्या मैं जान सकता हूँ कि आपके इस हृदय परिवर्तन का कारण क्या है ?

सदानन्द

तुम्हारे जैसा शैतान इन बातों को समझ भी नहीं सकेगा।

हेमन्त

फिर भी ? कोशिश करने में क्या हर्ज है। कैसे हुआ आपका यह हृदय परिवर्तन ?

सदानन्द

उस दिन से, जिस दिन कमला जैसी गरीब लड़की ने अपने हाथ में आए १० हज़ार रुपए अपने पुराने मोहल्ले के रिफ़्यूजी स्कूल को दे दिए। तुमने जो २५,००० रुपया मुझे उसी दिन दिया था, वह भी मैंने उसी स्कूल को दे दिया था। पर मुझे मालूम है कि तुम्हारे जैसे दानव पर इन बातों का कोई असर न पड़ेगा। यह सब तुम्हें सुनाना बिल्कुल बेकार है। सचाई

यह है कि अब मेरी और तुम्हारी राह एकदम भिन्न-भिन्न है।

हेमन्त

अब चाहे आप देवता ही क्यों न बन गए हों। पर आपका पुराना रिकार्ड तो बदल नहीं जाएगा !

सदानन्द

**(खिज कर)** मगर आखिर मुझ पर क्या आरोप लगाए गए हैं ?

हेमन्त

यही कि आप रिश्वतें लेकर ठेके देते हैं, हिस्सा रखकर परमिट जारी करते हैं और अपनी ऊँची स्थिति का अनुचित लाभ उठाते हैं।

सदानन्द

**(अवज्ञा भाव से)** बस इतना ही ? मैं देख लूँगा कि कौन माई का लाल इस आधार पर मुझे गिरफ़्तार करता है।

हेमन्त

पर ये आरोप इतने हवाई नहीं है, जितना आप समझ रहे हैं साहब। उदाहरण के लिए—**(क्षण भर के लिए रुक जाता है।)**

सदानन्द

हां, हां, कहिए न। उदाहरण के लिए—

हेमन्त

उदाहरण के लिए, यदि मैं आपको बताऊँ कि पुलिस छापा मार कर आज सांझ मेरे यहां से वे तीनों कागज़ ले गई है, जिनपर आपके सामने और आपके ही कमरे में कमला से हस्ताक्षर लिए गए थे, तो क्या यह काफ़ी गम्भीर स्थिति नहीं है ?

सदानन्द

पर पुलिस को यह कहां मालूम है कि वे हस्ताक्षर मेरे कमरे में और मेरे सामने किए गए थे ?

हेमन्त

क्या आप समझते हैं कि इस बात का कोई गवाह नहीं है ?

सदानन्द

इस बात के गवाह या तो तुम हो और या कमला। जहाँ तक कमला का सम्बन्ध है, मुझे विश्वास है कि वह कभी मुझे फँसाने का प्रयत्न नहीं करेगी। और तुम्हारे बारे में मैं इतना ही कह सकता हूँ कि यदि तुमने मेरे खिलाफ़ गवाही दी तो तुम्हारे लिए मुझसे अधिक बुरा और कोई न होगा।

हेमन्त

मेरे घर में मुझे ही इस तरह की धमकी देना आपके लिए कहाँ तक उचित है, यह तो आपके सोचने की बात है। पर यह मत भूलिए कि अदालत में गवाह के कटघरे में खड़ी होकर २३ बरस की वह बेवकूफ़ लड़की बड़े-बड़े सरकारी वकीलों की जिरह का सामना खाक करेगी। कहते हैं न कि झूठ के पैर नहीं होते।

सदानन्द

पर तुम्हारे जैसे झूठे आदमी के न सिर्फ़ पैर हैं, बल्कि वे पैर उखड़ने में ही नहीं आते।

हेमन्त

इस प्रशंसा के लिए धन्यवाद। जो खबर मैंने आपको दी है, यदि वह आपके लिए चिन्ताजनक नहीं है तो फिर जाइए और आराम से सो जाइए। यह गीली और अँधेरी रात शायद सोने के लिए ही बनी है। आप भी जाइए और आराम से सो जाइए !

सदानन्द

तुम शैतान के भी बाप हो हेमन्त। तुम्हीं बताओ कि मुझे क्या करना चाहिए ?

हेमन्त

अब आए न सीधी राह पर। मैं आचार्य चाणक्य का अनुयायी हूं। मैं कभी निराश नहीं होता। मेरे सामने कभी अँधेरा नहीं आता। मैं अँधेरे में भी दूर तक देख लेता हूँ।

सदानन्द

हाँ, हाँ, तुम उल्लू जो हुए। बताओ मेरे लिए तुम्हें क्या दिखाई दे रहा है?

हेमन्त

आप चाहे जो कुछ कह लीजिए साहब। मैंने कहा ही था कि मै कभी बुरा नहीं मानूँगा। आपको क्या करना चाहिए, यह मैंने खूब अच्छी तरह सोच लिया है। सोच ही नहीं लिया, बल्कि पूरा खरीता भी तैयार कर लिया है।

**(अपनी जेब से टाइप किए हुए दो कागज बाहर निकालता है। एक कागज़ वह सदानन्द की और बढ़ाता है और दूसरा, जो पहले की कापी है, अपने हाथ में ही रखता है।)**

हेमन्त

यह चिट्ठी लीजिए और इसपर अपने हस्ताक्षर कर दीजिए। और बस, इस गीली और अंधेरी रात में आराम से और बेफ़िक्री से अपने बिस्तर पर जाकर सो जाइए।

**(सदानन्द कागज़ हाथ में ले लेता है। एक मिनट तक वह मन ही मन उसे पढ़ता है। क्रमशः उसके हाथ कांपने लगते हैं और वह बढ़ते हुए क्रोध और घृणा से उक्त कागज़ का पिछला अंश बोलकर पढ़ने लगता है।)**

"इसी तरह और भी कितनी ही बातें हुईं, जिनसे यह स्पष्ट हो गया कि २३ बरस की यह लड़की अधिक से अधिक रुपया वसूल करने के लिए कोई भी काम कर सकती है। बहुत शीघ्र यह रहस्य भी मुझपर खुल गया

कि इस सम्पूर्ण कुचक्र का नेता कमला का मौसा रामचरण है, जो बाह्य रूप से बहुत फटेहाल प्रतीत होता है। मुझे इस बात के पूरे प्रमाण मिले हैं कि ६ महीनों तक तम्बाकू कम्पनी का सेक्रेटरी रहकर अपने मौसा की देख-रेख में इसी कमला ने वे सब कारनामे किए हैं, जो शेअर मार्केट का कोई बड़े से बड़ा चालबाज़ और बेईमान जानकार कर सकता है। अब मैं निश्चय से कह सकता हूँ कि अपने जीवन में इस कमला से बढ़कर चालबाज़ नारी मैंने दूसरी नहीं देखी। मैं भगवद्गीता की कसम खाकर कहता हूँ कि इस बारे में पहले मुझे कोई भी जानकारी नहीं थी।"

*सदानन्द*

**(हेमन्त से)** खूब ! खूब ! बहुत खूब ! अब मुझसे क्या चाहते हो ?

*हेमन्त*

बस, इस कागज़ पर अपने दस्तखत कर दीजिए।

*सदानन्द*

ज़रा अपनी कलम तो लाओ !

**(इतनी आसानी से काम बनता देखकर हेमन्त खुशी में भर उठता है और अपनी कलम खोलकर सदानन्द के पास ले जाता है। हेमन्त के निकट आते ही सदानन्द पूरे ज़ोर से एक थप्पड़ उसके मुंह पर मारता है, जिसकी ऊंची आवाज़ दूर तक सुनाई देती है। कलम छिटककर दूर जा गिरती है।)**

*सदानन्द*

बेईमान ! हरामखोर ! बदमाश ! तूने समझ क्या रक्खा है !

**(हेमन्त अचानक लगे थप्पड़ के धक्के से सँभलकर ज़रा पीछे हट गया है। पर अब भी वह उद्विग्न दिखाई नहीं देता।)**

*हेमन्त*

अपना पूरा गुस्सा निकाल लीजिए साहब। आप मेरे घर आए हैं और

मेरे मेहमान हैं। मैं आप पर हाथ नहीं उठाऊँगा। (**ज़बरस्ती मुसकराने की कोशिश करते हुए**) मुझे आप पर रहम आती है सदानन्द साहब !

*सदानन्द*

इस वक्त मेरे पास पिस्तौल होता तो तुझ जैसे कमीने को इसी वक्त गोली से उड़ा देता !

*हेमन्त*

मेरा पिस्तौल हाज़िर है। कहिए तो अभी निकाल लाऊँ ?

*सदानन्द*

ओह, तुम्हारे जैसा शैतान मैंने अपने जीवन में दूसरा नहीं देखा !

*हेमन्त*

यह आपका सौभाग्य है। अच्छा, अब आप जा सकते हैं। इस गीली और अंधेरी रात के चन्द घण्टे अभी बाकी हैं। और आपको आराम की बहुत ज़रूरत है।

**(सदानन्द ३, ४ क्षणों तक चुपचाप खड़े रहकर कुछ सोचता रहता है और हेमन्त भी निश्शब्द रूप से वहीं आस-पास टहलने लगता है। उसके बाद )**

*सदानन्द*

(**बहुत धीमी और शिथिल आवाज़ में**) अगर मैं इस कागज़ पर हस्ताक्षर कर भी दूँ तो इस बात की क्या गारण्टी है कि मैं बच जाऊँगा ?

*हेमन्त*

यह बात यदि आप मुझ से पहले ही पूछ लेते तो शायद इतनी दूर तक पहुँचने की नौबत ही न आती। बात यह है कि यह नोट मेरा बनाया हुआ नहीं है। यह नोट पोलीस ही ने मुझे दिया है। पोलीस का कहना है कि सदानन्द साहब जैसे बड़े अफ़सर से लोहा लेने में उन्हें भी खुशी नहीं है। और फिर यदि सच्चा मुजरिम सीधे तौर से हिरासत में लिया जा सके

तो फिर घुमा-फिरा कर कार्रवाही की ही क्यों जाए ?

*सदानन्द*

**(अत्यन्त घृणा भरे स्वर में)** सच्चा मुजरिम !

*हेमन्त*

जी हाँ। फिर इस नगण्य-सी बेवकूफ़ लड़की के लिए पोलीस का सामना करने भी कौन आएगा ? आपके तो हज़ार तरफ़दार हैं।

**(हेमन्त वह कागज़ और कलम पुनः सदानन्द के पास ले जाता है, जो कांपते हाथों से उस पर हस्ताक्षर कर देता है। सदानन्द कागज़ क्रोध से हेमन्त की ओर फेंक कर उधर देखे बिना ही तेज़ी से दरवाज़े की ओर बढ़ता है।)**

*हेमन्त*

**(कागज़ उठा कर जेब के हवाले करने के बाद)** धन्यवाद। अजी, मैंने कहा, अपना पेय तो पीते जाइए !

**(सदानन्द हेमन्त की ओर घूम कर भी नहीं देखता और शीघ्रता से दरवाज़ा खोल कर बाहर चला जाता है। दरवाज़े से तेज़ हवा का एक झोंका भीतर आता है, जिस से कमरे के सब परदे हिल जाते हैं।)**

*हेमन्त*

**(आगे बढ़ कर दरवाज़ा बन्द करता है और ऊँचे स्वर में अत्यन्त नीरस बल्कि कर्कश हँसी हँसता है।)** हः—हः—हः ! हाः—हाः—हाः ! एह—एह—एह !

(इसी समय चोर दरवाज़ा खोल कर बरफ़ की टोपी हाथ हाथ में लिए मुन्शी धीरे-धीरे बैठक में आता है। हेमन्त का उधर ध्यान नहीं है। जब मुन्शी काफ़ी नज़दीक पहुंच जाता है, तो हेमन्त हंसते-हंसते अचानक पीछे की ओर घूम कर देखता है। बरफ़

की टोपी हाथ में लिए मुन्शी पर एकाएक निगाह पड़ते ही हेमन्त इतना अधिक चौंक उठता है, जैसे उसने कोई भूत देख लिया हो। उसके मुंह से अचानक एक चीख निकलती है और वह कांप उठता है। पर जैसे उसी क्षण वह मुन्शीजी को पहचान लेता है और गुस्से से भर उठता है।)

*हेमन्त*

**(मुन्शी जी की ओर लपक कर)** अबे मुन्शी के बच्चे ! मैं आज तुझे ऐसा सबक दूंगा !

**(मुन्शी बरफ़ की टोपी लिए तेज़ी से पीछे की ओर दौड़ता है और ४, ५ कदम हेमन्त उस का पीछा करता है। उस के बाद वह एकाएक रुकजाता है। मुन्शी जी इस समय तक चोर दरवाज़े तक पहुँच गए हैं।)**

*हेमन्त*

ओह, मैं यह सब क्या कर बैठा ! मुझे माफ़ कर दीजिए मुन्शी जी !

*मुन्शी*

**(घबराहट भरे स्वर में)** जी....मैं तो आपका बच्चा हूँ ! जी, मैं तो आपका बच्चा हूँ !

*हेमन्त*

ज़रा-सा दरवाज़ा खोल कर बात सुनने की आदत से आप बाज़ नहीं आए न मुन्शी जी। मैंने आप से क्या कहा था ?

*मुन्शी*

अजी, बीच में एकाएक ऐसी ऊँची आवाज़ मेरे कानों में आई कि मैं रह नहीं सका। थप्प-सी वह ऊँची आवाज़ कैसी थी साहब !

**(हेमन्त कोई जवाब नहीं देता।)**

*मुन्शी*

अब आइन्दा कभी ऐसी भूल करूँ तो आप चाहे जो सज़ा दीजिएगा।

हेमन्त

**(शान्त स्वर से)** अच्छा, मुन्शी जी। मेरा सब काम समाप्त हो गया। मुझे नींद आ रही है। जाइए, अब आप भी अपने घर चले जाइए।

मुन्शी

**(विनय से)** आपकी इज़ाजत हो तो मैं यहाँ ही पड़ा रहूँगा साहब। अब इतनी रात गए कहाँ जाऊँगा? फिर आज वर्षा भी तो हो रही है। इस गीली रात में आप मुझे घर से निकाल रहे हैं?

हेमन्त

आप घबराइए नहीं मुन्शी जी। मैं आत्महत्या नहीं करूँगा। वर्षा कब की बन्द हो चुकी है और आपका घर दूर भी तो नहीं है। अब आप जाइए। आप बहुत अच्छे आदमी हैं। इस मुसीबत में भी आप मेरा साथ देने को तैयार हैं। मैं आजीवन आप का कृतज्ञ रहूँगा। पर अब आप जाइए!

**(अनमने भाव से मुन्शी का प्रस्थान। खुले दरवाज़े से हेमन्त जाते हुए मुन्शी की ओर ताकता रहता है। तेज़ हवा से उसके सिर के बाल, कपड़े और कमरे के परदे हिलते दिखाई देते हैं। २, ३ क्षणों तक हेमन्त चुपचाप कुछ सोचता है और फिर दरवाज़ा भीतर से बन्द कर टेलीफ़ोन के पास आता है। डाइरैक्टरी में वह एक नम्बर देखता है और फिर वह नम्बर मिला कर रिसीवर कान से लगाता है। क्षण भर बाद--)**

हैलो, कमला जी। मैं हेमन्त बोल रहा हूँ।...मेरी आवाज़ आप पह-पहचान गईं न?...इतनी रात गए आपको तकलीफ़ देने के लिए क्षमा चाहता हूँ। पर कोई और चारा भी नहीं था!...अच्छा है, आप अभी सोयी न थीं!...देखिए, बात यह है कि सदानन्द जी एकाएक मुसीबत में फंस गए हैं। अगर इसी समय हम लोगों ने कुछ न किया, तो कल प्रातः तक उनके हाथों में हथकड़ियां पड़ जाएंगी!...जी, आप परेशान न हों मुझे विश्वास है कि अब भी हम उन्हें बचा सकते हैं।...आपको

यकीन नहीं आ रहा ?...आप बेशक सदानन्द जी को टेलीफ़ोन करके देख लें।...वह तो मुझ से पनाह मांगने यहां आए थे, पर मैंने उन्हें समझा दिया कि यहां रहने में खतरा है...जी, वह कहां गए हैं ? मैंने पूछा तो था, पर उन्होंने बताया नहीं...नहीं, वह अपने घर हरगिज़ नहीं गए।... आप इसी वक्त यहाँ आ जाइए।...मैं अपनी गाड़ी लेकर आ जाता, मगर वह खतरे से खाली न होगा !...हां, ठीक है। आपका घर नज़दीक ही तो है।...तेज़ चाल से पांच ही मिनटों में आप यहाँ पहुँच सकती हैं...नहीं टैक्सी करना भी ठीक न होगा !...नहीं, मैं अकेला नहीं हूँ।...मेरा मुन्शी यहां ही है... आप बेफ़िक्र रहें !...वही आपको आपके घर तक छोड़ आएगा !...आज तो बादलों वाला दिन है, आप बरसाती ओढ़कर आएँगी तो किसी को पता भी न चलेगा...अच्छा, मैं आपकी प्रतीक्षा में हूँ !

(रिसीवर टेलीफ़ोन पर रख कर हेमन्त क्षण भर वहीं खड़े रहता है। उसके बाद धीरे-धीरे वह सभी परदों की जांच करता है। खिड़कियों और दरवाज़ों की नीचे और ऊपर की सिटकि-नयां ठीक से बन्द करता है। यहां तक कि चोर दरवाज़े की भी। मुख्य दरवाज़ा भीतर से बन्द है ही। उस के बाद पहले कमरे की सभी बत्तियां एकाएक बुझा देता है और करीब-करीब साथ ही साथ केवल एक बड़ी शक्ति का टेबल लैम्प जला देता है। क्षण भर के लिए सारे कमरे पर नज़र डाल कर वह अपनी मेज़ के निकट जाता है। वहाँ चाबी से मेज़ की पिछली दराज़ इस तरह खोलता है कि ज़रा भी आवाज़ न हो। इस दराज़ में से वह छोटा-सा पिस्तौल निकालता है। इस पिस्तौल के ६ घरों में वह ६ गोलियाँ डालता है और उसे बन्द कर वह उस पर सेफ़्टी कैच

लगा देता है। किसी भी काम में जल्दी नहीं करता। एक बार पुनः चारों ओर निगाह डाल कर वह अभ्यासवश पिस्तौल को पतलून की जेब में डालने की चेष्टा करता है। जब वह देखता है कि उसने पतलून की जगह पाजामा पहना हुआ है, तब उसके चेहरे पर एक मुसकान भी आती है। पिस्तौल हाथ में लिए वह पुनः अपनी मेज़ के पास पहुँचता है और उसे सबसे ऊपर के दराज़ में रख देता है। इस बार वह दराज़ पर ताला नहीं लगाता। वह पास के स्विच बोर्ड से सोफ़ा सेट के ऊपर का लैम्प जलाकर टेबल लैम्प बुझा देता है और तब धीरे-धीरे दराज़ बन्द कर वह मन्द गति से बैठक के मध्य तक पहुँचता है। उसके दोनों हाथ अब उसकी छाती पर बँधे हुए हैं। धीरे-धीरे वह एक सोफ़ा कुर्सी के निकट पहुँचता है और उसकी पीठ पर सहारा लेकर बैठ जाता है। उसके दोनों हाथ अभी तक उसकी छाती पर एक दूसरे का सहारा लेकर पड़े हैं।)

*हेमन्त*

**(टेबल की ओर के अर्ध-अन्धकार मग्न भाग की ओर देखकर एका-एक चौंक उठता है, जैसे उसने वहां किसी और को देख लिया हो। वह आप ही आप कहने लगता है)**

ओह, यह छाया-मूर्त्ति-सा कौन है?...यह तो मेरी अपनी प्रतिमूर्त्ति है! हेमन्त! मेरा ही दूसरा स्वरूप! क्या कहने आए हो मुझसे तुम भाई हेमन्त ?...कहते हो वापस लौट जाओ? नहीं, नहीं, हरगिज नहीं! हेमन्त अपने मार्ग से कभी वापस नहीं लौटा! हेमन्त ने कभी प्रायश्चित्त नहीं किया! नहीं, तुम हेमन्त नहीं हो! तुम सिर्फ़ छल

हो, माया हो, झूठ हो ! हेमन्त तो मैं हूँ ! मैं डरूँगा नहीं ! मैं वापस नहीं लौटूंगा ! मैं हार नहीं मानूंगा ! हरगिज़ नहीं !!

**(एकाएक आकाश में ज़ोर से बिजली चमकती है, उसका प्रतिबिम्ब अर्ध अन्धकार मग्न खिड़की के परदों पर भी पड़ता है। हेमन्त उसे देखकर चौंक उठता है।)**

*हेमन्त*

ओह, वह कौन है जो आज की इस गीली, अंधेरी रात को प्रकाशमान करने का व्यर्थ प्रयत्न कर रहा है ? मुझे प्रकाश नहीं चाहिए ! मुझे अन्धकार चाहिए ! अन्धकार !! गहन अन्धकार !!!

**(बादल की गरज सुनाई देती है। हेमन्त चुपचाप गरज सुनता है। दो-तीन क्षण सन्नाटा रहता है। उसके बाद साफ़ तौर से दरवाजे पर दस्तक सुनाई देती है। हेमन्त शीघ्रता से तीन बत्तियां एक साथ जला देता है और आगे बढ़कर दरवाज़ा खोलता है। घबराई हुई कमला का प्रवेश। वह हेमन्त को नमस्कार करती है। फीकी-सी ज़बरदस्ती की मुसकराहट के साथ नमस्कार का उत्तर देकर हेमन्त दरवाजा अन्दर से बन्द कर लेता है।)**

*हेमन्त*

आइए कमला जी, आइए।

*कमला*

**(बिना बैठे)** बहुत रात बीत गई। बैठने की ज़रूरत नहीं है। जल्दी से मुझे बता दीजिए कि श्री सदानन्द पर क्या मुसीबत आई है? उनके लिए मुझे क्या करना होगा ? **(इधर-उधर देखकर)** ओह, यहां कितना सन्नाटा है ! मुन्शी जी कहाँ हैं ?

*हेमन्त*

मुन्शी जी साथ के कमरे में कुछ ज़रूरी काम कर रहे हैं। वह अभी आते ही होंगे। आप बैठिए तो।

**(अनमने भाव से कमला सोफ़ा कुर्सी पर बैठ जाती है ।)**

*कमला*

मामला क्या है ?

*हेमन्त*

अभी बताता हूँ । मगर आप यह बरसाती कोट तो उतार दीजिए।

*कमला*

ओह, मुझे ख्याल ही नहीं रहा ।

**(बरसाती कोट उतारकर एक तरफ़ डाल देती है । हेमन्त कमला की ओर देखता रहता है ।)**

*हेमन्त*

तुम सचमुच सुन्दरी हो कमला ।

*कमला*

**(गम्भीर स्वर से)** इस आधी रात के समय ये बातें सुनने के लिए मैं आपके यहां नहीं आई । आप श्री सदानन्द के बारे में क्या कह रहे थे ?

*हेमन्त*

यही कि कल सुबह वह गिरफ़्तार हो जाने वाले थे ।

*कमला*

उस वक्त टैलीफ़ोन पर तो आपने कहा था कि वह कल सुबह गिरफ़्तार हो जाएंगे । अब आप कह रहे हैं कि वह गिरफ़्तार हो जाने वाले थे । इसका क्या मतलब ?

*हेमन्त*

यही कि अब वह गिरफ़्तार नहीं होंगें ।

*कमला*

यह कौन-सा मज़ाक है । एक लड़की को आधी रात के समय घर बुलाकर इस तरह की अभद्रता बरतना कहां तक उचित है ! मैं आपको

इतना नीच नहीं समझती थी।

हेमन्त

कमला, यह मज़ाक नहीं है। सदानन्द साहब ज़रूर ही गिरफ़्तार हो जाते, यदि वह यह चिट्ठी पोलीस को न लिख देते।

**(सदानन्द के हस्ताक्षर वाले पत्र की प्रतिलिपि कमला की ओर बढ़ाता है।)**

कमला

**(अत्यन्त सरसरी निगाह से पढ़कर)** यह सब तो साफ़ तौर से जालसाज़ी मालूम होती है! यह सदानन्द जी की भाषा ही नहीं है। इतने दिनों में मैं उनकी शैली खूब समझ गई हूँ। यह जालसाज़ी मुझ पर नहीं चलेगी!

हेमन्त

तुम बड़ी भोली हो कमला।

कमला

**(उत्तेजित होकर)** पर आप मुझसे क्या चाहते हैं? आपने मुझे इस आधी रात के समय इस तरह धोखे से अपने घर क्यों बुलाया?

हेमन्त

उद्विग्न मत होओ कमला। अभी मैं तुम्हें सब कुछ बताता हूँ।

कमला

**(एकाएक खड़ी होकर)** नहीं, मैं कुछ भी नहीं सुनना चाहती। म घर जाऊँगी। मुझे घर जाने दीजिए।

**(दरवाज़े की ओर बढ़ती है। हेमन्त आगे बढ़कर उसकी राह रोक लेता है और अधिकारपूर्ण तथा ऊंचे स्वर से पुकारता है)**

हेमन्त

कमला!

**(कमला सिहर कर खड़ी हो जाती है। वह कोई जवाब नहीं देती।)**

हेमन्त

(उसी तरह आज्ञापूर्ण स्वर में) बैठ जाग्रो कमला !

(कमला घबराकर उसी सोफ़ा कुर्सी पर बैठ जाती है ।)

हेमन्त

(धमकी भरे स्वर में) यदि ग्रबके तुमने उठने का प्रयत्न किया तो याद रखना--

कमला

(घबराहट ग्रौर विनय के साथ) मुझे यहां से जाने दीजिए हेमन्त भाई !

हेमन्त

देखो कमला, इस तरह घबराने से काम नहीं चलेगा । सच बात तो यह है कि हम सब खतरे में हैं--सदानन्द जी, तुम, मैं--हम सभी !

(कमला कोई जवाब नहीं देती । वह और भी ग्रधिक घबराई हुई दिखाई देती हे और ढासना लगाकर निश्चेष्ट-सी पड़ रहती है ।)

हेमन्त

कमला !

(कोई जवाब नहीं मिलता ।)

हेमन्त

(ऊँचे स्वर से) कमला ! कमला !!

(फिर भी कोई जवाब नहीं मिलता । हेमन्त ग्रागे बढ़कर कमला के पास जाता है, जो अब भी ग्रांखें बंद किए सोफ़ा कुर्सी की पीठ से ढासना लगाए उसी तरह पड़ी है । )

हेमन्त

(अभ्यास वश) मुन्शी जी ! मुन्शी जी !!

(प्रायः साथ ही साथ )

हेमन्त

ओह, मैं तो अकेला हूँ ! पानी ! मुझे ठण्डा पानी लाना चाहिए । यह बेवकूफ लड़की तो बेहोश हो गई !

(शीघ्रता से चोर दरवाज़े की तरफ़ जाता है और दरवाज़ा खोल कर भीतर चला जाता है । कमला आंखें खोलती है और हेमन्त को दूसरे कमरे में जाता देखकर शीघ्रता से उठती है । निश्शब्द रूप से उठकर वह पास ही की बाईं दीवार की खिड़की के परदे के पीछे जाकर उसकी दोनों चिटकनियां खोल देती है, पर खिड़की नहीं खोलती, न पर्दों को ही हिलाती है । उसके बाद अत्यन्त शीघ्रता से लौटकर वह उसी तरह सोफ़ा कुर्सी पर पड़ जाती है । क्षण भर बाद एक हाथ में फ्रिज से ठंडे पानी की बोतल और दूसरे हाथ में शीशे का गिलास लिए हुए हेमन्त का प्रवेश ।)

हेमन्त

कमला !

**(कोई उत्तर नहीं मिलता । तब हेमन्त कमला के मुंह पर बरफ़ के समान ठंडे पानी का छींटा देता है । कमला एकाएक, आंखें खोल देती है ।)**

कमला

ओह, मैं कहां हूँ ?

हेमन्त

कमला, तुम मेरे घर में हो ।

कमला

ओह, याद आया । आपने मुझे किसी जरूरी काम से यहां बुलाया था न ?

हेमन्त

हां, कमला! अब तुम स्वस्थ हो न?

कमला

**(आंखें अच्छी तरह खोलकर इधर-उधर देखते हुए)** आप मुझे इस तरह डरा क्यों रहे हैं?

हेमन्त

मैं तुम्हें भयभीत नहीं करना चाहता। पर सच्ची बात का सामना तो करना ही होगा। मैं तुम से कह रहा था कि हम सब भारी खतरे में हैं।

कमला

**(जरा संभल कर अपने सहारे बैठते हुए)** आप मुझसे चाहते क्या हैं?

हेमन्त

देखो कमला। इस तरह घबराने से काम नहीं चलेगा। मैं यह सारा मामला तुम्हें समझाना चाहता हूँ। पहले यह ठण्डा पानी पी लो।

**(बोतल से गिलास में पानी देता है। कमला शान्त भाव से आधा गिलास पानी पी जाती है।)**

हेमन्त

जब मैंने टेलीफ़ोन किया था, तब तुम अभी सोई नहीं थी?

कमला

नहीं।

हेमन्त

उस वक़्त तुम क्या कर रही थी?

कमला

मैं सोने जा ही रही थी कि आपका टेलीफ़ोन आ गया।

हेमन्त

तुम्हें इधर आते किसी ने देखा है?

*कमला*

नहीं।

*हेमन्त*

तुम्हारे घर पर कौन-कौन लोग हैं ?

*कमला*

सिर्फ़ एक नौकरानी ।

*हेमन्त*

उसे यह मालूम है कि तुम बाहर गई हो ?

*कमला*

नहीं। वह अपना काम समाप्त कर अपने क्वार्टर में चली जाती है, जो मेरे फ्लैट के पिछवाड़े में है।

*हेमन्त*

बहुत ठीक। मेरी कोई स्कीम कभी उलटी नहीं पड़ती।

*कमला*

(**घबरा कर**) आप आखिर चाहते क्या हैं ?

*हेमन्त*

देखो कमला, मैंने अभी तुमसे कहा था कि हम तीनों खतरे में हैं। सदानन्द जी, मैं और तुम। मैंने इस बारे में बहुत कुछ सोचा है।

*कमला*

क्या सोचा है ?

*हेमन्त*

(**क्रूर भाव से**) मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि सदानन्द जी की और मेरी खातिर तुम्हें आत्महत्या कर लेनी चाहिए !

*कमला*

अभी तो आप कह रहे थे कि सदानन्द जी ने मेरे खिलाफ़ पोलीस को

कोई पत्र लिखा है।

हेमन्त

उसके बारे में तो तुम कह ही चुकी हो कि वह जालसाज़ी है। सच्ची बात तो तुम स्वयं जानती हो। सच तो यही है कि सदानन्द जी तुम्हें अपनी बेटी के समान चाहते हैं।

कमला

(अनुनय पूर्वक) मुझे बहुत अधिक भय अनुभव हो रहा है। आप मुझे यहाँ से चले जाने दीजिए हेमन्त भाई।

हेमन्त

देखो कमला, इस गीली और अंधेरी रात में मुझे अपने भाग्य का निश्चय करना है। मेरी और सदानन्द जी की और तुम्हारी बरबादी आने में इस गीली और अंधेरी रात के सिर्फ़ कुछ घण्टे ही बाकी हैं।

कमला

मैं यह सब कुछ नहीं जानती। मुझे कृपा कर अपने घर लौट जाने दीजिए।

हेमन्त

कमला, मैं यहाँ अगर तुम्हारी हत्या भी कर दूँ तो किसी को पता नहीं चलेगा। इस बैठक के सब दरवाजे बन्द हैं। हज़ार प्रयत्न करके भी तुम यहाँ से बाहर नहीं जा पाओगी। यहां सिर्फ मैं और तुम हैं। मेरे सिवा दूसरे किसी भी व्यक्ति को यह मालूम तक भी नहीं कि तुम यहां आई हुई हो!

कमला

मैं मौत से उतना नहीं डरती, जितना आप जैसे लोगों से डरती हूँ। मैंने अपनी आंखों से अपनी मां का और अपने पिता जी का वध देखा है! आप भी उन लोगों से कुछ कम नृशंस नहीं हैं हेमन्त जी!

हेमन्त

सच बात तो यह है कि मुझे कुछ सूझ ही नहीं रहा कि मैं क्या करूँ। इस किंकर्तव्यविमूढ़ता में मुझे सिर्फ़ एक ही बात समझ में आती है।

कमला

वह क्या ?

हेमन्त

वह यही कि यदि तुम न रहो तो सारा मामला साफ़ हो जाए!

**(कमला अत्यन्त भयभीत भाव से हेमन्त की ओर देखती है। हेमन्त जैसे किसी और लोक में पहुँच गया है। वह कहे चला जाता है)**

हेमन्त

**(जैसे स्वगत)** तम्बाकू कम्पनी ने जिन दिनों सब से अधिक बेईमानियां की थीं, उन दिनों कमला ही उसकी सैक्रेटरी थी। सदानन्द ने भी अपने लिखित बयान में कमला को अपराधी ठहराया है। मेरी गवाही तो कमला के विरुद्ध होगी ही। अब अगर कमला न रहे तो आप से आप सभी अपराधों का दोष उसी पर चला जाता है। कितनी दिलचस्प बात है! दो बड़े-बड़े बदमाशों के सब कारनामों का बोझ आसानी से एक निरपराध और निरीह लड़की पर डाल दिया जा सकता है! क्योंकि इतने ही से कानून का पेट मज़े में भर जाता है!

**(कमला अपनी जगह बैठी रहती है। ऊपर की बात कहते-कहते हेमन्त शीघ्रता से बड़ी मेज़ की तरफ़ बढ़ता है और दराज खोल कर उस में से पिस्तौल निकाल लेता है। पिस्तौल हाथ में लिए उसी शीघ्रता से कमला की ओर बढ़ते हुए)**

हेमन्त

**(कर्कश हँसी हँस कर)** रवीन्द्रनाथ ठाकुर की एक कहानी में एक आदमी दुबारा मर कर यह सिद्ध करता है कि वह अभी तक ज़िन्दा था।

आज कमला मर कर यह सिद्ध कर देगी कि सारा दोष उसी का था और हेमन्त तथा सदानन्द जैसे घाघ निर्दोष थे ! हः हः हः !

(हेमन्त पिस्तौल का सेफ़्टी कैच हटा देता है। इसी समय बाहर की तेज़ हवा के एक ज़बरदस्त झोंके से बाईं ओर की खिड़की के किवाड़ एकाएक खुल जाते हैं और परदा उड़ने लगता है। हेमन्त एकाएक घबरा जाता है। उसके मुंह से अनायास ही निकलता है—"ओह, यह क्या हुआ !" और वह पिस्तौल हाथ में लिए खिड़की की ओर झपटता है। पर उसी क्षण खिड़की की राह एक अज्ञात व्यक्ति इस तरह अचानक बैठक में आ कूदता है जैसे वह सचमुच आकाश से आ टपका हो। भयभीत होकर हेमन्त पिस्तौल चला देता है। पर उसका निशाना व्यर्थ जाता है। क्षण भर में हेमन्त का पिस्तौल उसके हाथ से छीनकर वह व्यक्ति हेमन्त से कहता है)

*अज्ञात व्यक्ति*

चुपचाप खड़े रहो हेमन्त ! नहीं तो मैं गोली चला दूंगा ! कमला !

*कमला*

ओहो, जुगलकिशोर ! शाबाश ! तुम बड़े बहादुर हो जुगलकिशोर !

*जुगलकिशोर*

देखो कमला, जल्दी से वह कुर्सी बैठक के बीच में रख दो।

**(कमला मेज़ के पास वाली कुर्सी शीघ्रता से बैठक के बीच में रख देती है। जुगलकिशोर के हाथ की पिस्तौल निरन्तर हेमन्त की ओर है।)**

*जुगलकिशोर*

**(कुर्सी की ओर इशारा कर हेमन्त से)** इधर चलो, इधर !

**(हेमन्त उसी ओर चलाता है।)**

बस, अब इस कुर्सी पर बैठ जाओ।

**(हेमन्त कुर्सी पर बैठ जाता है।)**

*जुगलकिशोर*

कमला, यह बाहर का दरवाज़ा खोल दो।

**(कमला दरवाज़ा खोलती है। दरवाजा खुलते ही शीघ्रता से सदानन्द का प्रवेश। भीतर पहुँच कर सदानन्द सारी परिस्थिति आँखों से देख कर ही समझने का प्रयत्न करता है। हेमन्त पर जुगलकिशोर के हाथ की पिस्तौल का पहरा देख कर वह निश्चिन्तता का सांस लेता है।)**

*सदानन्द*

शाबाश जुगलकिशोर! हेमन्त का निशाना इस बार सचमुच चूक गया!

*जुगलकिशोर*

यह आपकी ही दया है।

*सदानन्द*

**(जुगलकिशोर से)** अब बताओ कि यह सब हुआ किस तरह?

*कमला*

इन्हें पहरा देने दीजिए साहब। मैं आपको सारी बात बताती हूँ।

*सदानन्द*

**(कमला का सिर थपथपा कर)** कहो बेटी! तुम्हीं कहो!

*कमला*

आज रात **(जुगलकिशोर की ओर इशारा कर)** इनके पिता जी ने मुझे भोजन के लिए निमन्त्रित किया था। बाहर वर्षा हो रही थी, इससे भोजन के बाद इन्हीं के घर पर संगीत आदि चलता रहा और काफ़ी देर हो गई। जब वर्षा रुक गई तो जुगलकिशोर जी मुझे मेरे घर तक छोड़ने आए।

मैं अपने फ्लैट में पहुंची ही थी कि टैलीफ़ोन की घण्टी बजी। जुगलकिशोर अभी वहाँ ही थे। उन्हें भी यह जानने का कौतूहल हुआ कि इतनी रात गए कौन टैलीफ़ोन कर रहा है। (**बड़ी कोमल मुसकराहट से जुगलकिशोर की ओर देखती है।**)

*जुगलकिशोर*

तुमने स्वयं ही तो मुझ से रुकने को कहा था कमला। तुम्हीं ने तो कहा था--"इतनी रात गए कौन टैलीफ़ोन कर रहा है। मुझे डर लगता है!"

*कमला*

वह टेलीफ़ोन हेमन्त जी का था। यही कि कल सुबह आप गिरफ़्तार हो रहे हैं और अगर आपको बचाना हो तो मैं इसी वक्त उनके यहाँ आ जाऊँ। यह बात सुनकर जुगलकिशोर जी ने कहा कि इतनी रात गए हेमन्त के यहां जाना खतरे से खाली नहीं है। इससे मैं भी साथ चलूँगा और बाहर ही छिपा रहूँगा।

*जुगलकिशोर*

मैंने उसी समय आपके यहां भी टेलीफ़ोन किया था, पर तब तक आप घर नहीं लौटे थे।

*सदानन्द*

तुम बहुत समझदार हो जुगलकिशोर। तुम्हारे उसी टेलीफोन का ही तो यह परिणाम है कि मैं यहां पहुँच गया हूँ। आधी रात बीते मैं घर लौटा, तो कमला के टेलीफ़ोन की खबर पाकर मैंने कमला को टेलीफ़ोन किया। जब वहाँ किसी ने टेलीफ़ोन नहीं उठाया, तो सब बात मेरे लिए स्पष्ट हो गई और मैं यहां चला आया। अच्छा, तो उसके बाद क्या हुआ कमला?

*कमला*

राह में हम दोनों ने पूरी योजना बना ली कि हमें क्या कुछ करना

होगा।

जुगलकिशोर

मैंने इनसे कह दिया था कि अगर हेमन्त अकेला हो और सब दरवाजे बन्द हों तो बेहोशी का नाट्य करना।

कमला

**(कृतज्ञतापूर्ण प्रसन्नता से जुगलकिशोर की ओर देखकर)** तुम्हारी वह सलाह मेरे लिए सबसे अधिक उपयोगी सिद्ध हुई जुगलकिशोर।

जुगलकिशोर

**(सदानन्द से)** माफ़ कीजिएगा, बाहर मैंने आपको बोलने से मना कर दिया था।

सदानन्द

तुमने बिल्कुल ठीक किया था जुगलकिशोर। मैं तो स्वयं इतना सतर्क था कि अपनी कार दूर सड़क ही पर खड़ी कर मैं यहां पैदल आया था। अच्छा भई, अब एक काम करो। तुम अपनी पिस्तौल एकदम हेमन्त की छाती से लगा दो। मुझे इसकी तलाशी लेनी है।

**(जुगलकिशोर कुर्सी पर बैठे हेमन्त की छाती से पिस्तौल सटा देता है और कहता है)**

जुगलकिशोर

याद रक्खो अगर ज़रा भी हिले !

**(हेमन्त चुपचाप बैठा रहता है। सदानन्द उसकी जेब से वे दोनों कागज़ निकाल लेता है, जिसपर हाल ही में उसने हस्ताक्षर किए थे। अपनी जेब से सिगरेट लाइटर निकालकर जलाता है और अग्निशिखा से वे दोनों कागज़ भस्मसात कर देता है।)**

कमला

तो क्या सचमुच यह कागज़ सही थे ?

सदानन्द

(**मुसकरा कर**) तो तुम जानती हो बेटी कि इसमें क्या लिखा है ?

कमला

जी हां ।

सदानन्द

तो इसे पढ़कर तुम्हारी क्या धारणा बनी थी ?

कमला

यही कि यह सब जालसाज़ी है ! मैं तो आपकी शैली खूब अच्छी तरह जानती हूँ ।

सदानन्द

तुमने बिलकुल ठीक कहा बेटी ! यह सब जालसाजी ही था । अब ज़रा पोलीस को टेलीफ़ोन कर यहाँ बुलाओ । यहां, और एक टेलीफ़ोन राजीव को भी करना होगा ।

**(जुगलकिशोर हेमन्त पर पिस्तौल ताने खड़ा है । कमला मुसकरा कर उसकी ओर देखती है । जुगलकिशोर और कमला का दृष्टिविनिमय । सदानन्द के चेहरे पर प्रसन्नता खेल रही है । कमला टेलीफ़ोन की ओर बढ़ती है ।**

**समाप्त**




R84.02,VID-N
37338